हज
व
जियारत

फकीहे मिल्लत
मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी

www.jannatikaun.com

हज
व
ज़ियारत

लेखक

JANNATI KAUN?

फ़क़ीहे मिल्लत

मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी

बानीः— मरकज़ तरबियते इफ्ता, ओझागंज बस्ती

तहदिया (समर्पण)

शैखुलमशाइख़ शुऐबुल औलिया
हज़रत शाह **मुहम्मद यारे अली**
साहब क़िब्ला अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान
बानीये दारूल ऊलूम फ़ैज़ुर्रसूल की ख़िदमत
में जिन की अड़तालीस सालह ज़िन्दगी के
आख़िरी वक़्त तक जमाअत की पहली तकबीर
नहीं छूटी

JANNATI KAUN?

☆☆☆☆☆☆☆

जलालुद्दीन अहमद
अमजदी

फिहरिस्ते मज़ामीन (बिषय सुची)

विषय	पृष्ट सं०
पहली नज़र	8
निगाहे अव्वलीं	27
कहीं नूरे नबी होगा कहीं नूरेखुदा होगा	28
जज़ीरए अरब का मुख्तसर तआरूफ़	29
हज की फरज़ीयत और उसकी क़िस्में	31
क़िरान	32
तमत्तो, इफ़राद	34
सफ़रे हज के आदाब	35
घर से रवानगी	37
सफ़र की नमाज़	40
हज्जे तमत्तो का तफ़सीली बयान	43
मर्दों का एहराम	44
तलबियह	45
लब्बइक के मसाइल, औरतों का एहराम	46
वह बातें जो एहराम में हराम हैं।	48
एहराम के मकरूहात	48
एहराम के मुबाहात	49
जद्दा का मुख्तसर तआररुफ़ व आमद	55
जद्दा से मक्का मुअज्ज़मा	55
मस्जिदे हराम वग़ैरा का मुख्तसर तआरुफ़	59

JANNATI KAUN?

विषय	पृष्ट सं०
मस्जिदे हराम, मताफ़	59
बाबुस्सलाम, मक़ामे इब्राहीम, ज़मज़म	60,61
काबा शरीफ़	62
रुक्ने हज्रे असवद	65
हतीम	66
मीज़ाबे रहमत, मुलतज़म	66, 67
मुस्तजाब, सफ़ा व मरवा	67
मीलैन अख़ज़रैन, मस्आ़	67 ,68
मस्जिदे हराम में दाख़िला और तवाफ़	68
इज़तेबाअ़	71
स्तेलाम, रमल, नोट	72, 73
सई सफ़ा व मरवा	82
नोट, माज़ूर का तवाफ़ और सई	85
इख्तितामे उमरा और बाल बनवाना	86
दुआओं की मक़बूलियत के ख़ास मक़ामात	88
दुआ क़बूल होने की तीन सूरतें	88
हज के पाँच दिन, पहला दिन 8 ज़िलहिज्जा	89
औरतों के हज़ का एहराम, मिना की तरफ़ रवानगी।	90
दूसरा दिन 9 ज़िलहिज्जा	93
अरफ़ात	93
वक़ूफ़े अरफ़ा	95
मुज़दलफ़ा की रवानगी	98

JANNATI KAUN?

विषय	पृष्ट सं०
तीसरा दिन 10 ज़िलहिज्जा	100
मिना की तरफ़ वापसी	100
कंकरी मारने का वक़्त, नोट	101, 102
कंकरी मारने का तरीक़ा	102
कुर्बानी और बाल बनवाना	104
तवाफ़े ज़ियारत	106
चौथा दिन, 11 ज़िलहिज्जा	108
पाँचवाँ दिन, 12 ज़िलहिज्जा	108
कंकरी मारने के मंसंद्ध में कुछ और मसाइल	109
मक्का शरीफ़ में क़ियाम और उमरा	110
तवाफ़े रुख़सत	111
नोट	114
हज की ग़लतियाँ और उन के क़फ्फ़ारे।	115
हज्जे बदल का बयान	124
मक्का शरीफ़ की दूसरी ज़ियारतगाहें	126
जबले अबू कुबैस, जबले नूर	126, 127
जबले सौर, जन्नतुल मुअल्ला	127,128
क़ब्रों की ज़ियारत का तरीक़ा	129
फ़ातिहा का आसान तरीक़ा	129
मौलिदुन्नबी, दारे सय्यदना अरक़म	130
दारे ख़दीजतुल कुबरा, दारे हमज़ा	130, 131
मस्जिदे तनईम, मस्जिदे ज़ीतुवा, मस्जिदे जिन	131

JANNATI KAUN?

विषय	पृष्ट सं०
मस्जिदे राया, मस्जिदे शजरा, मस्जिदे खैफ़	132
मस्जिदे कबश, ग़ारे मुरसलात	132
हाजियो आओ शहेनशाह का रौज़ा देखो	134
बारगाहे मुस्ताफा में हाज़िरी की अहमीयत	135
नोट, मदीना तय्यबा की तरफ़ रवानगी	137
बदर शरीफ़	138
मदीना मुनव्वरा में दाख़िल	139
जन्नत की क्यारी	141
मुबारक क़ब्रों की तरतीब	142
सलाम पढ़ने का तरीक़ा	144
मस्जिदे नबवी के फ़ज़ाइल	152
मस्जिदे नबवी की तौसीअ की तारीख़	154
मदीना मुनव्वरा की दूसरी ज़ियारतगाहें	155
जन्नतुल बक़ीअ़	155
शुहदाये उहद, दारे सय्यदिना अबू अय्यूब अंसारी	157
मशहदे सय्यदिना उस्मान, मदीना मुनव्वरा की मस्जिदें	157, 158
मदीना शरीफ़ के तारीख़ी कुएं	161
वापसी के आदाब	163
मदीना शरीफ़ से रवानगी	164
वतन के क़रीब पहुँचना, हाजियों का इस्तिक़बाल	165
हज्जे मक़बूल और हज्जे मरदूद की निशानियाँ	165
हज से गुनाहों की मुआफ़ी का मस्अला	166
सलाम और नातें	170, 172

JANNATI KAUN?

पहली नज़र

आज जबकि मज़हबे इस्लाम के मानने वाले और मुसलमान दुनिया के हर हिस्से में पाये जाते हैं। इनमें हिन्दुस्तान में रहने वालों की तालीम अक्सर हिन्दी होती जा रही है। इस ज़रूरत को देखते हुए हज़रत फ़कीहे मिल्लत अल्लामा अलहाज मुफ़्ती **जलालुद्दीन अहमद अमजदी** अैहिर्रहमतु व रिज़वान की किताबें, अनवारूलहदीस, अनवारे शरिअत, मुहक्किकाना फैसला, बदमज़हबों से रिश्ते वग़ैरा बहुत पहले हिन्दी ज़बान में छप कर खास व आम में मक़बूल हो चुकी हैं।

बिरादरे मुहतरम जानशीने फ़कीहे मिल्लत मौलाना अनवार अहमद क़ादरी अमजदी सदर मरकज़ तरबियते इफ्ता ओझागंज के ख़ास इसरार पर हज व ज़ियारत की हिन्दी भी हाजियों की आसानी के लिए इस नाचीज़ ने तैयार की है। और कुछ इस्तेलाहात और मुश्किल शब्दों का माना और मतलब अलग से लिख कर इस किताब में शामिल कर दिया है। जिस से पढ़ने वालों को आसानी से समझ में आ सके, मुझे खूब याद है जब "फ़कीहे मिल्लत" 1397 हि. मुताबिक़ जनवरी सन् 1977 ई. में अरकाने हज की अदाएगी के बाद मकान तशरीफ़ लाये मिलने वालों की भीड़ जब कुछ कम हुई तो मैंने हज़रत से वहाँ के कुछ ख़ास हालात जानना चाहा तो हज़रत "फ़कीहे मिल्लत" ने फ़रमाया कि जानकारी न होने की वहज से हाजी बहुत सी ज़ियारत गाहों पर नहीं पहुंच पाते और हज के अरकान की अदाएगी में भी बहुत परेशानियाँ होती हैं।

मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर आप हज और ज़ियारत और वहाँ के हालात पर कोई किताब ऐसी मुरत्तब फ़रमा दें जो बहुत आसान हो तो बहुत अच्छा होगा। हज़रत ने फ़रमाया "देखा जाएगा" चंद ही दिनों के बाद हज़रत ने हज व ज़ियारत नाम से एक किताब तसनीफ़ फ़रमाई जो अल्लाह व रसूल जल ल जलालुहू व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के करम से बहुत उम्दा और आसान शब्दों में लिखी हुई है। और बेशुमार लोगों ने इसे पसंद फ़रमाया।

बल्कि कुछ लोग हर साल हज के दिनों में अपनी तरफ़ से बहुत से हाजियों को जाते वक़्त हदिये के तौर पर पेश करते हैं।

एक वाक़ेआ

मौलाना मुहम्मद इब्राहीम हिन्दी जो दारूलउलूम फ़ैजुर्रसूल बराँव शरीफ़ में ज़ेरे तालीम थे। बड़ी छुट्टी में उनको दारूलउलूम फ़ैजुन्नबी कप्तानगंज में तरावीह व दूसरी नमाज़ें पढ़ाने के लिए रमज़ानुल मुबारक में आरज़ी तरीक़े पर मुक़र्रर कर दिया गयाा रमज़ान शरीफ़ खत्म होने के बाद वह एक रोज़ मेरे यहाँ ओझागंज आए और मेरे साथ नाश्ता वग़ैरा किया तो बहुत खुश हुए।

कुछ ही दिनों बाद वह (मौलाना मुहम्मद इब्राहीम) बराँव शरीफ़ न जाकर कप्तानगंज से सीधे मुरादाबाद जामिआ नईमिया में दाख़िला ले लिया। कुछ ही रोज़ गुज़रे होंगे कि एक बड़ा सेठ जामिआ नईमिया के असातज़ा (शिक्षकों) के पास आया और एक

अच्छे होशियार तालिबे इल्म की मांग की जो उसको बता बता कर सही तरीक़े पर हज करवा सके।

चुनान्चे मौलाना मुहम्मद इब्राहीम हिन्दी का चुनाव हुआ। सेठ साहब मौलाना मौसूफ़ को अपने साथ लेकर हज को रवाना हो गये। वहाँ अरकाने हज पूरा करने के बाद मौलाना का मदीना युनिवर्सिटी में दाखिला करा दिया और एक दुकान (जेनरल स्टोर) खुलवा दी और नौकर लगा दिये कि वह दुकान चलायें। और मौलाना मौसूफ़ से कह दिया कि इस दुकान का सारा माल व आमदनी अब आपकी मिलकियत होगी। जो ज़रूरत हो खर्च करें और बची हुई रक़में अपने पास महफूज़ रखें और एक मकान किराया पर सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के रौज़ए अनवर के सामने ले दिया। कि आप (यानी मौलाना इब्राहीम हिन्दी) यहीं रहें और हर सुबह फ़ज्र के बाद सरकार की बारगाहे बेकस पनाह में सलात व सलाम अर्ज़ करते रहें।

जिस साल हज़रत "फ़क़ीहे मिल्लत" का क़ाफ़िला मदीना मुनव्वरा पहुंचा तो मौलाना मौसूफ़ इस तलाश में निकले कि हिन्दुस्तान से आने वालों में किसी आ़लिम से मुलाक़ात करें। जब वह हिन्दुस्तानी कैम्पों के पास से गुज़र रहे थे तो उनकी नज़र "हज़रत फ़क़ीहे मिल्लत" पर पड़ी-बड़ी ही गर्म जोशी के साथ हज़रत की दस्त बोसी करते हुए सलाम अर्ज़ किया। उन्होंने ही हज़रत से अपनी मुख़्तसर दास्तान सुनाई और मुझ नाचीज़ को भी याद किया और पूछा कि मौलाना अलाउद्दीन कैसे हैं। और हज़रत के ज़रिया सलाम भी पेश किया।

मौलाना इब्राहीम हिन्दी ने हज़रत फ़कीहे मिल्लत को अपना मेहमान बनाया और उन ख़ास-ख़ास जगहों पर ज़ियारत के लिये ले गये जहाँ नाजानकारी में अक्सर हाजी नहीं पहुँच पाते

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के उस बाग़ में भी ले गये जहाँ हुजूर फ़कीहे मिल्लत ने आठ किलो खजूर ताज़ा तुड़वाकर ख़रीदा। और अपने साथ घर लाये।

उम्दा क़िस्म के बड़े चिकने चिकने खजूर थे। जो मिलने वालों को दूसरी खजूरों के साथ मिलाकर देते थे। और हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के बाग़ का ज़िक्र फ़रमाते रहे कि उस बाग़ में सरकरे अक़दस ने भी पेड़ लगाये थे और बरकत की दुआ फ़रमाई थी।

इस किताब को आप सभी हिन्दी जानने वालों ख़ास कर वह हाजी हज़रात जो हज को तशरीफ़ ले जाना चाहते हैं। पेश कर रहा हूँ। इस से फाइदा उठायें और हज़रत फ़कीहे मिल्लत अलैहिर्रहमा की बारगाह में ईसाले सवाब करें। और मुझ नाचीज़ को दुआयें दें कि अल्लाह तआ़ला जल्ला जलालुहू अपने रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सदक़ा व तुफ़ैल में इस मेहनत को क़बूल फ़रमाये और ज़ियारते हरमैन शरीफ़ैन नसीब फ़रमाये। आमीन। आमीन बिजाहे सय्यदिल मुर्सलीन सल्लल्लाहु तआ़ला व आलिही व सहबिही अजमईन।

मुहम्मद अलाउद्दीन नूरी

(ओझागंज, बस्ती)

23 शाबान सन् 1423 हि. मुताबिक़ 30 अकतूबर सन् 2002 ई.

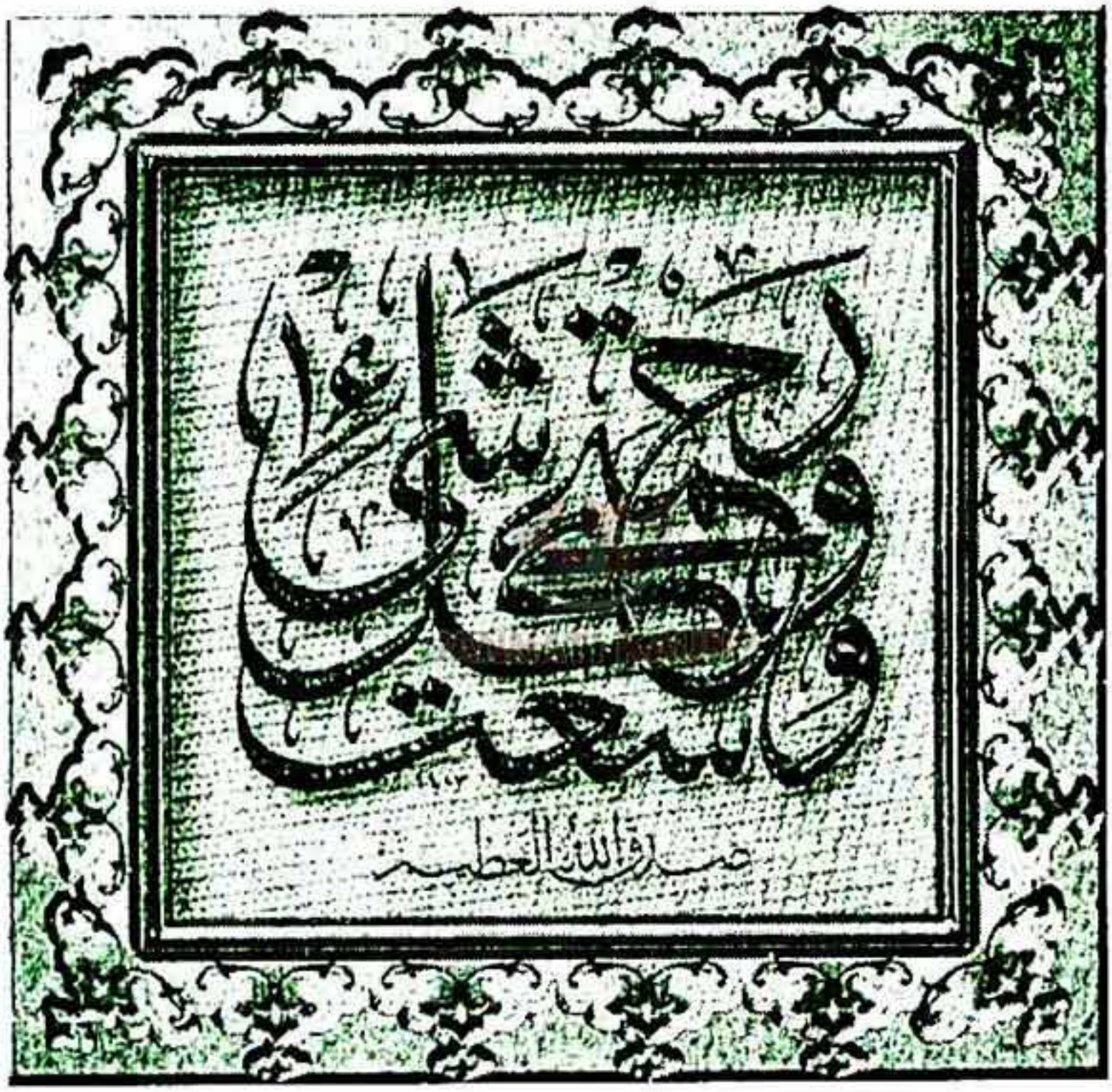

मुश्किल इस्तेलाहात व शब्दों की सूची

1- मीक़ातः- उस जगह को कहते हैं कि मक्का शरीफ़ जाने वाले के लिए वहाँ से एहराम बांधना ज़ुरूरी है।

मीक़ात पाँच हैं।

2- जुलहुलैफ़ाः- मदीना शरीफ़ की तरफ़ से आने वालों के लिए मीक़ात है। जिसे आज कल "बीरे अली" कहते हैं।

3- ज़ातेएरक़ः- एराक़ की तरफ़ से आने वालों की मीक़ात है।

JANNATI KAUN?

4- जुहफ़ाः- शाम व मिस्र से आने वालों की मीक़ात है। इसे "राबिग़" भी कहते हैं।

5- क़र्नः- नज्द (मौजूदा रियाज़) की तरफ़ से आने वालों की मीक़ात है।

6- य-लमलमः- यमन से आने वालों और हिन्दुस्तान व पाकिस्तान से जाने वालों की मीक़ात है (ख़ास कर पानी के जहाज़ से जाने वालों के लिए)

7- एहरामः- एक सफ़ेद चादर बदन पर डालना। एक चादर लुंगी के तरीक़े पर दोनों बग़ैर सिले हों। एहराम का शाब्दिक माना हराम

करने के हैं, क्योंकि एहराम बाँधने वाले पर कुछ हलाल बातें भी हराम हो जाती हैं।

8- सफ़ा पहाड़ः- यह पहाड़ काबा शरीफ़ के दक्षिण में है और यहीं से सई शुरू होती है।

9-मरवा पहाड़ः- यह पहाड़ सफ़ा पहाड़ के सामने है। सफ़ा से मरवा तक पहुँचने पर सई का एक फेरा पूरा हो जाता है और सातों फेरे यहीं मरवा पर पूरा होता है।

10- मिनाः- काबा शारीफ़ से पाँच किलो मीटर पर यह घाटी है जहाँ हाजी लोग ठहरते हैं।

11- जमारातः- मेना में वह तीन जगहैं जहाँ कंकरीयाँ मारी जाती हैं पहले का नाम "बड़ा शैतान" है। दूसरे का मंझला शैतान और तीसरे का "छोटा शैतान" है।

12- अरफ़ातः- मिना से लगभग ग्यारह किलो मीटर दूर मैदान जहाँ 9 ज़िलहिज्जा को तमाम हाजी इकट्ठा होते हैं।

13- जबले रहमतः- अरफ़ात का वह पाक पहाड़ जिस के क़रीब ठहरना बहुत बेहतर है।

14- मुज़दलफ़ाः मिना से अरफ़ात की तरफ़ लग-भग पाँच किलो मीटर पर मैदान है जहाँ अरफ़ात से वापसी पर ठहरते हैं।

15- तलबियहः- वह विर्द (जाप) जो उमरा और हज के बीच एहराम की हालत में किया जाता है। यानी "लब्बइक" कहना

16- इज़तेबाअ्ः- एहराम के ऊपर वाली चादर को सीधी बग़ल से निकाल कर इस तरह उलटे कंधे पर डालना कि सीधा कंधा खुला रहे।

17- रमलः- तवाफ़ के शुरू तीन फेरों में अकड़ कर कंधे हिलाते हुए छोटे-छोटे क़दम उठाते हुए थोड़ा तेज़ी से चलना

18- तवाफ़ः- ख़ानए क़ाबा के गिर्द चक्कर लगाने को तवाफ़ कहते हैं।

19- मताफ़ः जिस जगह में तवाफ़ किया जाये।

20- तवाफ़े क़ुदूमः- मक्का शरीफ़ में दाख़िल होने पर पहला तवाफ़

21- तवाफ़े ज़ियारतः- इस तवाफ़ को इफ़ाज़ा भी कहते हैं यह हज का रूक्न है। इस का वक़्त 10 ज़िलहिज्जा की सुबहे सादिक़ से बारह ज़िलहिज्जा के सूरज डूबने तक है मगर 10 ज़िलहिज्जा बेहतर है।

22- तवाफ़े वदाअ्ः- हज के बाद मक्का शरीफ़ से रूख़सत होते हुए किया जाता है।

23- तवाफ़े उमराः- यह उमरा करने वालों पर फ़र्ज़ है।

24- इस्तेलामः- हज्रे असवद को चूमना, हाथ या लकड़ी से छू कर हाथ या लकड़ी को चूमना या हाथों से इशारा करके उन्हें चूमना।

25- सईः- सफ़ा और मरवा के बीच सात फेरे लगाना सफ़ा से मरवा तक एक फेरा होता है।

26- रमीः- जमरात (यानी शैतानों) पर कंकरी मारना।

27- ह़लक़ः- एहराम से बाहर होने के लिए हरम की हदों ही में पूरा सर मुंडवाना।

28- क़स्रः- चौथाई सर का हर बाल कम से कम उंगली के एक पोर के बराबर कतरवाना

29- मस्जिदे ह़रामः- मस्जिद जिसमें काबा शरीफ़ मौजूद है।

30- बाबुस्सलामः- मस्जिदे ह़राम का वह दरवाज़ा-ए-मुबारक जिससे पहले पहल दाख़िल होना बहुत बेहतर है। यह पूरब की तरफ़ है।

31- काबाः- इसे बैतुल्लाह शरीफ़ भी कहते हैं यानी अल्लाह तआ़ला का घर यह पूरी दुनिया के बीच में है। और सारी दुनिया के लोग उसी तरफ़ मुंह करके नमाज़ अदा करते हैं। और हज में इसका तवाफ़ किया जाता है।

32- रुक्नः- काबा शरीफ़ के कोने को रुक्न कहते हैं जो चार हैं। रूक्ने यामानी रूक्ने शामी, रूक्ने एराक़ी, रूक्ने असवद

33- मुलतज़मः- हज्रे असवद और काबा शरीफ़ के दरवाज़े के बीच जो दीवार का हिस्सा है उसे मुलतज़म कहते हैं। मुलतज़म के माना लिपटने की जगह, यहाँ लोग लिपटते हैं। इसलिए इसका यह नाम पड़ा।

34- ह़तीमः- काबा शरीफ़ की उत्तरी दीवार के पास धनुष की शक्ल में एक जगह है। यह काबा शरीफ़ का ही हिस्सा है।

35- मुस्तजारः- रूक्ने यमानी और शामी के बीच में पश्चिमी दीवार का वह हिस्सा जो मुलतज़म के ख़ास पीछे की सीध में है।

36- मीज़ाबे रहमतः- सोने का परनाला है जो काबा शरीफ़ की छत में उत्तर की तरफ़ लगा है। काबा शरीफ़ की छत का पानी इसी परनाले से हतीम के अंदर गिरता है। यहाँ दुआ करें कि मक़बूल होती है।

37- मुस्तजाबः- रूक्ने यमानी और रूक्ने असवद के बीच की दक्षिणी दीवार यहाँ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दुआ पर आमीन कहने के लिए

मुक़र्रर हैं।

28- मीलैन अख़ज़रैनः- सफ़ा व मरवा के बीच जितनी जगह में मर्द को दौड़ना है उसके दोनो किनारों पर हाजीयों की जानकारी के लिए संगे मरमर के दो हरे खम्भे दायें बायें बना दिये गये हैं।

39- मस्आ़ः- सफ़ा व मरवा के बीच सई करने की जगह को मरआ़ कहते हैं।

40- हज्रे असवदः- यह मुबारक पत्थर जन्नती याकूत है जो काबा शरीफ़ की दीवार के एक कोने में ज़मीन से चार फुट के ऊपर अंडे की शक्ल में चाँदी के पत्तर से घिरा हुआ है।

41- मक़ामे इब्राहीमः- दरवाज़ए काबा के सामने एक कुब्बा में पत्थर रखा हुआ है इसे मक़ामे इब्राहीम कहते हैं।

42- ज़मज़मः- मक़ामे इब्राहीम से लगा हुआ दक्षिण की तरफ़ ज़मज़म का कुआँ है। मक़ामे इब्राहीम की तरह ज़मज़म भी मताफ़ में था भीड़ की वजह से कुछ साल पहले इसे नीचे हिस्से में कर दिया गया है।

43- तनईमः- वह जगह जहाँ से मक्का शरीफ़ के ठहरने के दौरान उ ारे के लिए एहराम बांधते हैं।

यहाँ मस्जिदे आइशा बनी हुई है। इसे लोग छोटा उमरा भी कहते हैं।

44- जिइर्राना:- मक्का शरीफ़ से लगभग उन्तीस किलो मीटर दूर ताइफ़ के रास्ते पर है यहाँ से भी मक्का शरीफ़ ठहराव के बीच उमरा का एहराम बांधा जाता है। इसको लोग बड़ा उमरा भी कहते हैं।

45- हरम:- मक्का मुअज़्जमा के चारों तरफ़ मीलों तक इस की हदें हैं और यह ज़मीन इज़्ज़त व पाकी की वजह से हरम कही जाती है। यहां शिकार करना और यहाँ के पेड़ पौधे उखेड़ना व काटना हाजी व ग़ैरे हाजी के लिए हराम है यहाँ के रहने वाले को हरमी या अहले हरम कहते हैं।

46- हिल:- हरम की हदों से बाहर मीक़ात तक की ज़मीन को हिल कहते हैं। इस जगह वह चीज़ें हलाल हैं जो हरम में हराम हैं।

47- मुहस्सिर:- मुज़दलफ़ा से मिला हुआ मैदान यहीं पर अस्हाबे फ़ील पर अज़ाब नाज़िल हुआ था इसलिए यहां से तेज़ी से गुज़र जाना चाहिए

48- वतने उरना:- अरफ़ात के क़रीब एक जंगल जहाँ हाजी का ठहरना ठीक नहीं।

49- मदआ़ः- मस्जिदे हराम और मक्का शरीफ़ के क़बरस्तान (जन्नतुलमुअल्ला) के बीच की जगह जहाँ दुआ़ मांगना मुस्तहब है।

50- खुशूअ़ः- बिनय, नम्रता, नरमी, गिड़गिड़ाना

51- खुजूअ़- बिनय, गिड़गिड़ना

52- हैज़ः- रज, मासिक धर्म, माहवारी

53- नेफ़ासः- प्रसव रक्त वह खून जो बच्चा जनने के बाद चालीस दिन तक निकलता है।

54- हमबिस्तरीः- संभोग, सहवास, मुबाशरत

55- शहवतः- लालसा, इच्छा, चाह, भोगेच्छा, नफ़सानी ख़ाहिश

56- इनज़ालः- नीचे उतरना, बीर्यपात, रेतस्खलन मनी निकलना।

57- एहतेलामः- स्वप्नदोष, ख़्वाब

58- ख़जालतः- लज्जा, शर्म, लाज

59- हि़जाज़े पाकः- अरब का एक मशहूर सूबा व शहर

60- बर्रे आज़मः- खुश्की का वह बड़ा हिस्सा जिस में बहुत से मुल्क हों

61- ख़लीज अरबीः- अरब खाड़ी

62- क़ुत्रः- ब्यास, दायरे को बीच से काटने वाला ख़त

63- मनासिके हजः- हज के अरकान (हाजियों की इबादत की जगहें)

64- जज़ीराः- द्वीप, टापू

65- कोहे मुफ़र्रहः- मदीना शरीफ़ का वह पहाड़ जहाँ से रौज़ए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम पर नज़र पड़ती है।

66- मैदाने कुबाः- कुबा का मैदान जहाँ हाजी हज़रात ठहरते हैं।

67- मौलिदुन्नबीः- हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैदा होने की जगह

68- पुरअनवारः- नूर से भरा हुआ

69- महाज़ः- केंद्र, मर्कज़, मध्य

70- रक़बाः- क्षेत्रफल, एरिया

71- मुरब्बअ्ः- वर्ग, स्क्वाएर

72- मअ्दनियातः- खनिज पदार्थ, खान से निकलने वाली चीज़ें

73- ताइफ़ः- ताइफ़ तवाफ़ करने वाले को कहते हैं, एक जगह का नाम

74- फ़िस्क़ः- दुराचार, पाप, बद आमाली, जुर्म, नाफ़रमानी,

75- ह़ाजतः ज़ुरूरत, आवश्यकता, ख़्वाहिश

76- यहूदीः हज़रते मूसा की उम्मत का एक ब्यक्ति

77- नसरानीः ईसाई

78- मालिके निसाबः- वह शख़्स है जो साढ़े बावन तोला चाँदी या साढ़े सात तोला सोने का मालिक हो या

उसमें से किसी एक की क़ीमत का तिजारती सामान का मालिक हो यह सामान रोज़ मर्रा ज़िन्दगी गुज़ारने के सामान के इलावा हो।

79- ज़कातः- दान, ख़ैरात

80- हजामतः- बाल बनवाना

81- मुस्तहबः- वह काम है कि जिसका करना सवाब और न करने पर कुछ गुनाह नहीं।

82-नामहरमः- वह रिश्तेदार या ग़ैर जिससे शादी करना जाइज़ है

83-सहीहुलअक़ीदाः- यानी जिसका अक़ीदा सहीह हो यानी बदमज़हब न हो।

84- नमाज़े नफ़्लः- जिसका पढ़ना सवाब है, न पढ़ने पर कोई पकड़ नहीं।

85- नमाज़े कस्रः- वह नमाज़ जो सफ़र की हालत में कम करके पढ़ी जाती है।

86-मुसाफ़िरः सफ़र करने वाला, राहगीर, प्रदेसी जो अपने वतन से बाहर हो।

87- मुक़ीमः ठहरने वाला, रहने वाला जो मुसाफ़िर न हो

88- फ़ासिक़े मोलिनः- वह गुनहगार जिसका गुनाह ज़ाहिर हो गया हो।

89- मुत्तबेअ़सुन्नतः- जो सुन्नत के तरीक़ों पर पाबंद हो।

90- बहरी रास्ताः- पानी वाला रास्ता जिस पर नाव या जहाज़ से आया या जाया जाये।

91-खुश्की कीराहः- ज़मीन का रास्ता

92-फ़हश कलामीः- बेहूदा बात, गालियाँ बक..

93- चश्मेः- चश्मा की जमा है। सोता, सरिता

94- वज़ारतुस्सेहाः- स्वास्थ जाँच करने का दूतावास

95-मदीनतुलहुज्जाजः- हाजियों के ठहरने की ख़ास जगह

96- ताअ़तः- फ़रमां बरदारी, वन्दना, इबादत

97- हिजरतः- प्रवास, तर्के वतन

98- मशगूलः- सलंग्न, तन्मय, बेस्त

99- मुज़तरः- ब्याकुल, परेशान

100- इह़ाताः- घेरा, हल्क़ा, चार दीवारों से घिरा हुआ

101- कुब्बाः- गुंबद

102- वजूदः- जीवन ज़िन्दगी शरीर

103- अह़दः- काल, वक़्त, युग, वचन

104- मिनजनीक़ः- एक आला जिस से बड़े-बड़े पत्थर फेंके जायें पुराने ज़माने की तोप

105- क़ौसः- धनुष, कमान

106- खुशगवारः- दिल पसंद, पसंदीदा

107- हुजूरे क़ल्बः- दिल का हाज़िर रहना

108- माज़ूरः- मजबूर, लाचार

109- मुअल्लिमः- गाइड, शिक्षक, वह शख़्स जो हाजीयों को

हज की बातें सिखाता है।

110- तख़मीननः- अनुमानत, लगभग

111- दमः- से मुराद एक बकरा या भेड़ की कुर्बानी है।

112- बुदनाः- से मुराद ऊँट या बड़े जानवर की कुर्बानी है।

113- यमीनः- दायाँ, दाहिना

114- अहले तक़वाः- खुदा का ख़ौफ़ रखने वाला, पारसा, मुत्तक़ी

115- शेआ़रः- चलन, तरीक़ा

116- कफ़्फ़ाराः- गुनाह धो देने वाला, गुनाह या ख़ता का बदला

117- अलवदाअ्ः- रूख़सत, विदा, रमज़ान का आख़िरी जुमा

118- सद्क़ाः- दान, ख़ैरात, न्योछावर

119- ज़ेरे नाफ़ः- नाभी के नीचे

120- तावानः- डंड, जुर्माना

121- वारिसः- उत्तराधिकारी, जानशीन

122- मूरिसः- पूर्वज, पिछले बुजुर्ग

123- आजिज़ः- निर्बल, कमज़ोर, ख़ाकसार, मजबूर

124- मुक़द्दसः- पवित्र, पुनीत, पाक, बुजुर्ग, पुण्यात्मा

125- अजदादः- बाप, दादा, पुर्खे

126- दारः- घर, जगह, मक़ाम

127- जूदः- बख़्शिश, सख़ावत, फ़राख़दिल, करम

128- वहशतः- उपेक्षा, नफ़रत, घबराहट, भय, डर

129- अब्रेरहमतः- रहमत के बादल

130- कस्रे महबूबः- महबूब का महल, हवेली, ऐवाने महबूब

131- मुतीओंः- फ़रमाँबरदारों, मातहत, हुक्म बरदार

132- अरूसोंः- अरूस की जमा है, दुल्हन

133- आग़ोशः- गोद, बग़ल, किनार

134- जुलमतः- अंधकार, अंधेरा

135- रिफ़अतः- उँचाई, उन्नति, तरक्क़ी

136- अहमियतः- बड़ाई, महत्व

137- उस्अ़तः- विस्तार, कुशादगी, फैलाव

138- बदबख़्तोंः- अभग, बदक़िस्मत, मुसीबतज़दा

139- हीलेः- बहाने

140- क़ाफ़ेलाः- यात्रीगण, मुसाफ़िरों की टोली

141- सुहूलतः- सुगमता, आसानी

142- बरअक्सः- उलटा, मुख़ालिफ़, विरूद्ध, बरखिलाफ़

143- माइलः- झुका हुआ, रूजूअ्,

144- जाइज़ाः- परिक्षण, जाँच, पड़ताल

145- आमालः- अमल की जमा है, काम, करनी, विर्द, वज़ाइफ

146- मुलव्विस - दूषित, लिप्त, सना हुआ

147- दिलरूबाः- मनोहर, मनमोहन, दिलबर, माशूक़

148- गिर्देकाबाः- काबा के आस पास, चारों तरफ़

149– सैराबः– सींचा हुआ, हरा भरा, तरो ताज़ा
150– खुशाबख़्तः– अच्छे नसीब वाला
151– शौकतः– वैभव, शान, रोब,
152– उलूः– बलंदी, ऊँचाई, बरतरी
153– अग़नियाः– ग़नी की जमा है, मालदार, दौलतमंद
154– अस्फ़याः– सफ़ी की जमा है। चुने हुए लोग, पाक बातिन लोग
155– इसयाँः– पाप, गुनाह, जुर्म, कुसूर
156– सरवरीः– सरदारी, अफ़सरी
157– खुसरवीः– बादशाही
158– बेकसनवाज़ः– मजबूरों को आसरा देने वाले, सरफराज़ करने वाले

JANNATI KAUN?

159– रौनक़ः– शोभा, सुंदरता, धूम धाम
160– मासियतः– पाप, गुनाह, नाफ़रमानी
161– हाजतमंदः– इच्छुक, ज़रूरतमंद
162– अजलः– समय, मौत, निधन
163– शाख़ेतूबाः– जन्नती पेड़ की टहनी
164– तहीदामनः– ख़ाली दामन, मुफ़लिस, ग़रीब
165– नाज़ेगुलामानाः– गुलामी का फ़ख्र, गुलामी पर गर्व

निगाहे अव्वलीं

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम

نحمده و نصلی علی رسوله الکریم

1396 हिज्री सन् 1976 ई. में जब मुझे हरमैन शरीफैन की ज़ियारत हासिल हुई तो हज व ज़ियारत के मसाइल पर एक ऐसी आसान किताब लिखने की सख़्त ज़ुरूरत महसूस हूई जो हज व ज़ियारत की अदाएगी के पूरे तरीक़े और आदाब के साथ साथ आज के बदले हूए हालात में हाजियों की क़दम क़दम पर सही रहनुमाई (मार्ग दर्शन) कर सके जो अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से वापसी के बाद चंद ही दिनो में मुकम्मल हो गई।

अगर हाजी हज़रात हज व ज़ियारत से पहले इस किताब को दो तीन बार पढ़ कर ज़ेहन में बिठा लें और साथ में रखें फिर मौक़ा पर उसे देखते रहें तो इन्शाअल्लाहु तआ़ला हज के अरकान सही तरीक़ा पर अदा होंगे और सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लसम के मज़ारे अक़दस की बरकतों से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ैज़ पायेंगे।

दुआ है की मौला तआ़ला इस किताब को मक़बूले आम फ़रमा कर हाजियों के लिए बेहतरीन रहनुमा (मार्ग दर्शन) और मेरे लिए नजात का ज़रिया बनाये। आमीन या रब्बल आलमीन।

जलालुद् दीन अहमद अमजदी

14 रजबुल मुरज्जब 1397 हिजरी, 2 जुलाई सन् 1977 ई.

कहीं नूरे नबी होगा कहीं नूरे खुदा होगा

(अज़:- शफ़ीक़ जौन पूरी)

उजाली रात होगी और मैदाने कुबा होगा।
ज़बाने शौक़ पर या मुस्तफ़ा या मुस्तफ़ा होगा।

य-लमलम ही से शोरिश होगी दिल की बेक़रारी में।
पहन कर जामए एहराम ज़ाइर झूमता होगा।

न पूछो हाजियों का वलवला जद्दा के साहिल पर।
लबों पर नग़मए इननिलते या रीहस्सबा होगा।

वह नख़लिस्ताने मक्का वह मदीना की गुज़रगाहें।
कहीं नूरे नबी होगा कहीं नूर खुदा होगा।

उतरते होंगे रहमत के फ़रिशते आसमानों से।
खुदा का नूर होगा रौज़ए खैरुलवरा होगा।

झुकी होगी मेरी गर्दन गुनाहों की ख़जालत से।
ज़बाँ पर या रसूलल्लाह उनजुरहालना होगा।

कभी कोहे मुफ़र्रेह से नज़ारे होंगे गुंबद के।
कभी बीरे अली पर हाजियों का जमघटा होगा।

शफ़ीक़ उस दिन न पूछो दर्दे उलफ़त की फ़रावानी।
कि हम होंगे हेजाज़े पाक का दारूश्शिफ़ा होगा।

☆☆☆

जज़ीरए अरब का मुख़्तसर तआ़रूफ़ (परिचय)

जज़ीरए अरब बर्रे आज़म एशिया के दक्षिण पश्चिम में वाक़े है चूंकि वह तीन तरफ समन्दर और एक तरफ़ दरयाये फुरात से जज़ीरा की तरह घिरा हुआ है इसलिए उस को जज़ीरए अरब कहते हैं।

जज़ीरए अरब के पश्चिम में "बहरे अहमर" उत्तर में उर्दुन, इराक़ और कुवैत, पूरब में ख़लीज़े अरबी, क़तर और अम्मान, दक्षिण में यमन और जुनूबे अरबी वाक़े हैं।

इस मुल्क का मशहूर शहर मक्का शरीफ़ है जहाँ हज़रते आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से सात हज़ार पाँच सौ पचपन साल की मुद्दत गुज़रने के बाद 12 रबीउल अव्वल मुताबिक़ 20 अप्रैल सन् 570 ई. को हमारे आक़ा व मौला जनाबे अहमदे मुस्तफ़ा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम पैदा हुए।

काबा शरीफ़ भी उसी मुक़द्दस शहर में है और मनासिके हज के दूसरे मक़ामात सफ़ा व मरवा तो काबा शरीफ़ के बहुत क़रीब हैं। और मिना, मुज़दलफ़ा और अरफ़ात मक्का शरीफ़ के पूरब पन्द्रह किलोमीटर के अन्दर मौजूद हैं।

मक्का शरीफ़ से उत्तर की तरफ़ क़रीब 320 किलो-मीटर पर दूसरा मशहूर शहर मदीना तय्यबा है। जहाँ हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का मज़ारे पुर अनवार है।

इसी मुल्क में मक्का शरीफ़ मदीना शरीफ़ के इलावा

बदर, उहद, ख़ैबर, फ़ेदक, हुनैन, ताइफ़ ओर तबूक इस्लामी तारीख़ में बहुत मशहूर जगहें हैं। हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम का शहर मदयन, तबूक के मध्य में "बहरे अहमर" के किनारे पर है।

जज़ीरए अरब की मौजूदा हुकूमत का कुल रक़बा क़रीब साढ़े 22 लाख वर्ग किलोमीटर है जिस की आबादी 80 अस्सी लाख से एक करोड़ के लग-भग है हुकूमत की सब से बड़ी आमदनी का ज़रिया तेल और पेट्रोल के कुएं हैं। जिस से मुल्क बहुत ख़ुशहाल हो गया है। इस के इलावा सोना, चाँदी, तांबा, सीसा, निकिल और एल्यूमीनियम वग़ैरा अहम धातुओं के ख़ज़ाने भी मालूम हूए हैं और जद्दा के क़रीब संगे मर मर की एक कान भी पाई गई है। मस्जिदे हराम और मस्जिदे नबवी की नई तामीर में यही पत्थर इस्तेमाल किये गये हैं। सफ़ा व मरवा की दीवारें इसी से बनाई गई हैं। तवाफ़ और सई की जगहों में भी यही पत्थर बिछाये गये हैं। और सीमेन्ट भी उसी पाकीज़ा ज़मीन का इस्तेमाल किया गया है।

इस सर ज़मीन पर पानी बहुत कम मिलता था लेकिन अब जगह जगह साफ़ सुथरे चश्मे (स्रोत) निकाले जा रहे हैं। जिससे अधिकतर पानी का मस्ला हल होगया है। मस्जिदे हराम के अगल बगल कई जगहों पर पानी की सप्लाई का इन्तेज़ाम है। जहाँ नहाने, धोने, और इसतिन्जा वग़ैरा करने के लिए पानी बहुत काफ़ी है। इस के इलावा मक्का शरीफ़ के शहर में यूनिसिपल्टि की तरफ़ से कहीं-कहीं पानी का मुफ़्त इन्तेज़ाम है। अलबत्ता आम तौर पर घरों में पानी की कमी है।

इस मुल्क में खेती बाड़ी ज़्यादा नही पिछले कुछ सालों

से सब्ज़ियाँ, गेहूं, मकई, दाल और बाजरा वग़ैरा की थोड़ी पैदावार कहीं कहीं हो रही है। अलबत्ता मदीना मुनव्वरा में उम्दा खजूरें होती हैं। और ताइफ़ में मेवे ज़्यादा होते हैं।

हज की फ़र्ज़ीयत और उस की क़िस्में

हज भी नमाज़, रोज़ा और ज़कात की तरह इस्लाम का एक अहम फ़रीज़ा और पाँचवाँ रुक्न है। नमाज़ रोज़ा जिस्मानी एबादत हैं। ज़कात माली एबादत है। और हज जिस्मानी व माली एबादत का मजमुआ है। हैसियत वाले आक़िल, बालिग़, मुसलमान मर्द व औरत पर उम्र में एक बार हज करना फ़र्ज़ है। चौथे पारा के पहले रुकूअ़ में है।

अर्थः-और अल्लाह के लिए लोगों पर बैतुल्लाह शरीफ़ का हज फ़र्ज़ है जो शख़्स कि रास्ता के लिहाज़ से उस की ताक़त रखे।

और हदीस शरीफ़ में है।

सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस ने हज किया और रफ़स यानी फुहश बातें न किया और फ़िस्क़ न किया तो गुनाहों से पाक होकर ऐसा लौटा जैसे उस दिन कि माँ के पेट से पैदा हुआ। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि हाजी अपने घर वालों में से चार सौ की शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करेगा और गुनाहों से ऐसा निकल जाएगा कि जैसे उस दिन माँ के पेट से पैदा हुआ (रवाहुल बज़ार) और नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फ़रमाया कि जिसे हज करने से ज़रूरी हाजत न रोके न ज़ालिम बादशाह और न कोई ऐसा मर्ज़ जो रोक दे फिर

वह हज किये बग़ैर मर गया तो चाहे यहूदी होकर मरे या नसरानी होकर (दारमी)

जिस तरह हर मुसलमान पर नमाज़ व रोज़ा के मसाइल और मालिके निसाब पर ज़कात के मसाइल सीखना ज़रूरी है इसी तरह जब कोई मुसलमान हज का इरादा करे तो उस पर हज के मसाइल सीखना ज़रूरी है ताकि हज सही तरीक़े पर अदा हो। सफ़र की मेहनत व परेशानी और पैसा बेकार न जाये।

पहले हाजी अपनी नीयत ठीक कर ले यानी उस मुबारक सफर से हज की अदाएगी और अल्लाह व रसूल की खूशी ही अस्ल मक़सद हो। हाजी कहलाने, मुल्के अरब की तफ़रीह करने या तिजारत वग़ैरा करने का कोई दुनयवी मक़सद न हो। इन्नमल आमालु बिन्नियात। اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ यानी आमाल का दारो मदार नीयतों ही पर है (बुख़ारी, मुस्लिम) वाज़ेह हो कि हज अदा करने के तीन तरीक़े हैं। यानी हज की तीन क़िस्में हैं क़िरान, तमत्तुअ़, इफ़राद इन में क़िरान सब से बेहतर है फिर तमत्तुअ़ और फिर इफ़राद।

क़िरानः- हज्जे क़िरान करने वाले को क़ारिन कहते हैं। क़ारिन मीक़ात पर पहुंच कर एहराम बांधने के लिए हज और उमरा दोनो की नीयत एक साथ करता है। क़िरान की नीयत यह है। "अल्लाहुम्म इन्नी उरीदुल हज्ज वल उमरत फ़यस्सिर हुमा व तक़ब्बल हुमा मिन्नी"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ الْحَجَّ وَ الْعُمْرَةَ فَیَسِّرْهُمَا لِیْ وَ تَقَبَّلْهُمَا مِنِّیْ

अर्थः- ऐ अल्लाह मैं हज व उमरा दोनों की नीयत करता हूँ। तू दोनों को मेरे लिए आसान फ़रमा और इन दोनों को मेरी तरफ़

से क़बूल फ़रमा।

क़ारिन मक्का शरीफ़ पहुँच कर उमरा का तवाफ़ रमल व इज़तेबाअ़ के साथ करता है। (रमल व इज़तेबाअ दाहिना कंधा खोल कर पहलवान की तरह छोटा क़दम रखने और कंधा हिलाते हुए जल्द-जल्द चलने को कहते हैं जिस की तफ़सील आगे आयेगी)

काबा शरीफ़ का तवाफ़ पूरा करने के बाद सई करता है। यानी सफ़ा व मरवा के बीच सात फेरे चलता है। इस तरह क़िरान का एक हिस्सा यानी उमरा पूरा हो जाता है मगर उस के बाद बाल नहीं बनवाता और न एहराम उतारता है बल्कि उस के बाद तवाफ़े कुदूम करता है और तवाफ़े कुदूम का वकूफ़े अरफ़ात से पहले कर लेना ज़रूरी होता है। अगर उस तवाफ़ के बाद तवाफ़े ज़ियारत की सई कर लेना चाहता है तो तवाफ़े कुदूम में रमल व इज़तेबाअ़ भी करता है और अगर तवाफ़े ज़ियारत की सई नहीं करना चाहता है तो तवाफ़े कुदूम में रमल व इज़तेबाअ़ नहीं करता। इसलिए कि जिस तवाफ़ के बाद सई नहीं होती उस में रमल व इज़तेबाअ़ नहीं होता।

क़ारिन उमरा और तवाफ़े कुदूम करने के बाद मक्का शरीफ़ में एहराम के साथ रहता है और जितना कि हो सकता है नफ़्ल तवाफ़ करता रहता है। फिर आठवीं ज़िलहिज्जा को उसी एहराम के साथ निकल कर मिना, अरफ़ात, मुज़दलफ़ा और कंकरी मारने से तअल्लुक़ रखने वाले हज के तमाम अरकान अदा करता है और कुर्बानी कराने के बाद सर मुंडाता है या कतरवाता है और फिर एहराम उतार देता है। उसकेबाद मक्का

शरीफ़ पहुंच कर तवाफ़े ज़ियारत करता है। इस तरह से हज्जे क़िरान किया जाता है।

नोटः- बीच में अगर एहराम की चादर किसी वजह से बदलना चाहता है तो बदल भी सकता है।

तमत्तुअ़ः- हज्जे तमत्तुअ़ करने वाले को मुतमत्तेअ़ कहते हैं। मुतमत्तेअ़ मीक़ात पर पहुंच कर सिर्फ़ उमरा की नीयत से एहराम बांधता है। उमरा की नीयत यह है। "अल्लाहुम म इन्नी उरीदुल उमर त फ़ यस्सिरहाली व तक़ब्बलहा मिन्नी"

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اُرِیْدُ الْعُمْرَۃَ فَیَسِّرْھَالِیْ وَ تَقَبَّلْھَا مِنِّی ۔

अर्थः- ऐ अल्लाह! मैं उमरा की नीयत करता हूं। तो तू इसे मेरे लिए आसान कर दे और इसे मेरी तरफ़ से क़बूल फ़रमा। मुतमत्तेअ़ मक्का शरीफ़ पहुँच कर उमरा का तवाफ़, रमल व इज़तेबाअ़ के साथ करता है। फिर सई करता है। उस के बाद बाल बनवा कर एहराम खोल देता है। इस तरह उमरा पूरा हो जाता है और जब तक मक्का मोअज़्ज़मा में रहता है जितना चाहता है नफ़्ल तवाफ़ करता रहता है। फिर आठवीं ज़िलहिज्जा को हज की नीयत से एहराम बांधता है। और हज के तमाम अरकान अदा करके क़ुर्बानी करता है। फिर बाल बनवाता है। और एहराम उतार कर तवाफ़े ज़ियारत करता है इस तरह हज्जे तमत्तुअ़ किया जाता है। जिस की तफ़सील आगे आ रही है।

इफ़रादः- इफ़राद हज करने वाले को मुफ़रिद कहते हैं। मुफ़रिद मीक़ात पर पहुँच कर सिर्फ़ हज की नीयत से एहराम बांधता है और नीयत इस तरह करता है। "अल्लाहुम म इन्नी उरीदुल हज ज फ़यस्सिरहुली वतक़ब्बलहु मिन्नी"

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اُرِیْدُ الْحَجَّ فَیَسِّرْہُ لِیْ وَ تَقَبَّلْہُ مِنِّی ۔

आर्थः- ऐ अल्लाह मैं हज की नीयत करता हूँ तो तू मेरे लिए इसको आसान फ़रमादे और इसे मेरी तरफ़ से क़बूल फ़रमा ले।

मुफरिद मक्का शरीफ़ पहुंच कर रमल व इज़तेबाअ़ के साथ तवाफ़े कुदूम करता है फिर सई करता है लेकिन उस के बाद न बाल बनवाता है और न एहराम खोलता है बल्कि उसी तरह मक्का शरीफ़ में रहता है और उस बीच में जितना चाहता है नफ़्ल तवाफ़ करता रहता है। फिर आठवीं ज़िलहिज्जा को उसी एहराम, के साथ हज के लिए निकल जाता है और उस के तमाम अरकान अदा करता है। मगर कुर्बानी उस के लिए मुस्तहब होती है वाजिब नहीं होती यानी अगर नहीं करता है तो गुनहगार नहीं होता और करता है तो बहुत सवाब पाता है। उस के बाद बाल बनवाकर एहराम उतार देता है। और तवाफ़े ज़ियारत करता है। इस तरह हज इफ़राद अदा किया जाता है।

तीनो क़िस्म के हज में शरीअ़त के अहकाम तक़रीबन यकसां हैं सिर्फ़ कुछ बातों में फ़र्क़ है जो उपरोक्त बयान से अच्छी तरह ज़ाहिर है।

सफ़रे हज के आदाब

सफ़रे हज के लिए एक ज़रूरी बात याद रखने की यह है कि अगर आलिम हो तो फ़िक़ह की किताबें ज़रूरत के मुताबिक़ साथ रखे और आलिम न हो तो किसी दीनदार सुन्नी सहीह अक़ीदा वाले आलिम के साथ सफ़र करे अगर यह मुमकिन न हो तो बहारे शरीयत भाग 6 और यह किताब अपने

साथ रखे, किसी बद्दीन का साथ हरगिज़ न करे, अगर कोई आपके साथ होना चाहे तो बहुत सोच समझकर उसे अपने साथ लें कि अक्सर ग़लत क़िस्म के दुनिया दार आदमी साथ हो जाते हैं। और क़दम क़दम पर उलझनें पैदा करते हैं किसी ना-महरम औरत को हरगिज़ साथ न लें अगरचे बूढ़ी हो और जबतक औरत के साथ शौहर या बालिग़ महरम क़ाबिले इतमीनान न हो हरगिज़ न हज को जाये अगर जाएगी तो हज हो जाएगा मगर हर दक़म पर गुनाह लिखा जाएगा।

किसी जानकार आदमी से मालूमात हासिल करके सफ़र में काम आने वालीचीज़ें अपने साथ रखे, पहनने के लिए कपड़े ज़्यादा हों और अगर इस्तिताअत होतो एक दो जोड़े टेरीकॉट या पोलिस्टर के भी रखे कि धुलने में आसानी होती है। अगर ख़्याल हो कि जाड़े का ज़माना आ जाएगा तो गरम कपड़े भी साथ रखे, अगर छोटा रूई का गद्दा भी हो तो बहुत अच्छा है कि चटाई पर सोने से तकलीफ़ होती है। एहराम के कपड़े यानी लुंगी और चादर यहीं से खरीद ले और बेहतर है कि दो जोड़े हों ताकि ज़रूरत आने पर बदल सकें और जाड़े में एहराम का तौलिया भी जुरूरी है। चाकू, बोरी सिलने वाला सूजा, सुतली धागा और बारीक व मोटी सूई भी साथ रखे, खांसी, बुख़ार, नज़ला, जुकाम पेचिश और वदहज़मी वग़ैरा की पेटेन्ट दवायें साथ में रखना ज़रूरी है। बधना, बाल्टी, स्टोव, पतेली, प्लेट और ताम चीनी के प्याले भी साथ रखे कि वह चाय पीने में भी काम देते हैं और टार्च भी साथ रखे तो बेहतर है।

खाने की चीज़ें ज़रूरत के मुताबिक साथ रखे जैसे

आटा, गेहूं, चावल, दाल, आलू, तेल, घी, पिसे हूए मसाले और लहसुन प्याज़ वग़ैरा, आटा थोड़ा हो कि रास्ता में ख़राब होने का ख़तरा है और मसूर की दाल ज़रूर ले कि जल्द गलती है। बक्स इटैची, बोरी और दूसरे सामानों पर अपना नाम और पूरा पता लिखे। बक्स और अटैची का मज़बूत होना ज़रूरी है कि जद्दा में कुली उठा कर बेदरेग़ फेंकते हैं इस तरह कमज़ोर बक्स और अटैची अक्सर टूट जाते हैं।

घर से रवानगी

रवानगी से पहले अगर क़र्ज़दार हो या अमानत पास हो तो अदा करदे जिसका माल नाहक़ लिया हो उसे वापस कर दे या मुआ़फ़ कराये पाक माल और पाक कमाई से हज करे। ज़कात वग़ैरा और जितनी इबादतें बाक़ी हों उन्हें अदा करे। सच्चे दिल से तौबा करे और आइन्दा गुनाह न करने का पक्का इरादा करे। अज़ीज़ों, दोस्तों से मिले और अपने कुसूर (ग़लती) मुआ़फ़ कराये और अब उन पर ज़रूरी है कि दिल से मुआ़फ़ कर दें।

रवानगी से पहले मकान के अन्दर जाकर चार रकअ़त नफ़्ल पढ़े। पहली रकअ़त में सूर-ए-फ़ातिहा के साथ सूर-ए-काफ़िरून यानी कुलया अय्युहल काफ़िरून قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ दूसरी रक़अत में कुल हुवल्लाहु अहद قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ तीसरी में कुल अऊजु बिरब्बिल फ़लक़ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ और चौथी में कुल अऊजु बिरब्बिन्नास قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ पढ़ना बेहतर है। नमाज़ के बाद दिल से यह दुआ मांगे।

दुआ:- अल्लाहुम्म म बिक न तशरतु व इलइ क तवज्जहतु व बिक अ़ तसमतु व अलइ क तवक्कलतु अल्लाहुम्म म अन त सि क़नी व अन त रजाई अल्लाहुम्म म मकफ़िनी मा अहम्मनी वमा ला अहनम्मु बिही वमा अन त आ लमु बिही मिन्नी अज़्ज़ जारूक व लाइला ह ग़ैरुक अल्लाहुम्म म ज़व्विदनित्तक़वा वग़फ़िरली जुनूबी व वज्जहनी इलल ख़ैरि ऐनमा तवज्जहतु अल्लाहुम्म म इन्नी अवूज़ु बि क मिन व अ़साइस सफ़रि व काबतिल मुनक़लबि वल हौरि बअ़्दल कौरि व सूइल मनज़रि फ़िल अहलि वल मालि वल वलदि।

اَللّٰهُمَّ بِكَ انْتَشَرْتُ وَ اِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَ بِكَ اعْتَصَمْتُ وَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ ۔ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ ثِقَتِيْ وَ اَنْتَ رَجَائِيْ اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ مَا اَهَمَّنِيْ وَ مَا لَا اَهْتَمُّ بِهٖ وَ مَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ عَزَّ جَارُ كَ وَ لَا اِلٰهَ غَيْرُكَ ۔ اَللّٰهُمَّ زَوِّدْنِي التَّقْوٰى وَ اغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَ وَجِّهْنِيْ اِلَى الْخَيْرِ اَيْنَمَا تَوَجَّهْتُ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَ كَاٰبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَ الْحَوْرِ بَعْدَ الْكَوْرِ وَ سُوْءِ الْمَنْظَرِ فِي الْاَهْلِ وَ ا الِ وَ الْوَلَدِ ۔

अर्थ:- ऐ अल्ल मैं तेरी मदद से निकला और तेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुआ ँ र तेरा एतेसाम किया और तुझी पर भरोसा किया। ऐ अल्लाह तू मेरा सहारा है और तू मेरी उम्मीद है, ऐ अल्लाह तू मेरी किफ़ायत फ़रमा उस चीज़ से जो मुझे फ़िक्र मे डाले और उस चीज़ से कि जिस की मैं फ़िक्र नहीं करता और उस चीज़ से कि जिस को तू मुझ से ज़्यादा जानता है। तेरी पनाह लेने वाला बाइज़्ज़त है और तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं। इलाही तक़्वा को मेरा ज़ादेराह कर और मेरे गुनाहों को बख़्श दे और मैं जिस तरफ़ भी तवज्जो करूं तू मुझे भलाई की तरफ़

मुतवज्जेह कर या अल्लाह मैं तेरी पनाह मांगता हूँ सफ़र की तकलीफ़ से और वापसी की बुराई से और आराम के बाद तकलीफ़ से और अह्ल व माल और औलाद में बुरी बात देखने से।

अगर यह दुआ अरबी में न पढ़ सके तो उस के मफ़हूम को अपनी ज़बान में अदा करे। घर से निकलने के पहले और बाद में कुछ सद्क़ा करे। दरवाज़े से निकलते ही यह दूआ पढ़े।
दुआ:-बिस्मिल्लाहि व बिल्लाहि व तवक्कलतु अलल्लाहि वला हौ ल वला कूव्व त इल्ला बिल्लाहि अल्लाहुम-म इन्नी अऊजू बि क मिन अन अज़िल ल औ उज़ल ल औ अज़लि म औ उज़ल म औ अजह ल औ युजह ल अलइ य।

بِسْمِ اللّٰهِ وَ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اَضِلَّ اَوْ اُضَلَّ اَوْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ اَوْ اَجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَیَّ.

अर्थ:- "अल्लाह के नाम के साथ और अल्लाह की मदद से और मैंने अल्लाह पर भरोसा किया। गुनाह से फिरने और नेकी करने की कूव्वत सिर्फ़ अल्लाह की तौफ़ीक़ से है। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ उस बात से कि ख़ुद गुमराह हो जाऊं या गुमराह किया जाऊं या ज़ुल्म करूं या ज़ुल्म किया जाऊं या जहालत करूं या जहालत मेरे साथ की जाये"

इस के बाद मोहल्ला की मस्जिद में दो रकअ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़े फिर स्टेशन या हवाई अड्डा की तरफ़ चल पड़े। लोगों से रूख़सत होते हुए मुसाफ़हा के वक़्त यह दुआ पढ़े।
दुआ:-अस्तौदिओ कुमुल्लाहल्लज़ी ला युज़ीओ व दाएअहु"

اَسْتَوْدِعُكُمُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَا یُضِیْعُ وَ دَائِعَهٗ ۔

अर्थ:- "मैं तुम लोगों को अल्लाह के सपुर्द क़रता हूं। जो अमानतों को ज़ाये नहीं फ़रमाता"

और रूख़सत करने वाले इस के जवाब में यह दुआ पढ़ें।

दुआ:- अस्तौदिउल्लाह दी न क व अमा नत क व ख़वाती म अ म लि क"

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِیْنَكَ وَ اَمَانَتَكَ وَ خَوَاتِیْمَ عَمَلِكَ

अर्थ:- मैं तुम्हारे दीन तुम्हारी अमानत और तुम्हारे कामों के अंजाम को ख़ुदाये तआ़ला के हवाले करता हूँ।

इसी तरह दुआयें देता हुआ और दुआयें लेता हुआ लोगों को अल्लाह के हवाले करके जब मोटर या ट्रेन वग़ैरा सवारी पर बैठे तो यह दुआ पढ़े।

JANNATI KAUN?

दुआ:- सुब्हानल्लज़ी सख़ ख़ र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन क़ लि बून।

سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَ مَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَ اِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ۔

अर्थ:-पाक है वह ज़ात कि जिस ने हमारे लिए उसे मुसख़्ख़र फ़रमाया और हम उस को फ़रमांबरदार नहीं बना सकते थे और हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं।"

सफ़र की नमाज़

जब आप अपने वतन से बाहर निकलें और लखनऊ, दिल्ली, बम्बई, या कराची शहर आप के यहां से 57 3/8 मील यानी तक़रीबन 92 किलो मीटर या इस से ज़्यादा दूरी पर हो तो

नमाज़ में क़स्र करें यानी ज़ुहर, अस्र, और एशा चार रकअ़त वाली फ़र्ज़ नमाज़ को दो रकअ़त पढ़ें। और दो रकअ़त पढ़ना वाजिब है। अगर चार पढ़ेगा तो गुनहगार होगा। (दुर्रे मुख़्तार, बहरुर्राइक़) फ़ज्र, मग़रिब, और वित्र में क़स्र नहीं हैं। और सुन्नतों में भी क़स्र नहीं है। अगर मौक़ा होतो सुन्नतें पूरी पढ़ें वर्ना मुआफ़ हैं।

और अगर लाखनऊ, दिल्ली, बम्बई या कराची में पन्द्रह दिन ठहरने की नीयत नहीं है तो वहाँ पहुँचने के बाद भी क़स्र करते रहें। और जहाज़ में भी क़स्र करें और बम्बई या कराची अगर 92 किलो मीटर से कम है या वहाँ पन्द्रह दिन ठहरने की नीयत की है। तो जहाज़ जब तक गोदी में खड़ा रहे क़स्र नमाज़ न पढ़ें लेकिन जब गादी से निकल कर आबादी से दूर हो जाये तो क़स्र नमाज़ के हुक्म पर अमल करें। अब जहाज़ में क़स्र पढ़ते रहें और जद्दा उतरने के बाद भी क़स्र करें। फिर मक्का मुअज़्ज़मा में अगर इस नीयत से दाख़िल हुआ कि पन्द्रह दिन के अन्दर मदीना तय्यबा का सफ़र करेगा तो उस सूरत में मक्का शरीफ़ में भी क़स्र करेगा और मदीना तय्यबा के रास्ते में भी और मदीना तय्यबा पहुँच कर भी इस लिए कि वहाँ दस दिन से ज़्यादा हाजियों को ठहरने नहीं दिया जाता। हाँ अगर मदीना तय्यबा में पन्द्रह दिन ठहरने की नीयत से हाज़िर हुआ तो क़स्र नहीं करेग । और मदीना तय्यबा से वापसी हो या मक्का शरीफ़ से जद्दा को रास्ते में क़स्र करेगा और जद्दा पहुँचने के बाद भी क़स्र करेगा। और जो शख़्स मक्का शरीफ़ में उस वक्त दाख़िल हुआ कि हज के अरकान अदा करने के लिए मिना की तरफ़

निकलने में पन्द्रह दिन से कम बाक़ी रह गये हैं तो वह मक्का शरीफ़ में क़स्र करेगा। और हज के दिनों में मेना, अरफ़ात और मुज़दलफ़ा में भी क़स्र करेगा (बदाएउस्सनाए, बहरुर्राइक़, फ़तावा आलमगीरी, रद्दुलमुहतार)

नोटः–1. क़स्र का हुक्म उस सूरत में है जब कि तनहा पढ़े या इमामत करे या मुसाफ़िर इमाम के पीछे पढ़े लेकिन अगर मुक़ीम इमाम के पीछे पढ़े तो क़स्र न करे। और मुक़ीम अगर मुसाफ़िर के पीछे पढ़े तो इमाम के सलाम फेरने के बाद अपनी बाक़ी दो रकअ़तें पढ़े और उन रकअ़तों में क़ेराअत बिल्कुल न करे बल्कि सूरए फ़ातिहा पढ़ने की मिक़दार चुप चाप खड़ा रहे।

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुहतार)

2. फ़ासिक़े मोलिन, दाढ़ी मुंडाने वाले या एक मुश्त (मुठ्ठी) से कम दाढ़ी रखने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं। और वह बद मज़हब जिसकी बद मज़हबी कुफ्र की हद तक पहुँच गई हो जैसे राफ़ज़ी और वह जो शफ़ाअत या दीदारे इलाही का इनकार करता है उस के पीछे भी नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं (आलमगीरी) और इस से सख्त हुक्म उन लोगों का है जो अपने आप को मुसलमान कहते हैं। और मुत्तबेअ़ सुन्नत बनते हैं। और इसके बावजूमद कुछ ज़रूरियाते दीन को नहीं मानते। अल्लाह व रसूल की शान में तौहीन करते हैं या कम से कम तौहीन करने वाले को मुसलमान जानते हैं ऐसे लोगों के पीछे भी नमाज़ हरगिज़ नहीं होगी (बहारे शरीअत)

हज्जे तमत्तुअ़ का तफ़सीली बयान

तीनों क़िस्म के हज में चूंकि "तमत्तुअ़" आसान है इसलिए हाजी हज़रात ज़्यादा इसी तरह हज करते हैं इसलिए हम इसको तफ़सील के साथ बयान करते हैं।

मीक़ातः- मीक़ात उस जगह को कहते हैं कि मक्का शरीफ़ जाने वाले के लिए वहाँ से एहराम बांधना ज़रूरी है। विभिन्न रास्तों से आने वालों के लिए अलग अलग मीक़ात मुक़र्रर है। मदीना तय्यबा की तरफ़ से आने वालों के लिए मीक़ात "जुलहुलैफ़ा" है जिसे आज कल "बीरे अली" कहते हैं। इराक़ की तरफ़ से आने वालों की मीक़ात "ज़ाते एरक़" है। शाम और मिस्र से आने वालों की मीक़ात "जुहफ़ा" या "राग़िब" है। नज्द वालों की मीक़ात "क़र्न" है। और यमन वालों की मीक़ात "यलम-लम" है। हिन्दुस्तान व पाकिस्तान से जाने वालों की मीक़ात भी "यलम-लम" ही है।

पानी के जहाज़ पर सफर करने वाले हाजियों के लिए "यलम-लम" से पहले कोई खास अमल नहीं है। इस बीच में किताब वग़ैरा की मदद से हज के मसाइल अच्छी तरह समझ लें। दुरूद शरीफ़ की ज़्यादती करें। कुरआने पाक की तिलावत और तौबा व इस्तिग़फ़ार में सारा व्क्त गुज़ारें।

यलम-लम पानी के रास्ते से बहुत दूर है जहाज़ से नज़र नहीं आता वह मक्का शरीफ़ से ख़ुश्की के रास्ते पर तक़रीबन सौ 100 किलोमीटर दूर है। कराची और बम्बई से जाने वाला पानी का जहाज़ आम तौर पर छटे या सातवें दिन यलम-लम के सीध पर पहुंचता है। वहाँ पहुँचने से छः सात घंटा पहले जहाज़ वाले

सीटी बजाकर यलम-लम आने की ख़ाबर करते हैं और लाउडस्पीकर से भी एलान किया जाता है ताकि यलम-लम आने से पहले ही लोग एहराम बांध लें यलमलम के बाद छः सात घंटे में जहाज़ जद्दा पहुँच जाता है।

मर्दों का एहराम:–एहराम बांधने से पहले बाल बनवालें तो बेहतर है। अगर बाल न बनवा सकें तो कोई गुनाह नहीं अलबत्ता नाख़ुन काटना, बग़ल और नाफ़ के नीचे के बाल दूर कर लेना मुनासिब है। इसके बाद मिस्वाक करें और गुस्ल करें, अगर गुस्ल न कर सकें तो वुज़ू करके एहराम बांधें सिले हुए कपड़े और मोज़े उतार दें, एक सफ़ेद चादर बदन पर डाल लें और एक लुंगी के तौर पर बांध लें। बाज़ लोग उसी वक्त से चादर दाहिनी बग़ल के नीचे करके दोनों पल्लू बायें कंधे पर डाल लेते हैं यह सुन्नत के ख़िलाफ़ है। (बहारे शरीअत)

एहराम बांध कर बदन और कपड़ों पर ख़ुशबू लगाना सुन्नत है लेकिन एहराम के कपड़ों पर ख़ुशबू का दाग़ न लगे फिर मकरूह वक़्त न हो तो सर ढांक कर एहराम की नीयत से दो रकअ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़ें पहली रकअ़त में सूरए फातिहा के बाद कुलया अय्युहल काफ़िरून قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और दूसरी रकअ़त में कुल हुवल्लाह قُلْ هُوَ اللّٰهُ पढ़ना बेहतर है सलाम फेरने के बाद सर से चादर हटा लें और उसी जगह बैठे हुए इस तरह नीयत करें। "अल्ल्लाहुम म इन्नी उरीदुल उम र त फ़यस्सिर हा ली व तक़ब्बलहा मिन्नी" اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ الْعُمْرَةَ فَيَسِّرْهَالِیْ وَ تَقَبَّلْهَا مِنِّیْ ۔

अर्थः- ऐ अल्लाह! मैं उमरा की नीयत करता हूँ इस को मेरे लिए आसान कर दे और इसे मेरी तरफ़ से क़बूल फ़रमा।

नीयत कहते हैं दिल के इरादा को तो अगर किसी ने ज़बान से कुछ न कहा और दिल ही में नीयत कर ली तब भी नीयत पूरी हो जाएगी। जो शख्स एहराम बांध ले नमाज़ की हालत में भी उस का सर खुला रहेगा इसलिए कि एहराम की हालत में मर्दों को सर पर कपड़ा रखना मना है।

तलबियहः–नीयत के बाद दरमियानी आवाज़ से इस तरह लब्बइक कहें। "लब्बइक अल्लाहुम म लब्बइक। लब्बइक लाशरी क ल क लब्बइक। इन्नल हम द वन्नेअ् म त ल क वल मुल्क। लाशरी क ल क।"

اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ ۔ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ ۔ اِنَّ الْحَمْدَ وَ النِّعْمَةَ لَكَ وَ الْمُلْكَ ۔ لَا شَرِيْكَ لَكَ ۔

अर्थः– मैं तेरे हुज़ूर हाज़िर हुआ। ऐ अल्लाह! मैं तेरे हुज़ूर हाज़िर हुआ। तेरे हुजूर हाज़िर हुआ तेरा कोई शरीक नहीं मैं तेरे हुजूर हाज़िर हुआ बेशक तारीफ़, नेमत और मुल्क तेरे ही लिए है। तेरा कोई शरीक नहीं।

लब्बइक لبيك तीन बार कहे फिर दुरूद शरीफ़ पढ़े इस के बाद यह दुआ मांगे। "अल्लहुम म इन्नी अस्अलु क रिज़ा क वल जन्न त व अऊजू बि क मिन ग़ ज़ बि क वन्नारि"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ رِضَاكَ وَ الْجَنَّةَ وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ غَضَبِكَ وَ النَّارِ

अर्थः–ऐ अल्लाह! मैं तेरी रज़ा और जन्नत का चाहने वाला हूँ और तेरे ग़ज़ब (प्रकोप) और जहन्नम से तेरी ही पनाह मांगता हूँ।

जो शख़्स मदीना तय्यबा पहले जाना चाहे उसे यलम-लम से एहराम बांधने की ज़रूरत नहीं वह मदीना तय्यबा की मीकात "बीरे अली" से एहराम बांधे और आज कल लोग मदीना तय्यबा ही से एहराम बांध लेते हैं इसलिए कि बस वाले अक्सर "बीरे अली" पर ठहरते नहीं।

और जो शख़्स हवाई जहाज़ से सफ़र करे उस के लिए बेहतर यह है कि हवाई अड्डा पर जाने से पहले एहराम बांध ले इसलिए कि दर्मियान में उसे सुन्नत के तरीक़ा पर एहराम बांधने का मौक़ा नहीं मिल सकेगा।

लब्बइक के मस्अले:- एहराम के लिए एक मरतबा ज़बान से लब्बइक لَبَّيْك कहना ज़रूरी है। अगर उस की जगह "सुब्हानल्लाह سُبْحَانَ اللّٰه या अल्हम्दुलिल्लाह اَلْحَمْدُ لِلّٰه या लाइला ह इल्लल्लाह" لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه जैसे कलेमात कहा और एहराम की नीयत कर ली तो भी एहराम हो जाएगा मगर सुन्नत लब्बइक لَبَّيْك ही कहना है। एहराम के लिए लब्बइक لَبَّيْك कहने में नीयत शर्त है। यानी अगर बिग़ैर नीयत लब्बइक لَبَّيْك कहा तो एहराम न हुआ। यूँ ही तन्हा नीयत भी काफ़ी नहीं जब तक कि लब्बइक لَبَّيْك या उस की जगह कोई और चीज़ न हो। हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद लब्बइक لَبَّيْك कहें और चलते फिरते, उठते बैठते लोगों से मुलाक़ात के वक़्त वुज़ू हो या न हो दर्मियानी आवाज़ से लब्बइक لَبَّيْك कहते रहें और जब शुरूअ़ करें तो तीन बार कहें। लब्बइक के जिन लफ़्ज़ों का ज़िक्र किया गया है उनमें कमी न करें और जो शख़्स लब्बइक لَبَّيْك कह रहा है उस हालत में उसको सलाम न करें।

औरतों का एहराम:- औरतें भी एहराम के लिए मिस्वाक और ग़ुस्ल करें हैज़ व नेफ़ास वाली औरतें भी ग़ुस्ल करें अगर किसी वजह से ग़ुस्ल न कर सकें तो वुज़ू करें। औरतों का एहराम उन के सिले हूए कपड़े हैं हैज़ व नेफ़ास वाली न हो तो उपरोक्त तरीक़े पर दो रकअ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़ कर उमरा की

नीयत कर लें। और लब्बइक لَبَّيْكَ कह कर दुआ पढ़ लें मगर औरतें इतनी धीमी आवाज़ से लब्बइक لَبَّيْكَ कहें कि ख़ुद सुनें लेकिन ग़ैर महरम न सुने और हैज़ व नेफ़ास वाली हों तो नमाज़ न पढ़ें।

औरत को एहराम की हालत में सर छुपाना जाइज़ है बल्कि ग़ैर महरम के सामने और नमाज़ में फ़र्ज़ है और सर पर कपड़े की गठरी भी रखना जाइज़ है। और चेहरे पर कपड़ा डालना हराम है। लेकिन चूंकि ना महरम के सामने बे पर्दा होना जाइज़ नहीं इसलिए पेशानी पर छज्जा जैसी कोई चीज़ बांध कर उस पर नक़ाब इस तरह डालें कि चेहरे के किसी हिस्से को न लगे और चेहरे पर चटाई या पंखा इस तरह डालना कि चेहरे को लगे मना है। अलबत्ता दस्ताने, मोज़े और सिले हुए कपड़े पहनना औरतों को जाइज़ हैं और उन के लिए एहराम के दूसरे मसाइल मर्दो की तरह हैं।

बच्चों का एहराम:- बच्चा अगर समझदार है तो वह ख़ुद एहराम बांधे और अरकाने हज अदा करे। और अगर ना समझ है तो उस की तरफ़ से उस का वली एहराम बांधे और उस के बदन से सिले हुए कपड़े निकाल दे और लुंगी पहना दे। और वाज़ेह रहे कि बच्चों पर हज फ़र्ज़ नहीं इसलिए अगर वह एहराम में मना की हुई बातों से न बच सकें या हज के तमाम कामों को छोड़ दें या कुछ को छोड़ दें तो उन पर या उन के वली पर कोई जज़ा या क़ज़ा वाजिब नहीं।

वह बातें जो एहराम में हराम हैं:- औरत से हमबिस्तरी करना, शहवत के साथ गले लगाना, बोसा देना या छूना, फुहश बातें करना, और गुनाह जो हमेशा हराम थे अब और सख़्त हराम हो गये। किसी से लड़ाई झगड़ा करना। मगर दीन के लिए झगड़ना जाइज़ है। बल्कि ज़रूरत के मुताबिक़ फ़र्ज़ और वाजिब है। जंगल का शिकार करना या शिकारी की मदद करना जंगली जानवर के अंडे तोड़ना, पर उखेड़ना पाँव या बाज़ू तोड़ना, उस का गोश्त या अंडे पकाना, भूनना, बेचना, ख़रीदना और खाना सब हराम है। किसी का सर मूंडना, अपना या दूसरे का नाख़ुन काटना या दूसरे से अपना कटवाना, सर से पाँव तक कहीं से कोई बाल किसी तरह अलग करना, मुँह या सर किसी कपड़े वग़ैरा से छिपाना, कपड़े की गठरी सर पर रखना, हाथ पैर के मोज़े और किसी क़िस्म के सिले हुए कपड़े पहनना, सर पर अमामा बांधना, ऐसे जूते पहनना जिस से क़दम के बीच की उभरी हुई हड्डी छुप जाये, ख़ालिस ख़ुशबू मुश्क, ज़ाफ़रान, जावित्री, लौंग, इलायची, दारचीनी और सोंठ वग़ैरा खाना इत्र और खुशबूदार तेल लगाना, ज़ैतून या तिल का तेल अगरचे बे ख़ुशबू हों बदन या बाल में लगाना, जूं मारना या फेंकना, यह सारी चीज़ें एहराम की हालत में हराम हैं।

एहराम के मकरूहात:- बदन से मैल दूर करना, बाल या बदन साबुन वग़ैरा बे ख़ुशबू की चीज़ से धोना, कंघी करना, इस तरह खुजलाना कि बाल टूटने या जूं गिरने का अंदेशा हो,

खुशबूदार डेंटल क्रीम या पाउडर इस्तेमाल करना या ख़ुशबूदार मेवा खाना और जान बूझ कर ख़ुशबू सूंघना अगरचे ख़ुशबूदार फल या पत्ता हो जैसे लेमू, नारंगी और पुदीना वग़ैरा। ग़िलाफ़े काबा के अन्दर इस तरह दाख़िल होना कि ग़िलाफ़ शरीफ़ सर या मुंह से लगे। नाक वग़ैरा मुंह का कोई हिस्सा कपड़े से छिपाना, रफ़ू किया हुआ या पेवन्द लगा हुआ कपड़ा पहनना, तकिया पर मुंह रखकर औंधा लेटना, बाज़ू या गले पर तावीज़ बांधना अगरचे बे सिले हुए कपड़े में हो सर और चेहरे के इलावा बदन के किसी हिस्से पर बिला उज़्र (मजबूरी के बग़ैर) पट्टी बांधना शृंगार करना, गर्दन में चादर लपेट कर गांठ देना, चादर या लुंगी के एक किनारे को दूसरे किनारे से मिला कर सूई या पिन से बाधंना या गांठ देना और लुंगी बांध कर कमर पट्टा वग़ैरा से कसना यह सारी बातें एहराम की हालत में मकरूह हैं।

एहराम के मुबाहातः- चादर के आंचलों को लुंगी में खोसना, पैसे की हिफ़ाज़त के जिए लुंगी पर कमर पट्टा या हिमयानी बांधना, हथियार बांधना, बे मैल छुड़ाये गुस्ल करना, ग़ोता लगाना कपड़े धोना जबकि जूं मारने की ग़रज़ से न हो, मिस्वाक करना, किसी चीज़ के साया में बैठना छतरी लगाना, अंगूठी पहनना, बे ख़ुशबू का सुरमा लगाना, दांत उखाड़ना टूटे हुए नाखुन को जुदा करना, फुंसी तोड़ देना, खतना करना, आंख में जो बाल निकले उसे अलग करना, सर या बदन इस तरह खुजाना कि बाल न टूटे, एहराम से पहले जो ख़ुशबू लगाई उस का लगा रहना, पालतू जानवर ऊंट, बकरी और मुर्ग़ी वग़ैरा ज़बह

करना, पकाना, खाना और उस का दूध दूहना, उस के अंडे तोड़ना, भूनना और खाना सब जाइज़ है। खाने के लिए मछली का शिकार करना और दवा के लिए किसी दरयाई जानवर को मारना जाइज़ है। अगर दवा या खाना के लिए न हो सिर्फ़ तफ़रीह के लिए हो तो दरिया (नदी) का शिकार हो या जंगल का हमेशा हराम है। अब एहराम की हालत में और सख़्त हराम हो गया चील, कौआ, चूहा, गिरगिट, छिपकली, सांप बिछ्छू, खटमल, मच्छर, पिस्सू और मक्खी वग़ैरा ख़बीस व मूज़ी जानवरों को मारना अगरचे हरम में हो जाइज़ है। मुंह और सरके इलावा किसी और जगह ज़ख्म पर पट्टी बांधना, सर या गाल के नीचे तकिया रखना, सर या नाक पर अपना या दूसरे का हाथ रखना, कपड़े से कान और गर्दन छुपाना, सर पर सीनी या बोरी उठाना, घी, चर्बी, और कड़ुआतेल या नारियल बादाम और कद्दू, काहू का तेल कि बसाया न हो। बाल या बदन में लगाना, ऐसा जूता पहनना जो बीच क़दम की उभरी हुई हड्डी को न छुपाये बग़ैर सिले हुए कपड़े में लपेट कर तावीज़ गले में डालना, आइना देखना और निकाह करना यह सारी चीज़ें एहराम की हालत में जाइज़ हैं।

जद् दा का मुख़्तसर तआरूफ़

जद्दा एक बहुत बड़ा शहर है। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अपने ख़िलाफ़त के ज़माना में इसेबंदरगाह की हैसियत से पसंद फ़रमाया था जिस की आबादी

आज क़रीब एक लाख है। उम्दा सड़कें बनी हुई हैं। तक़रीबन चार हज़ार मकानात दो मंज़िला से ले कर 27 मंज़िल तक बने हुए हैं। चार पाँच हज़ार दुकानें, कई सरकारी अस्पताल और तक़रीबन चार सौ रेस्टोरेन्ट मौजूद हैं। यहां पर हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, इराक़ मिस्र, इन्डोनेशिया, जापान फ्रांस, बरतानिया, और अमरिका वग़ैरा छोटे बड़े सत्तर मुल्कों के सफ़ारत खाने (दुतावास) मौजूद हैं। जिनको अब सऊदी हुक्काम ने राजधानी रेयाज़ में मुनतक़िल (ट्रांसफर) कर देने का फैसला किया है।

जद्दा में मीठा पानी ज़्यादा है वादिए फ़ातिमा से जहाँ मीठे पानी के चश्मे (स्रोत) ज़्यादा तादाद में हैं पाइप लाइन के ज़रिए जद्दा में पानी पहुंचाने की आसानी हो गई है और समन्दर के पानी को भी मशीन के ज़रिया मीठा पानी बनाया जाता है। जद्दा से कुछ दूरी पर एक जगह पानी का स्टॉक रखा जाता है। जिस से नलों के ज़रिया दिन रात मकानात में पानी पहुँचाया जाता है। जद्दा से मक्का शरीफ़, मदीना तय्यबा और ताइफ़ तक डायरेक्ट टेलीफ़ोन लाइन है और जद्दा, से हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, मिस्र और शाम वग़ैरा के बीच रेडियो टेलीफ़ोन वगैरा की काफ़ी आसानियां हैं।

जद्दा में बेहद ख़ूबसूरत हवाई अड्डा बनाया गया है जहाँ दिन रात देश प्रदेश के हवाई जहाज़ काफ़ी तादाद में उतरते रहते हैं। और हज के मौसम में तो दुनिया भर के आये हुए बिभिन्न देशों के हवाई जहाज़ों से आबाद हो जाता है। हिन्दुस्तान से काफ़ी तादाद में हाजी हज़रात हवाई जहाज़ों से

जाते हैं। रोज़गारी और मसरूफ़ लोगों के लिए हज की अदाएगी हवाई सर्विस से काफ़ी आसान हो गई है। कांन्सटिलेशन हवाई जहाज़ बम्बई से जद्दा कहीं रूके बिग़ैर चार पाँच घंटे में पहुंच जाते हैं। हवाई जहाज़ से सफ़र करनेमें ज़यादा से ज़्यादा कुल 35 दिन खर्च होते हैं।

जद्दा में हवाई अड्डा के नज़दीक एक मदीनतुल हुज्जाज यानी हाजियों का मुसाफिर ख़ाना तामीर किया गया है जिस में हवाई जहाज़ के हाजियों को उस समय ठहराया जाता है और ठहरने का किराया टिकट के साथ पहले ही वसूल लिया जाता है।

पहले जद्दा की बन्दरगाह बाकाइदा न थी यानी जहाज़ साहिल से दूर पानी में लन्गर अंदाज़ होते थे और हुज्जाज कश्ती में बैठ कर बन्दरगाह आते थे लेकिन अब एक शानदार और वसी गोदी बनादी गई है। तमाम जहाज़ अब उसी गोदी पर लन्गर अंदाज़ होते हैं जिस से हुज्जाज किराम को साहिल पर उतरने में बड़ी सहूलत हो गई है।

बहरी जहाज़ के हाजियों के आराम के लिए एक अलग मदीनतुलहुज्जाज तैयार किया गया है जो वसी कम्पाउन्ड में बहुत से कमरों पर मुश्तमिल है। उस में जगह-जगह पानी के नल, गुसलख़ाने और पाख़ाने बने हुए हैं। खाने पीने की चिज़ें होटलें, सिफ़ारत ख़ानों के दफातिर और बैंक नीज़ हिन्दुस्तान और दूसरे ममालिक के शिफ़ाख़ाने और एक मस्जिद मौजूद हैं उन्हें अपने कामों के लिए बाहर जाने की ज़रूरत नहीं।

जद्दा में कोई ज़ियारतगाह नहीं है शहर के बाहर हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा के नाम पर लोगों ने एक क़ब्र बना रखी है जो कई सौ हाथ लंबी है। वह बे अस्ल (बेबुनियाद) है वहाँ नहीं जाना चाहिए। (अनवारुल बुशारह, बहारे शरीअत)

जब जद्दा की गोदी पर जहाज़ लन्गर अंदाज़ होता है तो हज कमेटी के उहदेदारान बन्दरगाह पर आते हैं और लाउड स्पीकर के जरीये हाजियों को ज़रूरी हिदायात देते हैं। यह पहले बताया जा चुका है कि जद्दा में जहाज़ से सामान क्रेन और कुलियों के जरीये उतारा जाता है। उतरने से पहले आप अपने बड़े-बड़े सामान मैदान में एक जगह करके कुलियों के हवाले करदें और छोटी चीज़ें मस्लन हैन्ड बैग और बाल्टी वग़ैरा साथ ले कर उतरें। घी और तेल के डब्बे भी साथ रखें तो बेहतर है कि बसा औकात क्रेन और कुलियों की उठा पटक से टूट कर बरबाद हो जाते हैं। जहाज़ से उतरते वक़्त अपना पासपोर्ट साथ रखें। मामूली डॉक्टरी तहक़ीक़ात (जांच) के बाद हाजियों को जहाज़ से उतरने की इजाज़त दी जाती है। आप बिस्मिल्लाहि र्रहमानिर्रहीम بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर उस पाक सर ज़मीन पर क़दम रखें। सीढ़ी से उतरते ही एक बड़ी इमारत नजर आयेगी। पहले आप को उस के ऊपर वाले मंज़िला पर जाना होगा वहाँ वज़ारतुस्सेह्हा आप के टीका इनजेक्शन के सर्टीफ़ीकेट देखेगी और सऊदी एमीग्रेशन वग़ैरा से गुज़र कर नीचे आ जायें यहां पर आप का सामान फैला हुआ होगा। जहाँ सामान मिले वहीं कस्टम करा के छोड़ दें सामान को इकठ्ठा करने की फ़िक्र

न करें। जिस सामान पर कस्टम ऑफिसर निशान लगा देंगे वह सामान मदीनतुल हुज्जाज में पहुंच जाएगा। और जो सामान न मिले उसके लिए ज़्यादा परेशान न हों कि गायब हुया सामान मदीनतुल हुज्जाज में मिल जाता है।

कस्टम से फुर्सत पाकर आप मोटर की तरफ़ आ जायें जो बाहर खड़े रहते हैं कि जैसे जैसे हुज्जाज कस्टम से फुर्सत पाते जाते हैं उनको मोटरों में बैठा कर मदीनतुलहुज्जाज पहुंचा दिया जाता है।

सपष्ट (ज़ाहिर) रहे कि सामान के जहाज़ से उतारने, वहां से लारियों पर चढ़ा कर कस्टम तक लाने और फिर लारियों पर चढ़ाने और ले जाने की मज़दूरी आप को नहीं देनी है। कि यह सब ख़र्च मदीनतुल हुज्जाज तक पहुंचाने वाली बस के किराया में पहले वसूल किया जा चुका है। मदीनतुल हुज्जाज में दीवार पर जगह जगह मुअल्लिमों का नाम लिखकर उस के समाने थोड़ी थोड़ी ज़मीन हर मुअल्लिम के लिए ख़ास कर दी जाती हैं वहां पहुंच कर सबसे पहले अपने तमाम सामान अपने मुअल्लिम (गाइड) की जगह पर इकठ्ठा करके अपनी सूची से मिला लें अगर कोई चीज़ न हो तो मदीनतुल हुज्जाज के गोदाम में तलाश करें कि ग़ायब होने वाली चीज़ें वहां रखदी जाती हैं।

मतदीनतुल हुज्जाज में हज कमेटी के उहदेदारान पास-पोर्ट वग़ैरा के बारे में लाउडस्पीकर के ज़रिया ज़ुरूरी हिदायतें देते रहते हैं। उनकी हिदायत के मुताबिक़ काम करें। अब इन्शा-अल्लाह तआ़ला 24 घंटे के अन्दर बस का इन्तेज़ाम हो जाएगा

और आप बहुत जल्द मक्का शरीफ़ पहुँच जायेंगे।

जद्दा से मक्का शरीफ़:- जद्दा से मक्का शरीफ़ 45 मील यानी क़रीब 73 किलोमीटर पूरब है। जद्दा से निकलने के बाद जब मक्का शरीफ़ तक़रीबन 22 किलो मीटर रह जाता है। तो मक़ामे हुदैबिया मिलता है। यहाँ ठहर कर मकरूह वक्त न हो तो दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ें और दुआ करें। यह वही मुबारक जगह है कि जहाँ रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने हिजरत के छटे साल मदीना तय्यबा से पन्द्रह सौ जांबाज़ सहाबा के साथ उमरा की नीयत से मक्का शरीफ़ में दाख़िल होने से पहले क़याम फ़रमाया था। जहाँ हुज़ूर के पाक हाथ से इस क़दर पानी निकला कि अगर कई लाख सहाबा आप के साथ होते तो वह पानी सब के लिए काफ़ी होता। इसी जगह पर एक पेड़ के नीचे सहाबा से आप ने बैअत ली जिसे "बैअते रिज़वान" कहते हैं। जिसमें ख़ुदाए तआ़ला ने हुज़ूर के हाथ को अपना हाथ फ़रमाया। इसी जगह मुशरिकीने मक्का के साथ सुलह हुई जिस पर सूरए फ़तह उतरी इसी को सुलहे हुदैबिया कहते हैं और यहीं से हरम की सीमा शुरू हो जाती है। यहां क़रीब में दो मिनारे हरम की सीमा के निशान के तौर पर बने हुए हैं। मक्का शरीफ़ के हर तरफ़ इसी तरह की सीमायें मुक़र्रर (निश्चित) हैं। हरम की सब से क़रीब सीमा तनईम है जो मस्जिदे हराम से तक़रीबन 5 किलोमीटर है और यमन व ताइफ़ और जेअ़राना की तरफ़ तक़रीबन पचीस किलोमीटर तक हरम की हदें हैं।

जब हरम की सीमायें नज़र आयें तो लब्बइक لَبَّيْك कहें

और दाख़िल होते वक्त यह दुआ पढ़ें।

दुआ:-अल्लाहुम्म म इन्न न हाज़ा ह र मुक व हरमु रसूलि क. फ़हर्रिम लहमी व दमी व अज़मी व बशरी अलन्नारि। अल्लहुम्म म क़िनी अज़ाब क यौ म तबअसु इबा द क वजअलनी मिन औलियाइ क व अहले ता अति क व तुब अलइ य इन्न क अनतत्तव्वाबुर्रहीम।"

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا حَرَمُكَ وَ حَرَمُ رَسُوْلِكَ فَحَرِّمْ لَحْمِیْ وَ دَمِیْ وَ عَظْمِیْ وَبَشَرِیْ عَلَی النَّارِ ۔ اَللّٰهُمَّ قِنِیْ عَذَابَكَ یَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ وَ اجْعَلْنِیْ مِنْ اَوْلِیَائِكَ وَ اَهْلِ طَاعَتِكَ وَ تُبْ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ۔

अर्थ:- ऐ अल्लाह! यह तेरा और तेरे रसूल का हरम है। तो मेरा गोश्त, मेरा ख़ून, मेरी हड्डी और मेरा चमड़ा जहन्नम की आग पर हराम फ़रमा दे। ऐ अल्लाह! मुझे अपने अज़ाब से बचा जिस दिन तू अपने बंदों को उठाएगा और मुझे अपने दोस्तों और फ़रमां बरदारी करने वालों में से बना और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा। बेशक तू तौबा क़बूल करने वाला रहम फ़रमाने वाला है।

हरम की सीमाओं के अंदर हरी घास उखाड़ना, पेड़ काटना और वहाँ के जंगली जानवरों को तकलीफ़ देना हराम है। मक्का शरीफ़ में जंगली कबूतर बहुत ज़्यादा हैं हर मकान में रहते हैं। ख़बरदार! उन्हे हरगिज़ न उड़ायें न डरायें और न कोई तकलीफ़ पहुंचायें कहा जाता है कि यह कबूतर उस मुबारक जोड़े की नस्ल से हैं। जिस ने हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की हिजरत के वक़्त ग़ारे सौर में अंडे दिए थे। ख़ुदाये तआ़ला ने उस खिदमत के बदला में उन को अपने हरमे

पाक में जगह अता फ़रमाई है।

जब मक्का शरीफ़ की आबादी नज़र आये तो यह दुआ पढ़ें। "अल्लाहुम्मज्अल ली बिहा क़रारन। वर ज़ुक़नी फ़ीहा रिज़क़न हला-ल" اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِيْ بِهَا قَرَارًا ۔ وَ ارْزُقْنِيْ فِيْهَا رِزْقًا حَلَالًا

अर्थः-ऐ अल्लाह! तू मुझे इसमें क़रार व सुकून फ़रमा। और मुझे इसमें हलाल रोज़ी दे।

और मक्का शरीफ़ में दाख़िल होते वक़्त यह दुआ पढ़ें। "अल्लाहुम्‍ म अन त रब्बी व अना अबदु क वल ब ल दु ब ल दु क जेतु क हारिबम मिन क इलै क लिओअद्दी य फ़राइ ज़ क व अत लु ब रह म त क व अलतमि स रिज़वा न क अस्‍ अलु क मस्‍ अलतल मुज़तर्रीन इलइक वल खाइ फ़ी न उक़ूब त क अस्‍ अलुक अन तक़ब ल निल यौ म बिअफ़वि क तद खु लुनी फ़ी रह मति क व तजा व ज़ अन्नी बिमग़फ़ि र ति क व तुईननी अला अदा ए फ़राइज़ि क अल्लाहुम्‍ म नज्जिनी मिन अज़ा बि क वफ़त्तेहली अब वा ब रह म ति क व अदख़िलनी फ़ीहा व अइज़नी मिनश्शयतानिर्रजीम"

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ وَ اَنَا عَبْدُكَ وَ الْبَلَدُ بَلَدُكَ جِئْتُكَ هَارِبًا مِّنْكَ اِلَيْكَ لِاُؤَدِّيَ فَرَائِضَكَ وَ اَطْلُبَ رَحْمَتَكَ وَ اَلْتَمِسَ رِضْوَانَكَ ۔ اَسْئَلُكَ مَسْئَلَةَ الْمُضْطَرِّيْنَ اِلَيْكَ وَ الْخَائِفِيْنَ عُقُوْبَتَكَ اَسْئَلُكَ اَنْ تَقْبَلَنِي الْيَوْمَ بِعَفْوِكَ وَ تُدْخِلَنِيْ فِيْ رَحْمَتِكَ وَ تَجَاوَزَ عَنِّيْ بِمَغْفِرَتِكَ وَ تُعِيْنَنِيْ عَلٰى اَدَاءِ فَرَائِضِكَ اَللّٰهُمَّ نَجِّنِيْ مِنْ عَذَابِكَ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَ اَدْخِلْنِيْ فِيْهَا وَ اَعِذْنِيْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۔

JANNATI KAUN?

अर्थः- ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है और मैं तेरा बंदा हूं और यह शहर तेरा शहर है। मैं तेरे पास तेरे अज़ाब से भाग कर हाज़िर हुआ ताकि तेरे फ़राइज़ को अदा करूं और तेरी रहमत को तलब करूं और तेरी रज़ा को तलाश करूं मैं तुझ से इस तरह सवाल करता हूं जैसे मुज्तर और तेरे अज़ाब से डरने वाले सवाल करते हैं। मैं तुझ से सवाल करता हूं कि आज तू अपने अफ़्व (मुआफ़ी) के साथ मुझ को क़बूल कर और अपनी रहमत में मुझे दाख़िल फ़रमा और अपनी बख़शिश के साथ मुझ से मुआफ़ फ़रमा। और फ़राइज़ की आदाएगी पर मेरी मदद कर। ऐ अल्लाह! मुझको अपने अज़ाब से छुटकारा दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे और उसमें मुझे दाख़िल फ़रमा और शैतान मरदूद से मुझे पनाह में रख।"

JANNATI KAUN?

बस वाले मक्का शरीफ़ में आप के मुअल्लिम (गाइड) के घर आप को उतारेंगे। मुअल्लिम के ज़िम्मा एक वक़्त का खाना होता है लेकिन अभी आप इस क़िस्म के कामों में न लगें बल्कि सामान रखने के बाद सबसे पहले तवाफ़ व सई के लिए तैयार हो जायें।

तवाफ़ व सई का तरीक़ा लिखने से पहले हम मस्जिदे हराम और मताफ़ व मस्आ वग़ैरा के बारे में थोड़ी जानकारी पेश करते हैं ताकि अच्छी तरह अरकान अदा हों।

मस्जिदे हराम वगैरा का बयान

मस्जिदे हराम:- अल्लाह का घर मस्जिदे हराम के बीच में है। मस्जिदे हराम एक लंबा चौड़ा एहाता है जिस में चारों तरफ़ से लंबी चौड़ी दालान है। जो ख़ूबसूरत और मज़बूत खम्भों पर काइम हैं। दालान के बाद हर तरफ़ से खुला हुआ लंबा चौड़ा सेहन है। उस के बाद तवाफ़ करने की जगह है जिस के बीच में ख़ानए काबा की इमारत है। दालान से तवाफ़ करने की जगह तक जाने के लिए लग-भग 6 $^{1}/_{2}$ फिट चौड़ी और एक फिट ऊंची पक्की गुज़रगाहें बनी हुई हैं। और उन रास्तों के बीच में जो ख़ाली ज़मीनें हैं उन में कंकरीयाँ बिछी हैं।

दालान दो तरह के हैं एक पुरानी तामीर जो सेहन से मिली है। और एक मंज़िला है। दूसरी नई तामीर जो पुरानी तामीर से पहले है और तीन मंज़िला हैं उसका एक मंज़िल ज़मीन के अंदर है। दूसरी मंज़िल सड़क के बराबर और तीसरा ऊपर का मंज़िला, पुरानी और नई तामीर का कुल रक़बा एक लाख बीस हज़ार वर्ग मीटर है। अब मस्जिदे हराम के पूरे एहाता में पाँच लाख आदमी एक साथ में नमाज़ पढ़ सकते हैं।

नई तामीर में सात मीनारे बनाये गये हैं। हर मीनारा की ऊंचाई 92 मीटर यानी लगभग 300 फिट है।

मताफ़:- ख़ानए काबा के अगल बगल जो तवाफ़ करने की जगह है उस को मताफ़ कहते हैं। यह सफ़ेद संगे मरमर का बना हुआ है जो सूरज की गर्मी से गर्म नहीं होता। हुज़ूर सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम के ज़ाहिरी ज़माना में मस्जिदे हराम इसी क़दर थी।

बाबुस्सलामः- बाबुस्सलाम उस दरवाज़ा को कहते हैं जहाँ से नबी के ज़माने में लोग मस्जिदे हराम में दाख़िल होते थे। अब बाबुस्सलाम किसी दरवाज़े की शक्ल में नहीं है। अलबत्ता उस जगह पर संगे मरमर की काली लकीर खींच दी गई है। उमरा के तवाफ़ के लिए उसी जगह से मताफ़ में दाख़िल होना अफ़ज़ल है। मौजूदा वक़्त में बाबुस्सलाम के नाम से जो दरवाज़ा है। वह पुराने बाबुस्सलाम के सामने है।

मक़ामे इब्राहीमः- दरवाज़ए काबा के सामने एक क़ुब्बा में पत्थर रखा हुआ है उसे मक़ामे इब्राहीम कहते हैं। हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उसी पत्थर पर खड़े हो कर ख़ानए काबा की तामीर की थी जब दीवारें ऊँची होने लगीं तो हज़रते जिबरईल अलैहिस्सलाम ख़ुदाए तआ़ला के हुक्म से यह पत्थर जन्नत से लाये जैसे जैस दीवारें ऊँची होती जाती थीं यह पत्थर ऊँचा होता जाता था। इस तरह उस पत्थर पर हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मुबारक क़दम के निशान पैदा हो गये जो अब तक मौजूद हैं।

कुरआने करीम में मक़ामे इब्राहीम का ज़िक्र दो जगह आया है।

1. वत्तख़िज़ू मिम्मक़ामि इब्राही-म मुसल्ला। (पारा 1 रूकूअ़ 15)

وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى

2. फ़ीहि आयातुम बय्यिनातुम-मक़ामु इब्राहीम। (पारा 4 रुकूअ़ 1)

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ

ज़मज़मः– मक़ामे इब्राहीम से मिला हुआ दक्षिण की तरफ़ ज़मज़म का कुआँ पाया जाता है। मक़ामे इब्राहीम की तरह ज़मज़म भी मताफ़ में था। भीड़ की वजह से कुछ साल पहले उसे निचले हिस्से में ले जाया गया है। इलेक्ट्रिक के ज़रिए उस का पानी खींच कर बाहर बने हुए नलों में पहुँचाया जाता है जिससे ज़मज़म का पानी हासिल करने में बड़ी आसानी पैदा होगई है।

हदीस शरीफ़ में ज़मज़म के पानी की बड़ी फ़ज़ीलत आई है। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि ज़मज़म का पानी जिस नीयत से पिया जाये वही फ़ाइदा हासिल होता है। (इब्ने माजा) और एक दूसरी हदीस में है कि ज़मज़म का पानी ख़ूराक़ है पेट भरने के लिए और शिफ़ा है बीमारी के लिए। जैसा कि एक मिस्री डाक्टर की रिसर्च के लिहाज़ से ज़मज़म के पानी में निम्नलिखित खनिज पदार्थ पाये जाते हैं जो तरह-तरह की बीमारियों के लिए फ़ायदामन्द हैं। मैगनेशियम, सोडियम सलफेट, सोडियम क्लोराइड, कैलशियम कारबोनेट, पोटैशियम नाइट्रेट, हाइड्रोजन और गंधक।

आबे ज़मज़म के बारे में तारीख़ी वाक़ेआ यह है कि ख़ुदाए तआ़ला के हुक्म से हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी बीवी हज़रते हाजरा और अपने नन्हें बेटे हज़रते इस्माईल अलैहिस्सलाम को उस जगह पर कि जहाँ आज आबे ज़मज़म का

कुआँ है छोड़ कर चले गये खाने पीने के लिए कुछ खुजूरें और पानी दे गये उस वक़्त यहाँ कोई आबादी न थी जब पानी ख़त्म हो गया और हज़रते हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा को बहुत प्यास लगी। बदन में पानी की कमी के कारण दूध भी सूख गया। तो हज़रते इस्माईल अलैहिस्सलाम तड़प तड़प कर एड़ियाँ रगड़ने लगे। हज़रते हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा पानी की खोज में सफ़ा पहाड़ पर गईं फिर मरवा पहाड़ पर आईं और जब दोनों पहाड़ियों के बीच सात चक्कर लगाया तो आख़िरी चक्कर पर हज़रते इस्माईल अलैहिस्सलाम के पैर के नीचे पानी का चश्मा (स्रोत) उबलता हुआ देखा। हदीस शरीफ़ में है कि हज़रते जिबरील अलैहिस्सलाम ने उस जगह पहुंच कर अपनी एड़ी मारी तो पानी का चश्मा उबल पड़ा। हज़रते हाजरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा ने बेटे को पानी पिलाया और चश्मा के चारों तरफ़ मिट्टी की मेड़ बना दी। पानी ज़ोर से बह रहा था उसे देख कर हज़रते हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया ज़म-ज़म यानी ठहर ठहर। इस तरह यह कुआँ वजूद में आया और उसका नाम "ज़मज़म" पड़ गया।

कुछ दिनों के बाद यमन के क़बीलए जुरहुम का क़ाफिला जो मुल्के शाम जा रहा था पानी देख कर यहाँ रूक गया और आबाद हो गया। इस तरह मक्का शरीफ़ की पहली आबादी उस जगह हुई।

काबा शरीफ़:- ज़मीन पर सब से पहला घर काबा शरीफ़ है जैसा कि कुरआने पाक की इस आयत से ज़ाहिर है "इन न

अव्व ल बयतिंव वुज़िअ़ लिन्ना सि लल्लज़ी बिबक क त।" اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِىْ بِبَكَّةَ बेशक सब में पहला घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुआ वह है जो मक्का में है। (पारा 4 रूकूअ़ 1)

काबा शरीफ़ काले पत्थर का एक चौकोर मकान है। हज़रते आदम हलैहिस्सलाम की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले पहली बार इस की तामीर ख़ुदाए तआ़ला के हुक्म से फ़रिश्तों ने की। फिर हज़रते आदम अलैहिस्सलाम ने और तीसरी तामीर हज़रते शीस अलैहिस्सलाम ने की फिर हज़रते नूह अलैहिस्सलाम के ज़माना में तूफ़ान से इमारत गिर गई तो चौथी तामीर हज़रते इब्राहीम व इस्माईल अलैहिमस्सलाम ने की। फिर पाँचवीं व छठी तामीर उमालिक़ा और जुरहुम ने की जो अरब के दो क़बीले हज़रते नूह अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं। और सातवीं तामीर कुसई ने की जो सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की पाँचवीं पुश्त में दादा हैं। फिर आठवीं तामीर कुरैश ने की उस वक्त हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की उम्र पचीस साल थी आपने भी उस तामीर में शिरकत फ़रमाई यही वह तामीर है जिस में हज्रे असवद को अपनी जगह पर रखने के लिए कुरैश मे ऐसा झगड़ा पैदा हुआ कि हर तरफ़ से तलवारें निकल आईं। फिर यह झगड़ा इस तरह तय हुआ कि जो शख्स दूसरे दिन सुबह सब से पहले मस्जिदे हराम में दाख़िल हो वही इस इज़्ज़त का हक़दार है। अल्लाह तआला की शान कि सब से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए। मगर तनहा हक़दार होने के बावजूद आप ने हज्रे

असवद को एक चादर पर रखा और हर क़बीले के सरदार से चादर पकड़वा कर उठाने को फ़रमाया। जिस से हर क़बीले वाले ख़ुश हुए। उसके बाद हुज़ूर ने हज्रे असवद को चादर से उठा कर ख़ानए काबा में लगा दिया।

इस तामीर में कुरैश ने अह्द किया (वादा किया) था कि उसमें नाजाइज़ कमाई नहीं लगाई जाएगी जब उनके पास हलाल कमाई कम हो गई तो उन्हों ने हतीम की तरफ़ दीवार को पीछे हटा दिया इस तरह काबा शरीफ़ का कुछ हिस्सा बाहर हो गया। फिर जब सन् ६४ हिजरी में यज़ीद की फ़ौज ने हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर मक्का शरीफ़ में चढ़ाई की और मिनजनीक़ से पत्थर बरसा कर काबा शरीफ़ की दीवारों को सख़्त नक़सान पहुंचाया और उसी बीच में यज़ीद के मर जाने पर उस की फौजें वहां से वापस आ गईं तो हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने काबा शरीफ़ को गिरा कर के उसे हज़रते इब्राहीम अलैहिस्स्लाम की क़ाइम की हुई बुनियाद पर बनाया यानी हतीम को काबा शरीफ़ के अंदर दाख़िल कर लिया। यह नवीं तामीर है इसमें काबा शरीफ़ के दो दरवाज़े रखे गये एक दाख़िल होने के लिए और दूसरा उसके मुक़ाबिल (सामने) बाहर निकलने के लिए। फिर सन् 73 हिजरी में हज्जाज इब्ने यूसुफ़ ने काबा शरीफ़ को कुरैश की बुनियाद पर बनाया यानी हतीम की तरफ़ से दीवार तोड़ कर पीछे हटा दी और निकलने का दरवाज़ा बंद कर दिया। उसके बाद काबा शरीफ़ में कोई तबदीली नहीं हुई अल्बत्ता तुर्क बाद शाह सुल्तान

मुराद ने उस की मरम्मत में शानदार हिस्सा लिया और मौजूदा हुकूमत ने कुछ साल पहले दीवार व छत की मरम्मत कराई।

काबा शरीफ़ की लंबाई पूरब से पश्छिम तक 25 हाथ चौड़ाई 20 हाथ और ऊंचाई 27 हाथ है। पूर्बी दीवार में हज्रे असवद के क़रीब काबा शरीफ़ का दरवाज़ा है जो ज़मीन से लग-भग सात फिट की ऊंचाई पर है।

रूक्नः- काबा शरीफ़ के गोशा यानी कोना को रूक्न कहते हैं। दक्षिण पश्छिम का कोना जो यमन की तरफ़ है उसे "रुक्ने यमानी" कहते हैं। उत्तर पश्छिम का कोना जो मुल्के शाम की तरफ़ है उसे "रूक्ने शामी" कहते हैं उत्तर पूरब का कोना जो इराक़ की तरफ़ है उसे "रूक्ने इराक़ी" कहते हैं। और दक्षिण पूरब कोना जिस में हज्रे असवद है उसे "रुक्ने असवद" कहते हैं।

हज्रे असवदः- यह मुबारक पत्थर जन्नत के याकूतों में से एक याकूत है। जो काबा शरीफ़ की दीवार के एक कोने में ज़मीन से चार फिट के ऊपर स्थापित और अंडे की शक्ल में चाँदी के हल्क़े से घिरा हुआ है। हदीस शरीफ़ में है कि हज्रे असवद जब जन्नत से दुनिया में लाया गया तो वह दूध से ज़्यादा सफेद था। फिर आदमियों के गुनाहों की वजह से काला होगया। (अहमद, तिर्मिज़ी)

और एक दूसरी हदीस शरीफ़ में है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने क़सम खाकर इरशाद फ़रमाया कि हज्रे असवद को अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन ऐसी हालत में उठाएगा कि उसके दो आँखें होंगी जिन से वह

देखेगा और ज़बान होगी जिस से वह बोलेगा और उस शख़्स के बारे में गवाही देगा कि जिसने उस को हक़ के साथ बोसा (चूमा) दिया हो। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, दार्मी)

हतीम:- रूक्ने शामी और रूक्ने इराक़ी के बीच मदीना तय्यबा की तरफ़ क़ौस (धनुष) की शक्ल में एक जगह है जो आने जाने का रास्ता छोड़ कर संगेमरमर (मार्वल) की लगभग पांच फ़िट ऊँची दीवार से घिरी हुई है। उसके देखने से ऐसा मालूम होता है कि गोया काबा शरीफ़ की मेहराब मदीना शरीफ़ की तरफ गिर गई है। आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं।

जिस के सज्दे को मेहराबे काबा झुकी।
उन भवों की लताफ़त पे लाखों सलाम।

हदीस शरीफ़ मे है कि हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि मेरा दिल चाहता था कि मैं काबा शरीफ़ के अन्दर जाके नमाज़ पढ़ूं तो हुज़ूर ने मेरा हाथ पकड़ कर हतीम में दाख़िल कर दिया और फ़रमाया कि जब तेरा दिल काबा में दाख़िल होने को चाहे तो यहां आकर नमाज़ पढ़ लिया कर कि यह काबा ही का टुकड़ा है तेरी क़ौम ने जब काबा की तामीर की इस हिस्सा को (खर्च की कमी के कारण) काबा से बाहर कर दिया। (अबूदाऊद)

मीज़ाबे रहमत:- काबा शरीफ़ की छत में उत्तर तरफ़ एक सोने का परनाला है उसे मीज़ाबे रहमत कहते हैं। जब बारिश

होती है तो काबा शरीफ़ की छत का पानी उसी परनाला से हतीम के अंदर गिरता है। हदीस शरीफ़ में है जो मीज़ाबे रहमत के नीचे दुआ करे उस की दुआ क़बूल होती है। (दुर्रे मनसूर)

मुलतज़मः- हजरे असवद काबा शरीफ़ के दरवाज़े के बीच जो दीवार का हिस्सा है उसे मुलतज़म कहते हैं। मुलतज़म के माना हैं लिपटने की जगह यहाँ पर लोग लिपट लिपट कर दुआयें करते हैं। शायद इसी वजह से इसका नाम मुलतज़म पड़ा। हदीस शरीफ़ में है कि मुलतज़म ऐसी जगह है जहाँ दुआ क़बूल होती है। किसी बंदा ने वहां ऐसी दुआ नहीं की जो क़बूल न हुई हो। (हिस्ने हसीन)

मुस्तजाबः- रुक्ने यमानी और रूक्ने असवद के बीच दक्षिणी दीवार को मुस्तजाब कहते हैं। यहाँ सत्तर हज़ार फरिश्ते दुआ पर आमीन कहने के लिए मुक़र्रर हैं इसलिए उसका नाम मुस्तजाब रखा गया।

सफ़ाः- काबा शरीफ़ के दक्षिण पूरब कोने पर एक छोटी पहाड़ी है जहाँ से सई शुरू की जाती है।

मरवाः- काबा शरीफ़ के उत्तर पूरब कोने पर एक दूसरी छोटी पहाड़ी है जहाँ सई ख़त्म की जाती है। सफ़ा व मरवा के बीच लगभग दो फरलाँग का लंबा रास्ता है जो संगेमरमर के खम्भों और दीवारों पर दो मंज़िला बनाया गया है। और ज़मीन पर भी संगेमरमर बिछाया गया है जिस से हाजियों को सई में बड़ी आसानी हो गई है।

मीलैन अख़ज़रैनः- सफ़ा व मरवा के बीच जितनी जगह में

मर्द को दौड़ना सुन्नत है उसके दोनों किनारों पर हाजियों की जानकारी के लिए संगेमरमर के दो हरे खम्भे दायें बायें लगा दिए गये हैं। उसी को मीलैन अख़ज़रैन कहते हैं।

मस्आ:- सफ़ा और मरवा के बीच सई करने की जगह को मस्आ़ कहते हैं।

ऊपर लिखी हुई बातों को ख़ूब दिमाग़ में बैठा लीजिए ताकि तवाफ़ व सई वग़ैरा सही तौर पर अदा हों।

मस्जिदे हराम में दाख़िला और तवाफ़

वुज़ू करने के बाद मस्जिदे हराम की तरफ़ चलें। पहली बार साथ में मुअल्लिम (गाइड) या उसके किसी नुमाइन्दा का होना ज़रूरी है इसलिए कि किताबों से तवाफ़ वगैरा का तरीक़ा मालूम हो जाने के बावजूद अकेले जाने से एक नहीं कई ग़लतियों के होने का अंदेशा है।

रास्ता में निहायत अदब के साथ लब्बइक لَبَّيْك कहते हुए जायें। मस्जिदे हराम में पहले दाहिना पैर रख कर दाख़िल हों और यह दुआ पढ़ें।

दुआ:- "अऊज़ू बिल्लाहिल अ़जीमि व बिवजहि हिल करीमि व सुलतानि हिल क़दीमि मिनश्शयतानिर्रजीम। बिस्मिल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि वस्स्लामु अ़ला रसूलिल्लाहि। अल्लाहुम्म सल्ले अ़ला सय्यदिना मुहम्मदिंव व अ़ला आलि सय्यदिना मुहममदिंव व अज़वाजि सय्यदिना मुहम्मदिन। अल्लहुम्मग़फ़िरली ज़ुनूबी वफ़तहली

अबवाब रहमतिक"

اَعُوذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَ بِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَ سُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔
بِسْمِ اللّٰهِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اَزْوَاجِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ ۔ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ۔

अर्थः- मैं खुदाए अज़ीम, उसके वजहे करीम और उसकी सल्तनते क़दीम की पनाह मांगता हूँ शैताने मरदूद से। अल्लाह के नाम की मदद से सब ख़ूबियाँ अल्लाह के लिए हैं। और हुज़ूर पर सलाम हो। ऐ अल्लाह् दुरूद भेज हमारे आक़ा मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) पर और उनकी आल व अज़वाज पर। या अल्लाह! मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।" यह दुआ ख़ूब याद रखें जब कभी मस्जिदे हराम या और किसी मस्जिद में दाख़िल हों तो पढ़ लिया करें और जब काबा शरीफ़ पर नज़र पड़े तो यह दुआ पढ़ें।

दुआः- लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु अल्लाहुम् म ज़िद बयत-क हाज़ा तशरीफ़ौं व तअज़ीमौं व तकरीमौं व महाबतौं व ज़िद मन शर्रफ़हू व अज़्ज़महू व कर्रमहू मिम्मन हज्जहू अवेअ़तमरहु तशरीफ़ौं व तअज़ीमौं व तकरी-म। अल्लाहुम् म अनतस्सलामु व मिन कस्सलामु व इलयक यरजिउस्सलामु फ़हय्यिना रब्बना बिस्सलामु व अदख़िलना दारस्सलामि तबारक-त रब्बना व तआलै-त या ज़लजलालि वलइकरामि।"

اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ لَااِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ لَااِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُمَّ
زِدْ بَيْتَكَ هٰذَا تَشْرِيْفًا وَّ تَعْظِيْمًا وَّ تَكْرِيْمًا وَّ مَهَابَةً وَ زِدْ مَنْ شَرَّفَهُ وَ عَظَّمَهُ وَ
كَرَّمَهُ مِمَّنْ حَجَّهُ اَوِاعْتَمَرَهُ تَشْرِيْفًا وَّ تَعْظِيْمًا وَّ تَكْرِيْمًا ۔ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَ
مِنْكَ السَّلَامُ وَ اِلَيْكَ يَرْجِعُ السَّلَامُ فَحَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَ اَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ
تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَ تَعَالَيْتَ يَاذَاالْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ ۔

अर्थ:- अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूद नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है। अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूद नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूद नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है। ऐ अल्लाह! तू अपने घर की इज़्ज़त व अज़मत और करामत व हैबत बढ़ा दे और जो उसका हज या उमरा अदा करे उसे भी इज़्ज़त व आबरू में तरक्की दे ऐ अल्लाह! तू सलाम है और तुझी से सलामती है और तेरी तरफ़ सलामती लौटती है। तो ऐ हमारे परवरदिगार हम को सलामती के साथ ज़िन्दा रख। और हमें दारूस्सलाम(जन्नत में)दाख़िल कर, ऐ हमारे परदरदिगार तू बुलन्द व बाला है। ऐ जलाल व बुज़ुर्गी वाले।"

इसके इलावा अपने अज़ीज़ों रिश्तेदारों और तमाम मोमिन मर्दों, औरतों के लिए दुआये ख़ैर करें कि यह क़बूल होने की घड़ी है। दुआ करते हुए और लब्बइक لَبَّيْكَ पढ़ते हुए जब पुराने बाबुस्सलाम पर पहुँचे तो सुन्नत के मुताबिक़ दाहिना क़दम मताफ़ में रख कर दाख़िल हों और यह दुआ पढ़ें।

"रब्बिदख़िलनी मुदख़-ल सिदक़िव व अख़रिजनी मुख़्र-ज सिदक़िंव

वजअलली मिल्ल्दुन-क सुलतानन नसीरा"

رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَ اَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِیْرًا۔

अर्थः- ऐ मेरे रब! मुझे सच्ची तरह दाख़िल कर और सच्ची तरह बाहर निकाल। और मुझे अपनी तरफ़ से मददगार ग़लबा दे।

इज़्तेबाअः- मताफ़ में दाख़िल होने के बाद इज़्तिबाअ् कर लें यानी एहराम की चादर को दाहिनी बग़ल के नीचे से निकाल कर दाहिना मोंढ़ा खोल दें और उसके दोनों किनारों को बायें मोंढे पर डाल लें। फिर काबा शरीफ़ की तरफ़ मुंह करके हज्रे असवद की दाहिनी तरफ़ रूक्ने यमानी की तरफ़ संगे असवद के क़रीब इस तरह खड़े हों कि पूरा पत्थर अपने दाहिने हाथ को रहे। अब लब्बइक لَبَّیْكَ बंद कर दें और हाथ उठाए बिग़ैर तवाफ़ की नीयत इस तरह करें।

"अल्लाहुम्म इन्नी उरीदु तवा-फ़ बयतिकल हरामि फ़यस्सिरहु ली व तक़ब्बलहु मिन्नी"

اِنِّیْ اُرِیْدُ طَوَافَ بَیْتِكَ الْحَرَامِ فَیَسِّرْهُ لِیْ وَ تَقَبَّلْهُ مِنِّیْ۔

अर्थः- ऐ अल्लाह! मैं तेरे इज्ज़त वाले घर का तवाफ़ करना चाहता हूँ उसको मेरे लिए आसान कर और उसको मेरी तरफ़ से क़बूल फ़रमा।

नीयत करने के बाद काबा शरीफ की तरफ़ मुंह किये हुए दाहिनी तरफ़ चलें जब हज्रे असवद के सामने हो जायें (और यह

बात मामूली हरकत में हासिल हो जाएगी) तो कानों तक दोनों हाथ इस तरह उठायें कि हथेलियां हज्रे असवद की तरफ़ रहें और यह दुआ पढ़ें "बिस्मिल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि वल्लाहु अकबरु वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि"।

بِسْمِ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ ۰ وَ الصَّلَاةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ

अर्थः- अल्लाह के नाम की मदद से। सब ख़ूबियां अल्लाह के लिए हैं और अल्लाह बहुत बड़ा है। और दुरूद व सलाम हो अल्लाह के रसूल पर"

और अगर हो सके तो हज्रे असवद को इस तरह चूमें कि होंटों से आवाज़ न पैदा हो। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने उसे चूमा है बड़ी ख़ुशनसीबी है कि आप का मुंह भी वहाँ तक पहुँचे। लेकिन अगर भीड़ हो और दूसरों को तकलीफ़ पहुँचने का अंदेशा हो तो दोनों हाथ या सिर्फ़ दाहिना हाथ हज्रे असवद पर रख कर चूम लें और हाथ न पहुंचे तो लकड़ी से छू कर उसे चूम लें और अगर यह भी नामुमकिन हो तो दूर ही से हथेलियों को हज्रे असवद की तरफ़ करके उन को चूम लें।

हज्रे असवद को हाथ या लकड़ी वग़ैरा से छू कर चूमने या हथेलियों को हज्रे असवद की तरफ़ करके उनको चूम लेने का नाम "इस्तेलाम" है। इस्तेलाम से फ़ुर्सत पाकर तवाफ शुरू करें। चूंकि यह उमरा का तवाफ़ है इसलिए इस में इज़्तेबाअ़ के साथ रमल भी सुन्नत है। इज़्तेबाअ़ का बयान अभी ऊपर हो चुका है और रमल यह है कि जल्द जल्द छोटा क़दम रखता हुआ

और कंधा हिलाता हुआ चले जैसे कि ताक़तवर और बहादुर लोग चलते हैं मगर कूदे नहीं और न दौड़े। (अनवारूल बशारह)

हज्रे असवद से लेकर हज्रे असवद तक एक चक्कर होता है और इस तरह सात चक्कर का पूरा एक तवाफ़ होता है। तवाफ़ के पहले तीन चक्कर में रमल करना सुन्नत है अलबत्ता इज़तेबाअ़ पूरे तवाफ़ में सुन्नत है। तवाफ़ ख़त्म करने के बाद चादर से दोनों कंधे ढांक लें कंधे खोले हुए नमाज़ न पढ़ें कि मकरूह है। (बहारे शरीअत)

नोटः- औरतों के लिए रमल व इज़तेबाअ़ नहीं है जब मुलतज़म के सामने आयें तो यह दुआ पढ़ें।

दुआः- अल्लाहुम्म हाज़ल बयतु बयतु-क वलहरमु हरमु-क वल अमनु अमनु-क व हाज़ा मक़ामुल आज़ि-न बि-क मिनन्नारि फ़-अजिरनी मिनन्नारि। अल्लाहुम्म क़न्नेअ्नी बिमा र ज़क़ तनी व बारिकली फ़ीहि वख़्लुफ़ अ़ला कुल्लि ग़ाइबतिन बिख़ैरिन। लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहु लाशरी क लहू। लहुलमुल्कु व लहुलहम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शयइन क़दीर।

اَللّٰهُمَّ هٰذَا الْبَيْتُ بَيْتُكَ وَ الْحَرَمُ حَرَمُكَ وَ الْاَمْنُ اَمْنُكَ وَ هٰذَا مَقَامُ الْعَائِذِ بِكَ مِنَ النَّارِ فَاَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ ۔ اَللّٰهُمَّ قَنِّعْنِیْ بِمَا رَزَقْتَنِیْ وَ بَارِكْ لِیْ فِیْهِ وَ اخْلُفْ عَلٰی كُلِّ غَائِبَةٍ بِخَیْرٍ ۔ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ ۔ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۔

अर्थः- ऐ अल्लाह! यह घर तेरा घर है और हरम तेरा हरम है।

और अमन तेरा अमन है। और जहन्म से तेरी पनाह मांगने वालों की यह जगह है तो मुझको जहन्नम से पनाह दे या अललाह जो तूने मुझे दिया मुझे उस पर क़ानेअ़ (संतुष्ट) कर दे और मेरे लिए उस में बरकत दे और हर ग़ाइब पर ख़ैर के साथ तू ख़लीफ़ा हो जा। अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं जो अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। उसके लिए मुल्क है। उसी के लिए हम्द है। और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

और जब रूक्ने एराक़ी के सामने पहुँचें तो यह दुआ पढ़ें

दुआः- अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनश्शक्कि वश्शिरकि वश्शिक़ाकि वन्निफ़ाकि व सूइल अख़्लाकि व सूइल मुनक़लबि फ़िल मालि वल अहलि वलवलदि।

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَعُوذُبِكَ مِنَ الشَّكِّ وَ الشِّرْكِ وَ الشِّقَاقِ وَ النِّفَاقِ وَ سُوْءِ الْاَخْلَاقِ وَ سُوءِ الْمُنْقَلَبِ فِیْ الْمَالِ وَ الاهلِ وَ الْوَلَدِ۔

अर्थः- ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ। शक, शिर्क, इख़्तिलाफ़ निफ़ाक़ और बुरे अख़्लाक़ से और माल व अहल और औलाद में वापस होकर बुरी बात देखने से"

और जब मीज़ाबे रहमत के सामने आयें तों यह दुआ पढ़ें।

दुआः- अल्लाहुम्म अज़्जिल्लनी तह-त ज़िल्लि अरशि-क यौम लाज़िल्ल इलला ज़िल्लु-क वला बाक़ीय इलला वजहु-क वसक़िनी मिन हौज़ि नबीय-क मुहम्मदिन सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम शरबतन हनीअ़तन ला अज़मओ बअ़दहा अ-बदा।

اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِیْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَاظِلَّ اِلَّا ظِلُّكَ وَ لَا بَاقِیَ اِلَّا وَجْهُكَ وَ

اَسْقِنِیْ مِنْ حَوْضِ نَبِیِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ شَرْبَةً هَنِیْئَةً لَا اَظْمَأُ بَعْدَهَا اَبَدًا.

अर्थः- ऐ अल्लाह! तू मुझको अपने अर्श के साया में रख। जिस दिन तेरे साया के इलावा कोई साया नहीं। और तेरी ज़ात के सिवा कोई बाक़ी नहीं और अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के हौज़ से मुझे खुशगवार पानी पिला कि उस के बाद कभी प्यास न लगे।"

और जब रूक्ने शामी के सामने पहुँचें तो यह दुआ पढ़ें।

दुआः- अल्लाहुम्मजअल्हु हज्जम्मबरूरन। व सअ्यम्मशकूरन। व ज़म्बम्मगफ़ुरन। वतिजारतल्लनतबूर। या आलि-म माफ़िस्सुदूरि अख़रिजनी मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَبْرُوْرًا ۰ وَ سَعْیًا مَشْكُوْرًا ۰ وَ ذَنْبًا مَّغْفُوْرًا ۰ وَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ۰ یَا عَالِمَ مَا فِی الصُّدُوْرِ اَخْرِجْنِیْ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ

अर्थः- ऐ अल्लाह! तू हज को मबरूर कर, सई मशकूर कर, गुनाह को बख़्श दे और उसको वह तिजारत कर दे जो हलाक न हो। ऐ सीनों की बातें जानने वाले। मुझे अंधेरियों से रौशनी की तरफ़ निकाल"

और जब रूक्ने यमानी के पास आयें तो उसे दोनों हाथों या दाहिने हाथ से बरकत के लिए छुयें। सिर्फ बायें हाथ से न छुयें और चाहें तो उस का बोसा भी लें और न हो सके तो यहाँ लकड़ी से न छूयें और न इशारा करके हाथ चूमें। और इस मक़ाम पर यह दुआ पढ़ें।

दुआः- अल्लाहुम्म इन्नी असअलुकलअफ़्व वलआफ़िय-त फ़िद्दीनि वद्दुनया वल आख़िरति।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ الۡعَفۡوَ وَ الۡعَافِيَةَ فِیۡ الدِّيۡنِ وَ الدُّنۡيَا وَ الۡاٰخِرَةِ

अर्थः- ऐ अल्लाह! मैं तुझसे अफ़्व और आफ़ियत माँगता हूँ। दीन व दुनिया और आख़िरत में।"

जब रूक्ने यमानी से आगे बढ़ेंगे तो यह मुस्तजाब है जहाँ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दुआ पर आमीन कहने के लिए मुक़र्रर हैं। इस मक़ाम पर यह दुआ पढ़ते हुए आगे बढ़ें।

दुआः-रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया हसनतौं व फ़िल आख़िरति हसनतौं व क़िना अजाबन्नारि। व अदख़िलनल जन्न-त मअ्ल अबरारि। या अज़ीजु या ग़फ़्फ़ारु। या रब्बल आलमीन।"

رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنۡيَا حَسَنَةً وَّ فِی الۡاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ۰ وَ اَدۡخِلۡنَا الۡجَنَّةَ مَعَ الۡاَبۡرَارِ ۰ يَا عَزِيۡزُ يَا غَفَّارُ ۰ يَا رَبَّ الۡعَالَمِيۡنَ ۰

आर्थः- ऐ हमारे रब! हमें दीन व दुनिया में भलाई और बेहतरी अता फ़रमा। और हम को जहन्नम की आग से बचा। और हमें जन्नत में नेक लोगों के साथ दाख़िल फ़रमा। ऐ गालिब! ऐ मग़फ़िरत फ़रमाने वाले! ऐ तमाम आलम के परवरदिगार"।

अब चारों तरफ़ घूम कर हज्रे असवद के पास पहुँचने पर एक फेरा पूरा हुआ उस वक़्त हज्रे असवद का इस्तेलाम करें यानी बोसा लें (चूमें) अगर यह मुम्किन न हो तो हाथ या लकड़ी से छूकर उसे चूम लें और यह भी न हो सके तो हथेलियों को हज्रे असवद की तरफ़ करके उनको चूम लें और इसी तरह हर

फेरे के ख़त्म पर करें। जब सात फेरे पूरे हो जाये तों आख़िर में फिर हज्रे असवद का इस्तेलाम करें।"

जो दुआयें ऊपर लिखी गई हैं। उन्हें हर चक्कर में पढ़ें और कुछ किताबों में जो सातों चक्कर की दुआयें अलग अलग लिखी हैं उन्हें भी पढ़ सकते हैं कि यहाँ किसी ख़ास दुआ का पढ़ना जुरूरी नहीं है। बल्कि आप जो दुआ चाहें पढ़ सकते हैं और जो लोग दुआ न पढ़ सकें या उनको समझ न सकें तो उनके लिए बेहतर यह है कि अपनी मुरादें और हाजतें अपनी ही ज़बान में मांगें मगर जो कुछ मांगें हुज़ूरे क़ल्ब, और ख़ुशूअ़, व खुजूअ के साथ मांगें और तमाम दुआओं से बेहतर व अफ़ज़ल यह है कि हर मौक़ा पर दुरूद शरीफ़ पढ़ें कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसललम ने फ़रमाया कि ऐसा होतो वह तुम्हारे सारे कामों के लिए काफ़ी होगा और तुम्हारा गुनाह मुआ़फ कर दिया जाएगा (तिर्मिज़ी) तवाफ़ में दुआ़ या दुरूद शरीफ़ पढ़ने के लिए रूकें नहीं बल्कि चलते हुए पढ़ें और चिल्ला चिल्ला कर न पढ़ें जैसे कि तवाफ़ कराने वाले पढ़ाया करते हैं। कि मकरूह है बल्कि इस क़दर आहिस्ता पढ़ें कि सिर्फ़ अपने कान तक आवाज़ पहुंचे।

नोटः- तवाफ़ की हालत में नमाज़ियों के आगे से गुज़र सकता है कि तवाफ़ भी नमाज़ की मिस्ल है। (रद्दुल मुहतार)

ना-महरम औरतों को घूरना और उनकी तरफ़ बुरी निगाह डालना हमेशा हराम है। और काबा शरीफ़ के सामने तवाफ़ की हालत में तो अल्लाह तआ़ला की सख़्त नाराज़गी का

कारण है हज़रते मूसा इब्ने मुहम्मद रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि एक अजमी शख़्स तवाफ़ कर रहा था उसी हालत में एक ख़ूबसूरत औरत के पाज़ेब की आवाज़ उसके कान में पड़ी यह शख्स उस औरत को घूरने लगा तो रूक्ने यमानी से एक हाथ निकला और इस ज़ोर से उसको तामाँचा मारा कि उस की आँख बाहर निकल गई और काबा शरीफ़ की दीवार से एक आवाज़ आई की यह तमाँचा तेरी बुरी नज़र का बदला है। अगर आइनदा फिर कोई ऐसी हरकत करेगा तो हम इस से ज़्यादा बदला देंगे। (मुसामिरात)

तवाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहीम के पास आकर आयते करीमा "वत्तख़िज़ू मिम्मकामि इब्राही-म मुसल्ला" وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ اِبْرَاهِيْمَ مُصَلًّى पढ़ें फिर उसके पीछे दो रकअत नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़ पढ़ें। हदीस शरीफ़ में है जो शख़्स मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज़ पढ़े उसके अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।

वाजिबुत्तवाफ़ की नीयत यह है। नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़ वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा तरफ़ काबा शरीफ़ के अल्लाहु अकबर। पहली रकअत में "सूरए फ़ातिहा" के बाद "कुलया अय्युहल काफ़िरून" और दूसरी रकअत में "कुलहु वल्लाहु" पढ़ना बेहतर है।

नोटः- मकरूह वक़्तों में कभी वजिबुत्तवाफ़ न पढ़ें यानी अगर सुबहे सादिक़ तुलूअ़ होने के बाद तवाफ़ किया चाहे फ़ज्र की नमाज़ से पहले या बाद तो बीस मिनट सूरज निकलने के बाद

वाजिबुत्तवाफ़ पढ़ें और दोपहर में तवाफ़ किया तो सूरज ढलने के बाद पढ़ें और अस्र की नमाज़ के बाद तवाफ़ किया हो तो सूरज डूबने के बाद पढ़ें और जब भी पढ़ी जाये अदा ही है। क़ज़ा नहीं। (रद्दुल मुहतार, आलमगीरी, बहारे शरीअ़त)

इस नमाज़ के लिए मक़ामे इब्राहीम के बाद सबसे अफ़ज़ल जगह काबा शरीफ़ का अंदरूनी हिस्सा है। फिर हतीम में मीज़ाबे रहमत के नीचे, फिर हतीम में किसी और जगह, फिर काबा शरीफ़ से ज़्यादा क़रीब की जगह, फिर मस्जिदे हराम में किसी जगह, फिर हरमे मक्का के अंदर जहाँ भी हो। (रद्दुल मुहतार)

नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद यह दुआ पढ़ें कि हदीस शरीफ़ में इस दुआ की बड़ी फ़ज़ीलत आई है।

दुआः- अल्लाहुम्म इन्न क तअ़लमु सिर्री व अ़लानियती फ़क़बल मअ़ज़िरती व तअ़लमु हाजती फ़आ़तिनी सुअ़ूली व तअ़लमू माफ़ी नफ़सी फ़ग़फ़िरली ज़ुनूबी। अल्लाहुम्म इन्नी अरअ़लू-क ईमानैं युबाशिरु क़लबी व यक़ीनन सादिक़न हत्ता आल-म अन्नहू ला युसीबुनी इल्ला मा क-त-ब-ली व रिज़न बिमा क़सम-त ली या अरहमर्राहिमीन+

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّیْ وَ عَلَانِيَتِیْ فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِیْ وَ تَعْلَمُ حَاجَتِیْ فَاَعْطِنِیْ سُؤْلِیْ وَ تَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ ذَنْوبِیْ ۔ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا يُبَاشِرُ قَلْبِیْ وَ يَقِيْنًا صَادِقًا حَتّٰی اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَا يُصِيْبُنِیْ اِلَّا مَاكَتَبْتَ لِیْ وَ رِضًا بِمَا قَسَمْتَ لِیْ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

अर्थः- ऐ अल्लाह! तू मेरे छूपे हूए और ज़ाहिर को जानता है तू मेरी मअ़ज़रत क़बूल फ़रमा और तू मेरी हांजत को जानता है। तू मेरा सवाल मुझको अता फ़रमा और जो कुछ मेरे नफ़्स में है तू उसे जानता है। तो मेरे गुनाहों को बख़्श दे। या अल्लाह! मैं तुझसे उस ईमान का सवाल करता हूँ जो मेरे दिल में असर कर जाये और सच्चा यक़ीन मांगता हूँ ताकि मै जान लूँ कि मुझे वही पहुँचेगा जो तूने मेरी क़िस्मत में लिखा है उसपर राज़ी रहूँ ऐ सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान।

नमाज़ व दुआ से फुर्सत पाकर मुलतज़म के पास जायें और हज्रे असवद के क़रीब उससे लिपटें। अपना सीना और पेट और कभी दाहिना गाल कभी बायाँ गाल और कभी पेशानी उसपर रखें और दोनों हाथ सर से ऊँचे करके दीवार पर फैलायें या अपना दाहिना हाथ काबा शरीफ़ के दरवाज़ा और बायाँ हज्रे असवद की तरफ़ फैलाये हुए निहायत आजिज़ी और इनकेसारी के साथ जो दुआ चाहें मांगें और दुरूद शरीफ़ भी पढ़ें। इस मक़ाम की एक दुआ यह भी है।

दुआः- इलाही वक़फ़तु बिबाबि-क वल तज़मतु बिआताबि-क अरजू रहमत-क व अख़्शा अज़ाब-क। अल्लाहुम्म हर्रिम शअ्री व जसदी अलन्नारि। अल्लाहुम्म या रब्बल बयतिल अतीकि। अअ़तिक़ रिक़ाबना व रिक़ाब आबाएना व उम्महातिना व इख़वानिना व औलादिना मिनन्नारि। या करीमु या ग़फ़्फ़ारु। या अज़ीजु या जब्बारु। रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्न-क अनतससमीउल अलीम। व तुब अलैना इन्न-क अनतत्तव्वाबुर्रहीम"

اِلٰهِیْ وَقَفْتُ بِبَابِكَ وَ الْتَزَمْتُ بِاَعْتَابِكَ اَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَ اَخْشٰى عَذَابَكَ ۔ اَللّٰهُمَّ حَرِّمْ شَعْرِیْ وَ جَسَدِیْ عَلَى النَّارِ ۔ اَللّٰهُمَّ یَا رَبَّ الْبَیْتِ الْعَتِیْقِ ۔ اَعْتِقْ رِقَابَنَا وَ رِقَابَ اٰبَائِنَا وَ اُمَّهَاتِنَا وَ اِخْوَانِنَا وَ اَوْلَادِنَا مِنَ النَّارِ ۔ یَا كَرِیْمُ یَا غَفَّارُ یَا عَزِیْزُ یَا جَبَّارُ ۔ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ۔ وَ تُبْ عَلَیْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ

अर्थ:– ऐ मेरे परवरदिगार मैं तेरे दरवाज़े पर खड़ा हूँ और तेरे आस्ताने से लिपटा हूँ तेरी रहमत का उम्मीदवार और तेरे ग़ज़ब से डरता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरे बाल और जिस्म को जहन्नम पर हराम कर दे। ऐ अल्लाह! ऐ पूराने घर के मालिक। तू हमारी गर्दनों को हमारे बाप दादा और हमारी मांओं की गर्दनों को और हमारे भाइयों और हमारे लड़कों की गर्दनों को जहननम से आज़ाद करदे। ऐ करीम! ऐ बख़्शने वाले! ऐ ग़ालिब ऐ जब्बार! ऐ रब! तू हमसे क़बूल फ़रमा। बेशक तू सुनने वाला जानने वाला है। और हमारी तौबा क़बूल कर। बेशक तू तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।

नोटः- मुलतज़म के पास नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़ के बाद आने का हुक्म उस तवाफ़ में है जिसके बाद सई है। और जिस के बाद सई न हो उसमें पहले मुलतज़म से लिपटे फिर मक़ामे इब्राहीम के पास जाकर दो रकअत नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़ पढ़ें। (मुनसिक, बहारे शरीअत)

मुलतज़म से फारिग़ होकर आबे-ज़मज़म पीने के लिए

आयें तीन सांसों में पेट भर कर जितना पिया जाये खड़े होकर पियें। हर बार "बिस्मिल्लाह" से शुरू करें और "अलहम्दु लिल्लाहि" पर खत्म करें। और बरकत के लिए सर, मुंह और बदन पर डाल कर उससे मसह करें और पीते वक़्त जो चाहें दूआ करें कि क़बूल होती है। उस वक़्त की एक दुआ यह है।
दुआः- अल्लाहुम्म इननी अस्अलु-क इल्मन नाफ़िऔं व रिज़कौं वासिऔं व शिफ़ाअम मिन कुल्लि दाइन।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَ رِزْقًا وَاسِعًا وَ شِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ۔

अर्थः- ऐ अल्लाह! मैं तुझसे फ़ाइदा पहुँचाने वाला, इल्म, कुशादा रोज़ी, और हर बिमारी से शिफ़ा का सुवाल करता हुँ।

और मक्का शरीफ़ में रहने तक तो कई बार पीना नसीब होगा तो हर बार ख़ास ख़ास मुरादों के लिए पियें।

सई सफ़ा व मरवा

तवाफ़ और नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़ वग़ैरा से फ़ारिग़ होने के वाद सफ़ा व मरवा के बीच सई करने के लिए फिर हज्रे असवद का बोसा दें और दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए सफ़ा की तरफ़ बाबुस्सफ़ा से निकलें की मुस्तहब है और अगर दूसरे रास्ता से जायें जब भी सई अदा हो जाएगी। दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए सफ़ा पर चढ़ें मगर बहुत ऊपर चढ़ने की जरूरत नहीं कि यह बदमज़हबों और जाहिलों का काम है। सिर्फ़ इतना चढ़ना काफ़ी है की अगर दीवारें बीच में न होतीं तो कावा शरीफ़ नज़र आता

सफ़ा पर चढ़ने के बाद यह दुआ पढ़ें।

दुआः- अबदओ बिमा ब दअल्लाहु बिही इन्नस्सफ़ा वल मरव-त मिन शआएरिल्लाहि फ़मन हज्जल बै-त अवेअ्त-म-र फ़लाजुना-ह अलैहि एँयत्तव्व-फ़ा बिहिमा व मन ततव्व-अ़ ख़ैरन फ़इन्नल्ला-ह शाकिरुन अलीम।

اَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللّٰهُ بِهٖ اِنَّ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا وَ مَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ.

अर्थः- मैं उस से शरू करता हूँ जिसको ख़ुदाए तआ़ला ने पहले ज़िक्र फ़रमाया। बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं। तो जिसने हज या उमरा किया उस पर उनके तवाफ़ में कोई गुनाह नहीं। और जो शख्स नेक काम करे तो बेशक अल्लाह बदला देने वाला जानने वाला है।

फिर काबा शरीफ़ की तरफ़ मुँह करके दोनों हाथ कंधों तक दुआ की तरह फैले हूए उठायें और जितनी देर में मुफ़स्सल की एक सूरत पढ़ी जा सके उतनी देर ठहर कर ज़िक्र और दुरूद शरीफ़ में लगे रहें। अपने और अपने घर वालों और दूसरे मुसलमानों के लिए दुआए ख़ैर करें कि यह दुआ क़बूल होने की जगह है।

दुआ में हथेलियाँ आसमान की तरफ़ फ़ैलायें। काबा श्रीफ़ की तरफ़ न करें जैसा कि कुछ जाहिल करते हैं। और

अक्सर तवाफ़ करने वाले कानों तक हाथ उठाते हैं फिर छोड़ देते हैं। इसी तरह तीन बार करते हैं यह भी ग़लत है बल्कि एक बार दुआ के लिए हाथ उठायें और जब तक दुआ मांगें उठाये रहें और जब ख़त्म हो जाये तो हाथ छोड़ दें। इसके बाद सई की नीयत इस तरह करें।

"अल्लाहुम्म इन्नी उरीदुस्सअ़य बैनस्सफ़ा वल मरवति फ़यस्सिरहुली व तक़ब्बलहु मिन्नी"

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اُرِيْدُ السَّعْيَ بَيْنَ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ فَيَسِّرْهُ لِيْ وَ تَقَبَّلْهُ مِنِّيْ

अर्थ:- ऐ अल्लाह! मैं सफ़ा व मरवा के बीच सई का इरादा करता हूँ तो उसको मेरे लिए आसान करदे और उसको मेरी तरफ़ से क़बूल फ़रमा।

फिर सफ़ा से उतर कर मरवा की तरफ़ चलें ज़िक्र और दुरूद शरीफ़ बराबर जारी रखें। जब पहला हरा खम्भा आये आहिस्ता चाल से दौड़ कर चलें यहाँ तक कि दूसरे हरे खम्भे से निकल जायें। अगर हो सके तो हरे खम्भों के बीच दौड़ते हुए यह दुआ पढ़ें।

दुआ:- रब्बिग़फ़िर वरहम व तजावज़ अम्मा तअ़लमु व तअ़लमु माला नअ़लमु इन्न-क अनतल अअ़ज़्ज़ुल अकरम।

رَبِّ اغْفِرْ وَ ارْحَمْ تَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ وَ تَعْلَمُ مَالَا نَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ.

अर्थ:- ऐ परवरदिगार! बख़्श दे रहम फ़रमा और मुआफ़ कर उसे जिसे तू जानता है और तू उसे जानता है जिसे हम नहीं जानते बेशक तू करम व इज़्ज़त वाला है।"

दूसरे हरे खम्भे से निकल कर आहिस्ता चलें और मरवा तक पहुँचें। यहाँ भी ज़्यादा ऊपर चढ़ने की ज़रूरत नहीं और बीच में इमारतें बन जाने के कारण यहाँ से भी काबा शरीफ़ नज़र नहीं आता मगर उसकी तरफ़ मुंह करके दोनों हाथ कंधों तक दुआ की तरह फैलाये हुए जैसे सफ़ा पर ज़िक्र और दुआ किया था यहाँ भी करें। सफ़ा से मरवा तक यह एक फेरा हुआ। फिर मरवा से उतर कर ज़िक्र, दुरूद शरीफ़ और दुआयें पढ़ते हुए सफ़ा की तरफ़ मामूली चाल चलें और पहले की तरह हरे खम्भों के बीच फिर दौड़ें इसके बाद आहिस्ता चलें यहाँ तक कि सफ़ा पर पहुँच जायें यह दूसरा फेरा हुआ। फिर इसी तरह मरवा की तरफ आयें और सफ़ा की तरफ़ जायें यहाँ तक कि सातवाँ फेरा मरवा पर ख़त्म करें।

नोटः- सई में इज़तेबाअ़ नहीं है और औरतों को दौड़ने का हुक्म नहीं है। कुछ औरतें निहायत बेबाकी से सई करती हैं कि लोगों के सामने उनकी कलाईयाँ और गला खुला रहता है। यह हराम है। और कुछ तो हज्रे असवद को चूमने के लिए मर्दो में घुस जाती हैं। उनका बदन मर्दो के बदन से छूता रहता है और वह औरतें सवाब के बदले गुनाह मोल लेती हैं। इसलिए जिन हाजियों के साथ औरतें हों उन्हे ख़ास कर ऐसी हरकतों से औरतों को मना करना चाहिए।

माज़ूर का तवाफ़ और सई

जो लोग बीमारी या बुढ़ापे वग़ैरा की वजह से तवाफ़ व

सई नहीं कर सकते उन को तवाफ़ कराने के लिए शबरियाँ यानी छपरी खटोले और सई करने के लिए कुर्सी गाड़ियाँ किराये पर मिलती हैं। उनका किराया तय नहीं हाजियों की मांग के लिहाज़ से कम ज़्यादा हुआ करती हैं। मजबूर लोग तवाफ़ व सई में शबरियों और कुर्सियों से फाइदा उठा सकते हैं।

इख़तेतामे उमरा और हजामत

तवाफ़ व सई का नाम उमरा है मुतमत्तेअ् यानी वह हाजी कि जिसने सिर्फ़ उमरा की नीयत से एहराम बांधा था और क़ारिन यानी जिसने हज और उमरा दोनों की नीयत से एहराम बांधा था तवाफ़ व सई से फ़ारिग़ होने के बाद उन दोनों का उमरा पूरा हो गया। और मुफ़रिद यानी जिसने सिर्फ़ हज की नीयत से एहराम बांधा था अगर उसने रमल व इज़तेबाअ् के साथ तवाफ़ किया है और उसके बाद सई की है तो अब उसके लिए तवाफ़े ज़ियारत में सई नहीं कि उसके हक़ में यह तवाफ़ तवाफ़े कुदूम है।

मुतमत्तेअ् तवाफ़ व सई से फुर्सत पाने के बाद सर के बाल मुंडाले या कतरवा ले और तमत्तुअ् करने वाली औरतें पूरे सर के बाल उंगली के पोर के बराबर कतर लें। किसी ना-महरम के हाथ से हरगिज़ न कतरवायें। उसके बाद मर्द व औरत दोनों के लिए एहराम की वजह से जो चीज़ें हराम थीं वह अब हलाल हो गईं। और मुफ़रिद व क़ारिन तवाफ़ व सई से फुर्सत पाने के बाद न बाल बनवायें और न एहराम खोलें। यह दोनों दसवीं

ज़िलहिज्जा को एहराम से निकलेंगे। अलबत्ता क़ारिन उसके बाद तवाफ़े कुदूम की नीयत से एक तवाफ़ व सई और कर ले।

अब तीनों क़िस्म के हाजी जब तक मक्का शरीफ़ में रहें जितना कि हो सके इज़तेबाअ् और रमल और सई के बेग़ैर नफ़्ल तवाफ़ करते रहें कि बाहर वालों के लिए यह सबसे बेहतर इबादत है। और नफ़्ल तवाफ़ ख़त्म होने पर मुलतज़म से लिपटने के बाद दो रकअ़त नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़ पढ़ें और औरतों के लिए बेहतर यह है कि रात के दस ग्यारह बजे भीड़ कम हो जाये तो तवाफ़ के लिए जायें और नमाज़ें अपनी ठहरने की जगह ही पर पढ़ें। जो औरतें कि मस्जिदे हराम और मस्जिदे नबवी में जमाअत के साथ नमाज़ें पढ़ती हैं यह उनकी जेहालत है कि मुराद सवाब है। और ख़ुद हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औरत को मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से ज़्यादा सवाब घर में पढ़ना है। (बहारे शरीअत) अलबत्ता मक्का श्रीफ़ में रोज़ाना कम से कम एक बार रात में तवाफ़ कर लिया करें और मदीना शरीफ़ में सुबह व शाम सलात व सलाम के लिए हाज़िर होती रहें।

नोटः- अगर हज व उमरा और तवाफ़ व ज़ियारत वग़ैरा अपने किसी काम का सवाब दूसरे लोगों को बख़्श दें तो जाइज़ है। चाहे वह ज़िन्दा हों या मुर्दा फ़तावा आलमगीरी जिल्द 1 मिस्री पेज 240 में है।

अर्थः- अपने काम नमाज़, रोज़ा, सदक़ा, हज क़ेराअ्ते कुर्आन व ज़िक्रों का सवाब। और अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम,

शुहदाए इस्लाम, औलियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन की क़ब्रों की ज़्यारत का सवाब और मुर्दों की तजहीज़ व तकफ़ीन वग़ैरा हर क़िस्म की नेकियों का सवाब दूसरे को बख़्शना जाइज़ है।

और बहरूर्राइक जिल्द 3 पेज 59 में है।

अर्थः- मुर्दा और ज़िन्दा को सवाब बख़्शने में कोई फ़र्क़ नहीं।"

दुआओं के कबूल होने की ख़ास जगहें

काबा शरीफ़ के अंदर, मीज़ाबे रहमत के नीचे, हतीम, तवाफ़ करते वक्त मताफ़ में, मक़ामे इब्राहीम के पीछे, मुलतज़म, काबा शरीफ़ के दरवाज़ा के सामने, हज्रे असवद के पास, हज्रे असवद और रूक्ने यमानी के बीच, ज़मज़म के पास, सफ़ा और मरवा पर सई करते वक्त मीलैन अख़ज़रैन यानी दो हरे खम्भों के बीच अरफ़ात, मुज़दलफ़ा, मिना और जमरात के पास। यह सब दुआओं के क़बूल होने की ख़ास जगहें हैं। यहाँ निहायत आजिज़ी के साथ दुआ माँगनी चाहिए।

दुआ क़बूल होने की तीन सूरतें

हदीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि दुआ क़बूल होने की तीन सूरतें हैं।

1. कभी दुआ इस तरह क़बूल हो जाती है कि बंदा जो दुनिया में चाहता है वही हो जाता है।

2- कभी इस तरह क़बूल होती है कि बंदा पर दुनिया में आने

वाली मुसीबत दुआ के बराबर उससे दूर कर दी जाती है।
3. और कभी इस तरह क़बूल होती है कि उस के बदले आख़िरत में दर्जा बुलंद कर दिया जाता है। (तफ़सीर कबीर)

हज के पाँच दिन

पहला दिन ——— 8 ज़िलहिज्जा

मुतमत्तेअ् यानी जिसने उमरा अदा करने के बाद एहराम खोल दिया था आठवीं ज़िलहिज्जा को ग़ुस्ल करे। अगर ग़ुस्ल न कर सके तो वुज़ू करके पहले की तरह एहराम बांधे यानी एक चादर बदन पर डालले और दूसरी लुंगी के तौर पर बांध ले और मस्जिदे हराम में किसी जगह दो रकअ़त नमाज़ एहराम की नीयत से पढ़े और सलाम फेरने के बाद सर से चादर हटा कर नीयत इस तरह करे।

नीयतः– "अल्लाहुम-म इन्नी उरीदुल हज्ज फ़यस्सिरहु ली व तक़ब्बलहु मिन्नी"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ الْحَجَّ فَیَسِّرْهُ لِیْ وَ تَقَبَّلْهُ مِنِّیْ ۔

तरजमाः– ऐ अल्लाह! मैं हज की नीयत करता हूँ तो उसे मेरे लिए आसान कर दे और उसे मेरी तरफ़ से क़बूल फ़रमा।

इसके बाद तीन बार ऊँची आवाज़ से लब्बइक لبیک कह कर दुआ मांगे। अब हज का एहराम बंध गया और वह सारी पाबंदियाँ जो उमरा के एहराम के वक़्त थीं लौट आईं। एहराम के बाद काबा शरीफ़ का एक नफ़्ल तवाफ़, रमल, व इज़तेबाअ् के

साथ करे। और आज ही तवाफ़े ज़ियारत की सई भी कर ले अगरचे बेहतर यह है कि जब मिना से तवाफ़े ज़ियारत के लिए आये तब उस की सई करे लेकिन हाजियों की आसानी के लिए पहले भी जाइज़ है और क़ारिन व मुफ़रिद जो हालते एहराम में हैं और तवाफ़े कुदूम में तवाफ़े ज़ियारत की सई से फुर्सत पा चुके हैं उन्हें शुरू से एहराम बांधने या दोबारा तवाफ़े ज़ियारत की सई करने की ज़रूरत नहीं।

औरतों के हज का एहराम

औरतें अगर हालते नापाकी में न हों तो पहले की तरह एहराम बांध कर हज की नीयत करें और जो औरतें कि नापाकी की हालत में हों गुस्ल या सिर्फ़ वुज़ू करें और अपनी ठहरने की जगह पर ही हज की नीयत से एहराम बांध लें और तवाफ़े ज़ियारत की सई हज के बाद तवाफ़े ज़ियारत के साथ ही करें। और ज़ुहर से पहले मिना में पहुँच जाना चाहिए कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला हलैहि वसल्लम ने अरफ़ात जाने से पहले मिना में पाँच नमाज़ें अदा फ़रमाई हैं।

मिना की तरफ़ रवानगी:- मिना की तरफ़ जाने के लिए मोटर और वहां ठहरने के लिए ख़ेमे के किराये मुअल्लिमीन ज़िलहिज्जा के शुरू ही में हाजियों से वसूल करना शुरू कर देते हैं। मक्का शरीफ़ से मिना तक़रीबन 5 किलो मीटर है और मिना से अरफ़ात लगभग 9 किलो मीटर है और उन दोनों के बीच 5 किलो मीटर पर मुज़दलफा है। मोटर से जाने में पाँच दिन खाने

पकाने के सामान और बिस्तर वग़ैरा ले जाने में ज़रूर आसानी रहती है लेकिन मोटर आम तौर से वक़्त पर नहीं पहुँचते। बल्कि उससे आने जाने में अक्सर लोगों की नमाज़ें भी क़ज़ा हो जाती हैं इस लिए अगर ताक़त हो तो बेहतर है कि पैदल जायें कि वक़्त पर पहुँच जायेंगे और मक्का शरीफ़ में लौट कर आने तक हर क़दम पर सात करोड़ नेकियाँ लिखी जायेंगी। यह नेकियाँ लग-भग अठहत्तर खरब और चालीस अरब होती हैं यह अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल है जो प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के सद्क़े में इस उम्मत को मिला है।

मिना जाते हुए रास्ता भर लब्बइक, दुरूद शरीफ़ और दुआ की ज़्यादती करें दुनिया की बातों में न लगें और जब मिना नज़र आये तो यह दुआ पढ़े।

JANNATI KAUN?

दुआ़:- अल्लाहुम्म हाज़ी मिनन फ़मनुन अलय्य बिमा मनन-त बिही अला औलियाइ-क।

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ مِنًى فَامْنُنْ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ بِهٖ عَلٰى اَوْلِيَائِكَ

तरजमा:-ऐ अल्लाह! यह मिना है तो तू मुझ पर वह एहसान फ़रमा जो तूने अपने दोस्तों पर एहसान फ़रमाया है।

मिना में रात भर ठहरें और आज ज़ुहर से नवीं की सुबह तक पाँच नमाज़ें यहीं पढ़ें। कुछ लोग आठवीं को मिना में नहीं ठहरते और सीधे अरफ़ात पहुँच जाते हैं उनकी पैरवी में इतनी बड़ी सुन्नत हरगिज़ न छोड़ें। मिना की यह नवीं रात बेहद मुबारक रात है। इसे नष्ट न करें पूरी रात ज़िक्र व इबादत में

गुज़ारें। बैहक़ी और तिबरानी की हदीस में है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स अरफ़ा की रात में एक हज़ार बार यह दुआ पढ़े तो जो कुछ अल्लाह तआ़ला से मांगे पाए गा।

दुआ़:- सुब्हानल्लजी फ़िस्समाए अरशुहू। सुब्हानल्लज़ी फ़िलअरज़ि मौतिओहु। सुब्हानल्लज़ी फ़िल बहरि सबीलुहू। सुब्हानल्लज़ी फ़िन्नारि सुलतानुहू। सुब्हानल्लज़ी फिल जन्नति रहमतुहू। सुब्हानल्लजी फ़िल क़बरि क़ज़ाउहू। सुब्हानल्लजी फ़िल हवाए रूहुहू। सुब्हानल्लजी रफ़अस्समाआ। सुब्हानल्लजी वज़अलअर-ज़। सुब्हानल्लजी ला मलज अ वला मनज अ मिनहु इल्ला इलैहि।

سُبْحَانَ الَّذِیْ فِی السَّمَاءِ عَرْشُهٗ سُبْحَانَ الَّذِیْ فِیْ الْاَرْضِ مَوْطِئُهٗ سُبْحَانَ الَّذِیْ فِیْ الْبَحْرِ سَبِیْلُهٗ سُبْحَانَ الَّذِیْ فِی النَّارِ سُلْطَانُهٗ سُبْحَانَ الَّذِیْ فِی الْجَنَّةِ رَحْمَتُهٗ سُبْحَانَ الَّذِیْ فِی الْقَبْرِ قَضَائُهٗ سُبْحَانَ الَّذِیْ فِی الْهَوَاءِ رُوْحُهٗ سُبْحَانَ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمَاءَ سُبْحَانَ الَّذِیْ وَضَعَ الْاَرْضَ سُبْحَانَ الَّذِیْ لَا مَلْجَأَ وَ لَا مَنْجَأَ مِنْهُ اِلَّا اِلَیْهِ۔

अर्थ:- पाक है वह कि जिसका अर्श बुलंदी में है। पाक है वह कि जिसकी हुकूमत ज़मीन में है। पाक है वह कि दरीया में उसका रास्ता है। पाक है वह कि आग में उसकी सल्तनत है। पाक है वह कि जन्नत में उसकी रहमत है। पाक है वह कि क़ब्र में उसका हुक्म है। पाक है वह कि हवा में जो रूहें हैं उसकी

मिल्क (संपत्ति) में है। पाक है वह कि जिसने आसमान को बुलंद किया पाक है वह कि जिसने ज़मीन को पस्त किया। पाक है वह कि उसके अज़ाब से पनाह व नजात (छुटकारा) की कोई जगह नहीं मगर उसी की तरफ़"

दूसरा दिन ——————— 9 ज़िलहिज्जा

सुबह मुस्तहब वक्त फ़ज्र की नमाज़ पढ़ कर लब्बइक ज़िक्र ओर दुरूद शरीफ़ में लगे रहें। जब धूप जबले सबीर पर आ जाये जो मस्जिदे खैफ़ के सामने है तो नाश्ता वग़ैरा से छुट्टी पाकर अरफात की तरफ़ रवाना हो जायें और ज़ुहर से पहले वहाँ पहुँचने की कोशिश करें सिर्फ अरफ़ात में कुछ मुअल्लिम (गाइड) दोपहर के खाने का इन्तेज़ाम करते हैं और वह भी सब नहीं करते इस लिए साथ में दो वक़्त का खाना लेना ज़रूरी है ताकि अरफ़ात व मुज़दलफ़ा में काम आये और इबादत में खलल न पड़े। अरफ़ात की तरफ़ जाते हुए रास्ता में बिला ज़रूरत किसी से बात न करें लब्बइक, لبیك दुआ और दुरूद शरीफ़ की कसरत करें।

अरफ़ात:- अरफ़ात एक बड़े मैदान का नाम है जिस का इहाता लग-भग बीस वर्ग किलोमीटर है। यही वह मुबारक मक़ाम है कि जहाँ सन् १० हिजरी में अरफ़ा के दिन इस्लाम मुकम्मल हुआ यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आख़िरी हज के मौक़ा पर जबकि आप एक लाख चौदह हज़ार या एक लाख चौबीस हज़ार सहाबा की बड़ी जमाअत के साथ अरफात के

मैदान में तशरीफ़ फ़रमा थे उस वक़्त यह आयते करीमा नाज़िल (उतरी) हुई।

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ۔

आयत:- अल यौ म अकमलतु लकुम दीनकुम व अतमम्तु अलैकुम नेअ्मती व रज़ीतु लकुमुल इस्ला-म दीनन।

अर्थ:- आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हरा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ्मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसंद किया"

और यही अरफ़ात वह मुबारक जगह है कि जहाँ आज नवीं ज़िलहिज्जा को ज़वाल के बाद से दसवीं की सुबह के पहले तक किसी वक़्त हाज़िर होना चाहे एक ही घड़ी के लिए क्यों न हो। हज का अह्म फ़र्ज़ है कि अगर यह छूट जाये तो उस साल हज अदा होने की कोई सूरत ही नहीं। यानी कुर्बानी वग़ैरा का कफ़्फ़ारा भी उस का बदल नहीं हो सकता।

जब जबले रहमत पर निगाह पड़े जो मैदाने अरफ़ात में है तो दुआ करें कि मक़बूल होने का वक़्त है। अरफ़ात पहुँच कर आप जहाँ चाहें ठहर सकते है मगर जबले रहमत के पास ठहरना अफ़ज़ल (बेहतर) है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उस जगह ठहराव किया था लेकिन अगर वहाँ ठहरने की जगह न हो या आप ने ख़ेमा का किराया दिया है और मुअल्लिम ने ख़ेमा दूसरी जगह लगाया तो दूसरी जगह ठहरने में भी हर्ज नहीं।

दोपहर तक ताक़त के मुताबिक़ सद्क़ा व खैरात, ज़िक्र व लब्बइक, दुआ व इस्तिग़फ़ार और कलमए तौ़हीद पढ़ने में लगे रहें। तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि सब में बेहतर चीज़ जो आज के दिन मैं ने और मुझ से पहले नबियों ने कही वह यह है।

"लाइला-ह इल्लल्लाहु वहदहु लाशरी-क-लहु लहुलमुल्कु व लहुल हम्दु युहई व युमीतु व हु व हय्युल्ला यमूतु बियदिहिलख़ैर। व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर।"

لَآاِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ يُحْيِ وَ يُمِيْتُ وَ هُوَ حَيٌّ لَايَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ ، وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ،

अर्थ:- अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। उसी के लिए बादशाहत है और उसी के लिए तारीफ़ है। वही जिन्दगी देता है और वही मौत देता है और वह ज़िन्दा है कभी नहीं मरेगा। उसी के हाथ में हर क़िस्म की भलाई है। और वह सब कुछ कर सकता है।

और दोपहर से पहले खाने पीने और दूसरे ज़रूरी कामों से फ़ारिग़ हो जायें और जिस तरह आज के दिन हाजी को रोज़ा रखना मकरूह है। इसी तरह पेट भर खाना भी मुनासिब नहीं कि सुस्ती का करण होगा।

वुक़ूफ़े अरफ़ा:- वुक़ूफ़ अरफ़ा का तरीक़ा यह है कि दोपहर के क़रीब ग़ुस्ल करें कि सुन्नत है और ग़ुस्ल न कर सकें तो वुज़ू

करें फिर दोपहर ढलते ही मस्जिदे नमरा में जायें जो अरफ़ात के क़रीब है। वहाँ ज़ुहर व अस्र की नमाज़ ज़ुहर के वक़्त में मिला कर पढ़ें और फिर मैदाने अरफ़ात में दाख़िल हो जायें। लेकिन मस्जिदे नमरा की हाज़िरी आसान नहीं इसलिए कि ख़ेमा से निकलने के बाद आठ दस लाख आदंमियों की भीड़ में फिर अपने साथियों तक पहुँचना बहुत मुश्किल बल्कि कुछ हालतों में नामुमकिन हो जाता है। इस तरह हाजी गुम हो जाता है जिससे वह और उसके तमाम साथी परेशान होते हैं और अरफ़ात की हाज़िरी का मुबारक वक़्त दुआ व इस्तिग़फ़ार के बजाय उलझनों में गुज़र जाता है इलावा इसके मस्जिदे नमरा का नजदी इमाम मुक़ीम होने के बावजूद नमाज़ें क़स्र पढ़ता है। ऐसे इमाम के पीछे सुन्नी हनफ़ी की नमाज़ नहीं होगी इसलिए ज़ुहर की नमाज़ अपने ख़ेमे ही में पढ़ें और ख़ेमा में पढ़ने की सूरत में ज़ुहर की नमाज़ ज़ुहर के वक़्त में और अस्र की नमाज़ अस्र के वक़्त में पढ़ें। चाहे तनहा पढ़ें या अपनी ख़ास जमाअत के साथ (अनवारूलबुशारह, बहारे शरीअत)

नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद दुआओं में मश्ग़ूल हो जायें। दुरूद शरीफ़ और इस्तिग़रफ़ार पढ़ें, अपने और अपने घर वालों और तमाम मोमिनीन व मोमिनात के लिए निहायत आजिज़ी व इनकेसारी के साथ दुआ करें। और इस किताब के मुरत्तिब नाचीज़ **जलालुद्दीन अहमद अमजदी** और उसकें वालिदैन व धर वालों को भी अपनी दुआओं में याद रखें कि खुदाए तआला उनकी बख़्शिश फ़रमाये।

बैहक़ी शरीफ़ की हदीस है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो मुसलमान अरफ़ा के दिन ज़वाल के बाद वुकूफ़ (ठहराव) करे फिर एक सौ बार कहे "लाइला ह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरी क लहु लहुलमुल्कु व लहुलहम्दु युहई व युमीतु। व हु व अला कुल्ले शयइन क़दीर।

لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ · وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ·

और एक सौ बार पूरी सूरए इख़्लास यानी "कुल हुवल्लाह" पढ़े और फिर एक सौ बार यह दुरूद शरीफ़ पढ़े "अल्लाहुम्म सल्ले अला मुहम्मदिन कमा सल्लय-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद। व अलैना मअहुम।"

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ ·

तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ऐ मेरे फ़रिश्तो मेरे इस बंदे को क्या सवाब दिया जाये जिसने मेरी तस्बीह़ व तहलील की और ताज़ीम व तकबीर की मुझे पहचाना और मेरी सना (त़ारीफ) की और मेरे नबी पर दुरूद भेजा। ऐ फ़रिश्तो! गवाह़ रहा कि मैंने इसे बख़्श दिया और इसकी शफ़ाअत खुद इसके हक़ में क़बूल की। और अगर मेरा यह बंदा मुझसे सवाल करे तो मैं इसकी शफ़ाअत तमाम अरफ़ात वालों के लिए क़बूल करूँगा।

गर्ज़े कि आज खुदाए तआ़ला की बेइन्तेहा नवाज़िशों और बेहद रहमतों की बारिश का दिन है । आज जिस क़दर दुआ माँग सकें दिल खोल कर माँगें इस्तिग़फ़ार, दुरूद शरीफ़ और लब्बइक भी पढ़ते रहें जब सूरज डूबने में आधा धंटा बाक़ी रह जाये तो मुज़दलफ़ा जाने के लिए मोटर पर सवार हो जायें अगर्चे सूरज डूबने से पहले किसी भी मोटर को अरफ़ात से बाहर नहीं निकलने दिया जाता कि निकलने वालों पर कफ़्फ़ारे की कुर्बानी ज़रूरी हो जाएगी लेकिन मग़रिब से पहले ही सड़कों पर हज़ारों मोटरें क़तार में लग जाती हैं और सूरज डूबने के बाद ही फ़ौरन उनकी रवानगी शुरू हो जाती है।

मुज़दलफ़ा की रवानगी:- सूरज डूबने के बाद मग़रिब की नमाज़ पढ़े बग़ैर मुज़दलफ़ा की तरफ़ रवाना हो जायें और रास्ता भर ज़िक्र दुरूद शरीफ़, दुआ और लब्बइक पढ़ते रहें और जब मुज़दलफ़ा में दाखिल हों तो यह दुआ पढ़ें।

दुआ:- अल्लाहुम्म हर्रिम लहमी व अज़मी व शहमी व शअ्री व साइ-र जवारिही अलन्नारि। या अरहमर्राहिमीन।

اَللّٰهُمَّ حَرِّمْ لَحْمِیْ وَ عَظْمِیْ وَ شَحْمِیْ وَ شَعْرِیْ وَ سَائِرَ جَوَارِحِیْ عَلَی النَّارِ ۔ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ ۔

अर्थ:- ऐ अल्लाह! मेरे गोश्त, हड्डी, चर्बी, बाल और तमाम जिस्म के हिस्सें को जहन्नम पर हराम कर दे। ऐ सब मेहर बानों से ज़्यादा मेहरबान।

मुज़दलफ़ा पहुँच कर पहले मगरिब और इशा की नमाज़ इशा के वक़्त में एक साथ पढ़ें अगर मुज़दलफ़ा पहुँचने के बाद मग़रिब का वक़्त बाक़ी रहे तो अभी मग़रिब की नमाज़ हरगिज़ न पढ़ें कि गुनाह है। अगर किसी ने पढ़ ली तो इशा के वक़्त में फिर पढ़नी पड़ेगी। यहाँ जमा बैनस्सलातैन इस तरह है कि अज़ान व इक़ामत के बाद मग़रिब की फ़र्ज़ अदा की नीयत से पढ़ें उसके फ़ौरन बाद बेग़ैर इक़ामत इशा की फ़र्ज़ पढ़ें फिर मग़रिब की सुन्नत फिर इशा की सुन्नत और फिर उसके बाद वित्र पढ़ें। यहाँ दोनों नमाज़ों को एक साथ पढ़ने के लिए मस्जिद या इमाम की कोई शर्त नहीं। आप अकेले पढ़ें या जमाअत से हर हाल में दोनों नमाज़ इशा के वक़्त में एक साथ पढ़नी होगी।

मुज़दलफ़ा में पूरी रात गुज़ारना सुन्नते मुअक्किदा है और ठहरने का अस्ली वक़्त सुबहे सादिक़ से लेकर उजाला होने तक है। इसलिए जो उस वक़्त के बाद मुज़दलफ़ा पहुँचेगा तो वुक़ूफ़ (ठहराव) अदा न होगा और कफ़्फ़ारा की कुर्बानी ज़रूरी होगी। इसी तरह जो शख़्स सुबहे सादिक़ तुलूअ होने से पहले मुज़दलफ़ा छोड़ कर चला गया उस पर भी कफ़्फ़ारा की कुर्बानी ज़रूरी है। हाँ कमज़ोर औरत या बीमार भीड़ में तकलीफ़ पहुँचने के अंदेशा से सुबहे सादिक़ तुलूअ़ होने से पहले ही चला गया तो उसपर कुछ नहीं (आलमगीरी, बहारे शरीअत)

मुज़दलफ़ा की जगह बहुत मुबारक और यह रात बहुत बेहतर है इसलिए नमाज़ के बाद दूसरी ज़रूरतों से फ़ुर्सत पाकर

बाक़ी रात लब्बइक, ज़िक्र, और दुरूद शरीफ़ पढ़ने में गुज़ारना बेहतर है और दिल चाहे तो थोड़ा आराम भी करलें ताकि थकावट दूर हो जाये।

शैतान को मारने के लिए इसी जगह से चने बराबर कंकरियाँ चुन कर धोलें। अगर तेरहवीं ज़िलहिज्जा तक कंकरी मारनी है तो सत्तर (70) कंकरियों की ज़रूरत पड़ेगी और बारह तक मारनी है तो छियालीस (46) की।

मुज़दलफ़ा में सुबहे सादिक़ होते ही तोप दाग़ी जाती है उसका मक़सद यह होता है कि लोग होशियार हो जायें कि वुकूफ़ (ठहराव) का ज़रूरी वक़्त अब शुरू हो गया।

तीसरा दिन ——— 10 ज़िलहिज्जा

JANNATI KAUN?

तोप की आवाज़ के बाद फ़ज्र की नमाज़ पढ़ें उससे पहले जाइज़ नहीं फिर मशअरूल हराम में यानी ख़ास पहाड़ी पर और यह न हो सके तो उसके नीचे और यह भी न हो सके तो वादिए महसर की जहाँ अस्हाबे फ़ील पर अज़ाब नाज़िल हुआ था इसके इलावा जहाँ जगह मिले वुकूफ़ करें यानी ठहर कर लब्बइक, दुआ और दुरूद शरीफ़ पढ़ने में लगे रहें।

मिना की तरफ़ वापसी:- जब सूरज निकलने में दो रकअत पढ़ने का वक़्त बाक़ी रह जाये तो मिना की तरफ़ रवाना हो जायें। अगर सूरज निकलने के बाद रवाना हों तो बुरा है मगर दम वाजिब नहीं। जब मिना दिखाई दे तो वहीं दुआ पढ़ें जो

मक्का शरीफ़ से आते हुए मिना देख कर पढ़ी थी यानी "अल्लाहुम्म हाज़ी मिनन फ़मनुन अलय्य बिमा मनन-त बिही अला औलियाइक"

اَللّٰهُمَّ هٰذِى مِنًى فَامْنُنْ عَلَىَّ بِمَا مَنَنْتَ بِهٖ عَلٰى اَوْلِيَائِكَ ۔

मिना पहुँच कर पहले कंकरी मारनी है। कंकरी मारना हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यादगार है। हदीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फ़रमाया कि जब हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम मनासिके हज अदा करने के लिए आये तो जमरए उकबा के पास शैतान सामने आया आपने उसे सात कंकरी मारी यहाँ तक कि ज़मीन में धंस गया फिर जमरए वुस्ता के पास सामने आया फिर आपने उसे सात कंकरी मारी यहाँ तक कि ज़मीन में धंस गया और फिर तीसरे जमरा के पास आया तो उसे सात कंकरी मारी यहाँ तक कि ज़मीन में धंस गया। (इब्ने खुज़ैमा व हाकिम)

उन तीनों जगहों पर खम्भे बना दिए गये हैं और आज कल उनके ऊपर पुल की तरह बहुत चौड़ी छत बन गई है जिससे ऊपर नीचे दोनों जगह से कंकरी मारने में बड़ी आसानी हो गई है। मक्का शरीफ़ की तरफ़ से आते हुए जो पहले पड़ता है वह जमरए कुबरा है जिसको आज कल आम तौर पर बड़ा शैतान कहा जाता है। फिर जो बीचमें है वह जमरए वुस्ता और जो मस्जिदे ख़ैफ़ की तरफ़ है वह जमरए ऊला है।

कंकरी मारने का वक़्त:- आज 10 ज़िलहिज्जा को सिर्फ बड़े शैतान को कंकरी मारनी है। छोटे और बीच के शैतानों को

आज ककरी नहीं मारनी है। उसका वक़्त आज दस्वीं की सुबह से ग्यारहवीं की सुब्हे सादिक़ तक है। लेकिन सूरज निकलने के बाद से ज़वाल तक कंकरी मारना सुन्नत है। ज़वाल के बाद से सूरज डूबने तक मारना जाइज़ है। और सूरज डूबने के बाद से सुब्हे सादिक़ तक मकरूह है। लेकिन कमज़ोर और बीमार लोग। औरतें हों या मर्द अगर दिन में कंकरी न मार सकें तो रात में मारें। अगर भीड़ या थकावट वग़ैरा की वजह से किसी तन्दुरुस्त मर्द या औरत की तरफ़ से कोई वकील या नायब बन कर कंकरी मारे तो उसकी तरफ़ से अदा न होगी और ऐसा करने से कफ़्फ़ारा की कुर्बानी ज़रूरी होगी। हाँ अगर इतना बीमार हो कि जमरा तक सवारी पर भी न जा सकता हो वह दुसरे को कंकरी मारने का वकील बनाये तो इस सूरत में कफ़्फ़ारा ज़रूरी न होगा।

JANNATI KAUN?

नोटः- जो लोग रात में कंकरी मारेंगे उनकी तरफ़ से दूसरे दिन कुर्बानी होगी फिर बाल बनवाने के बाद उनका एहराम खुलेगा तो अगर क़ारिन या मुतमत्तेअ् ने कंकरी मारने से पहले कुर्बानी की तो दम ज़रूरी होगा। यानी कुर्बानी का क़फ़्फ़ारा देना पड़ेगा और अगर कंकरी मारने से पहले कुर्बानी की और बाल भी बनवाया तो दो दम ज़रूरी होगा। एक कुर्बानी के कारण और एक बाल बनवाने की वजह से।

कंकरी मारने का तरीक़ाः- कंकरी मारने का मुस्तहब तरीक़ा यह है कि जमरा से लगभग पाँच हाथ के फ़ासला पर इस तरह खड़े हों कि काबा शरीफ़ बायें हाथ की तरफ़ हो और मिना

दाहिनी तरफ़ और मुंह जमरा की तरफ़। एक कंकरी अंगूठे और शहादत की उंगली से पकड़ें और ख़ूब अच्छी तरह हाथ उठाएं कि बगल की रंगत ज़ाहिर हो और यह दुआ पढ़ कर मारें।

दुआ:–बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबरु रग़मन लिश्शैत़ानि व रिज़न लिर्रहमानि। अल्लाहुम्मज अलहु हज्जम्मबरूरौं व सअ्यम्मशकुरन। व-ज़म्बम मग़फूरा।

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ رَغْمًا لِلشَّيْطَانِ وَ رِضًا لِلرَّحْمٰنِ ۔ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَبْرُوْرًا وَ سَعْيًا مَشْكُوْرًا ۔ وَ ذَنْبًا مَغْفُوْرًا

अर्थ:– अल्लाह के नाम से । अल्लाह बहुत बड़ा है। शैतान को ज़लील करने के लिए और अल्लाह की रज़ा के लिए। ऐ अल्लाह! इसको हज्जें मबरूर कर। सईए मशकूर कर और गुनाह बख़्श दे।

इस तरह सात कंकरी एक एक कर के मारें। सातों को एक साथ हरगिज़ न मारें और कंकरियाँ जमरा तक पहुँचें तो बेहतर है वर्ना तीन हाथ की दूरी पर गिरें जो कंकरी उससे ज़्यादा दूर गिरेगी उसकी गिनती न होगी। अगर भीड़ की वजह से ऊपर के बताए हुए मुस्तहब तरीक़ा पर कंकरी न मार सकें तो जिस तरह भी खड़े हो कर आसानी से मार सकें मारें और पहली कंरी से लब्बइक لبیک बंद कर दें फिर जब सात पूरी हो जायें तो वहाँ न ठहरें ज़िक्र व दुआ करते हुए फौरन पलट आयें।

(अनवारूल बुशारा, बहारे शरीअत)

क़ुर्बानी और बाल बनवाना:- यहाँ बक़रईद की नमाज़ नहीं पढ़ी जाएगी कंकरी मारने से फ़ुर्सत पाकर हज के शुक्राना की क़ुर्बानी की जाएगी। यह क़ुर्बानी हर क़ारिन और मुतमत्तेअ् मर्द व औरत पर ज़रूरी है अगर्चे ग़रीब हों और मुफ़रिद के लिए मुस्तहब है यानी अगर करे तो बहुत ज़्यादा सवाब है और न करे तो कोई पकड़ नहीं अगर्चे मालदार हों छोटे बड़े जानवर की उम्र वग़ैरा में वही शर्तें हैं जो बक़रईद की क़ुर्बानी में हैं। और हज की क़ुर्बानी में भी ऊँट और बड़े जानवरों में सात आदमी शरीक हो सकते हैं। क़ारिन और मुतमत्तेअ् अगर मुहताज हों यानी उनके पास इतना नक़द नहीं कि वह जानवर ख़रीद सकें और न ऐसा सामान है कि उसे बेच कर ला सकें तो उनपर क़ुर्बानी के बदले दस रोज़े ज़रूरी होंगे तीन तो हज के महीनों में यानी 1 शव्वाल से नवीं ज़िलहिज्जा तक हज का एहराम बांधने के बाद जब चाहें रखें और बेहतर यह है कि 7,8,9 ज़िलहिज्जा को रखें और बाक़ी सात रोज़े तेरहवीं ज़िलहिज्जा के बाद जब चाहें रखें और बेहतर यह है कि घर पहुँच कर रखें (बहारे शरीअत)

क़ारिन या मुतमत्तेअ् अगर मुक़ीम के हुक्म में है और साहिबे निसाब हो तो उसपर दो क़ुर्बानी ज़रूरी है। एक हज के शुक्राना की और दूसरी बक़रीद की। और साहिबे निसाब मुफ़रिद अगर मुक़ीम के हुक्म में है तो उसपर भी बक़रईद की एक क़ुर्बानी ज़रूरी है लेकिन यह लोग अगर बक़रईद की क़ुर्बानी का इन्तेज़ाम अपने वतन में करें तो हर्ज नहीं मगर हज के शुक्राना

की कुर्बानी और कफ़्फ़ारा की कुर्बानी सिर्फ़ मेना और पूरे हरम की हदों में हो सकती है उसके बाहर वतन वग़ैरा में नहीं हो सकती।

कुर्बानी के बाद क़िब्ला की तरफ़ मुंह कर के बैठ कर बाल बनवायें यानी सर मुंडायें या बाल कतरवायें और औरतों को पूरे सर का बाल उंगली के पोर के बराबर कतरना मुस्तहब है (दुर्रे मुख़्तार) और चौथाई सर का बाल उंगली के पोर के बराबर बराबर कतरना ज़रूरी है। (रद्दुल मुहतार) मगर किसी ना-महरम के हाथ से हरगिज़ न कतरवायें कि हराम है। और जिसके सर पर बाल न हों वह उस्तरा फिरवाये। और सर मुंडाने या बाल कतरवाने से पहले नाखुन न तराशें और न ख़त बनवायें कि दम लाज़िम आएगा यानी कुर्बानी का कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा और बाल बनवाते वक़्त यह दुआ पढ़ते रहें। "अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर। लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु अल्लाहु अकबरु व लिल्लाहिल्हम्द"

اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ۔ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ اللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَ لِلّٰہِ الْحَمْدُ ۔

क़ारिन और मुतमत्तेअ् कुर्बानी के बाद बाल बनवायें यानी अगर कुर्बानी से पहले बाल बनवाएगा तो दम ज़रूरी होगा। मर्द लोग अगर बाल कतरवायें तो सर में जितने बाल हैं उनमें से चौथई का उंगली के पोर के बराबर बराबर कतरवाना ज़रूरी है। अगर चौथाई से कम कतरवाया तो दम ज़रूरी होगा। और कतरवाने की सूरत में एक पोर से ज़्यादा कतरवायें इसलिए कि बाल छोटे

बड़े होते हैं। इस बात का अंदेशा है कि चौथाई बालों में से सब एक पोर न कटे हों और सर मुंडाने या बाल कतरवाने का वक़्त अय्यामे नहर हैं यानी अगर बारहवीं ज़िलहिज्जा तक बाल नहीं बने तो कुर्बानी का कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा (बहारे शरीअत)

बाल बनवाने के बाद एहराम की सारी पाबंदियाँ ख़त्म हो गईं। अब नहा धोकर सिले हुए कपड़े पहन सकते हैं लेकिन तवाफ़े ज़ियारत जो हज का फ़र्ज़ है उसके पहले बिवी से सुहबत (संगती) करना, उसे शहवत के साथ छूना या बोसा देना (चूमना) हलाल नहीं हुआ (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुलमुहतार)

तवाफ़े ज़ियारतः- कुर्बानी और बाल बनवा कर फुर्सत होने के बाद बेहतर यह है कि आज ही दस्वीं ज़िलहिज्जा को मक्का शरीफ़ पहुँच कर तवाफ़े ज़ियारत करें और रात गुज़ारने के लिए मिना वापस आ जायें। क़ारिन व मुफ़रिद, तवाफ़े कुदूम में और मुतमत्तेअ् एहरामे हज के बाद किसी नफ़्ल तवाफ़ में अगर तवाफ़े ज़ियारत की सई कर चुके हों तो इस तवाफ़ के बाद सई न करें। और अगर पहले सई न की हो और एहराम की चादरें बदन पर हों तो इज़्तेबाअ् व रमल के साथ तवाफ़ के बाद सई करें। और अगर एहराम की चादरें बदन पर न हों तो सिर्फ़ सई करें उस सूरत में तवाफ़ के अंदर रमल व इज़्तेबाअ् नहीं और सर मुडाने या कतरवाने के बाद तवाफ़े ज़ियारत की सई की हो तो फिर दोबारा बाल बनवाने की ज़रूरत नहीं।

अगर दस्वीं को तवाफ़े ज़ियारत का मौक़ा न मिल सके

तो बारहवीं की मग़रिब से पहले तक कर सकते हैं लेकिन दस्वीं को न कर सकने की सूरत में ग्यारहवीं को यह तवाफ़ कर लेना बेहतर है। कुछ लोग तजरबा न होने की वजह से आने जाने की परेशानी से बचने के लिए बारहवीं की शाम को इस तवाफ़ का प्रोग्राम बनाते हैं लेकिन जब बारहवीं को ज़वाल के बाद कंकरी मार कर मोटरों पर चलते हैं तो बेहद भीड़ के सबब मग़रिब से पहले नहीं पहुँच पाते इस तरह उनपर दम ज़रूरी हो जाता है और गुनाहगार भी होते हैं। हाँ अगर ज़वाल के बाद फ़ौरन कंकरी मार कर पैदल चल पड़ें तो मग़रिब से पहले तवाफ़े ज़ियारत कर सकते हैं। लेकिन इस सूरत में भी अचानक बीमारी वग़ैरा के सबब वक़्त पर न पहुंचने का अंदेशा है इसलिए मुनासिब यही है कि दस्वीं या ग्यारहवीं को तवाफ़े ज़ियारत से फुर्सत लेलें। और दस्वीं को जायें या ग्यारहवीं को हर सूरत में वापस आकर रात मिना ही में गुज़ारें तवाफ़े ज़ियारत के बाद बीवी हलाल हों गई और हज पूरा हो गया कि उसका दूसरा फ़र्ज़ यह तवाफ़ था।

औरतों के लिए भी यह तवाफ़े ज़ियारत फर्ज़ है लेकिन हैज़ या नेफ़ास की वजह से अगर बारहवीं तक न कर सकें तो उनपर कोई दम या कफ़्फ़ारा ज़रूरी न होगा। वह जब भी पाक हों तवाफ़े ज़ियारत करलें हाँ अगर हैज़ व नेफ़ास के इलावा किसी दूसरे उज़्र (मजबूरी) बीमारी वग़ैरा की वजह से बारहवीं के सूरज डूबने के बाद तवाफ़े ज़ियारत करेंगी तो मर्दों की तरह उनपर भी दम ज़रूरी होगा।

चौथा दिन ——— 11 ज़िलहिज्जा

आज तीनों शैतानों को कंकरी मारनी है उसका वक़्त सूरज ढलने के बाद से सुबहे सादिक़ तक है लेकिन सूरज डूबने के बाद बेग़ैर किसी उज़्र के मकरूह है। आज जमरए ऊला यानी छोटे शैतान से शुरू करें जो मास्जदे खैफ़ के क़रीब है। सात कंकरियाँ पहले के तरीक़ा पर दुआ पढ़ कर मारें मगर क़िबला की तरफ़ मुंह करके। कंकरी मार कर कुछ आगे बढ़ जायें और क़िबला की तरफ़ मुंह करके हाथ उठा कर इस तरह दुआ करें कि हथेलियाँ क़िबला की तरफ़ रहें। निहायत आजिज़ी व इनकेसारी के साथ दुरूद शरीफ़, दुआ और इस्तिग़फ़ार में कम से कम बीस आयतें पढ़ने के बराबर तक मशग़ूल रहें। फिर जमरए वुस्ता यानी बीच वाले शैतान पर जाकर कंकरी मारें और उसी तरह दुआ करें। फिर बड़े शैतान पर जाकर जिस को जमरए कुबरा और जमरए अक़बा भी कहते हैं सात कंकरी मारें मगर वहाँ ठहरें नहीं बल्कि फ़ौरन पलट आयें और पलटते हुए दुआ करें।

पांचवाँ दिन ——— 12 ज़िलहिज्जा

आज भी तीनों शैतानों को कंकरी मारनी है और उसका वक़्त ग्यारहवीं की तरह आज भी सूरज ढलने के बाद से है। कुछ लोग आज के दिन दोपहर से पहले ही कंकरी मार कर मक्का शरीफ़ चल देते हैं यह हमारे अस्ल मज़हब के ख़िलाफ़ है सहीह नहीं। ज़वाल के बाद तीनों शैतान को ग्यारहवीं तारीख़ के मिस्ल

(तरह) कंकरी मारें। फिर अगर चाहें तो सूरज डूबने से पहले मक्का शरीफ़ की तरफ़ रवाना हो जायें कि सूरज डूबने के बाद जाना ऐब समझा जाता है।

और अगर तेरहवीं की सुबह हो गई तो फिर कंकरी मारे बेग़ैर जाना जाइज़ नहीं अगर जाएगा तो दम यानी एक कुर्बानी का कफ्फ़ारा वाजिब होगा। और तेरहवीं को कंकरी मारने का वक़्त सुबह से सूरज डूबने तक है मगर सुबह से सूरज ढलने तक मकरूह है इसलिए अगर किसी ने तेरहवीं को दोपहर से पहले कंकरी मारी तो अदा हो जाएगी लेकिन ज़वाल के बाद मारना सुन्नत है।

कंकरी मारने के संबंद्ध में कुछ मस्अ़ले

अगर किसी दिन उसके मुक़र्रर वक़्त पर कंकरी नहीं मारी तो उसकी क़ज़ा भी वाजिब होगी और कुर्बानी का कफ़्फ़ारा भी देना पड़ेगा यानी अगर दस्वीं को कंकरी नहीं मारी और ग्यारहवीं की सुबह हो गई या ग्यारहवीं को कंकरी नहीं मारी और बारहवीं की सुबह हो गई या बारहवीं को नहीं मारी और तेरहवीं की सुबह हो गई तो क़ज़ा के साथ कफ़्फ़रा भी ज़रूरी होगा और क़ज़ा का वक़्त तेरहवीं को सूरज डूबने तक है इसलिए अगर तेरहवीं को सूरज डूब गया और कंकरी नहीं मारी तो अब कंकरी मारने की क़ज़ा नहीं सिर्फ़ दम ज़रूरी होगा। और तेरहवीं को ठहरने के बावजूद कंकरी नहीं मारी या किसी दिन कंकरी नहीं

मारी और तेरहवीं का सूरज डूब गया तो उस सूरत में भी सिर्फ़ एक दम ज़रूरी होगा अगर दस्वीं को चार कंकरी से कम मारी या ग्यारहवीं वग़ैरा को ग्यारह कंकरी से कम मारी तो दम ज़रूरी होगा। और अगर दस्वीं को चार कंकरी मारी तीन छोड़ दी या और दिनों में गयारह मारी दस छोड़ी तो अगर्चे दूसरे दिन क़ज़ा कर ली हो हर कंकरी पर सदक़ए फ़ित्र के बराबर सदक़ा दे। और सदक़ों की क़ीमत दम के बराबर हो जाये तो कुछ कम कर दे सब कंकरी एक साथ मारी तो यह सातों एक के जगह पर होंगी बाक़ी छे कंकरी अलग से पूरी करे मगर शैतान के पास से न उठाये कि मकरूह है। इसलिए कि वहाँ वही कंकरियाँ रहती हैं जो मक़बूल नहीं होतीं और जो मक़बूल हो जाती हैं उठाली जाती हैं। (रद्दुल मुहतार, बहारे शरीअत)

मक्का शरीफ़ में क़ियाम और उमराः- हज से फ़ुर्सत पा कर तेरहवीं के बाद जब तक मक्का शरीफ़ में ठहरें अपने और अपने पीर, उस्ताद, माँ बाप ख़ास कर हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम उन के अस्हाब, अहले बैत और दीगर बुज़ुरगाने दीन की तरफ़ से जितना हो सके उमरा करते रहें कि हदीस शरीफ़ में इसकी बहुत बड़ाई आई है। मक्का श्रीफ़ से इसका तरीक़ा यह है कि जेअ्राना या तनईम जायें वहाँ से उमरा का एहराम जैसा कि पहले बयान हुआ बांध कर आयें। तवाफ़ शुरू करते वक़्त हज्रे असवद का बोसा लेते ही लब्बइक बंद करदें। रमल व इज़तेबाअ् के साथ तवाफ़ करें फिर दस्तूर के

मुताबिक़ सई करने के बाद सर के बाल मुडायें या कटवायें बस उमरा हो गया जिस के सर पर कुदरती बाल न हों या सर मुंडाने के बाद उसी दिन फिर उमरा लाया तो सर पर उस्तरा फिरवाये। जेअराना, मसजिदे हराम से लगभग 25 किलोमीटर है वहाँ से एहराम बांधने को बड़ा उमरा कहते हैं। और तनईम मस्जिदे हराम से लगभग 5 किलोमीटर है वहाँ से एहराम बाँधने को छोटा उमरा कहते हैं।

तवाफ़े रूख़सतः– इस तवाफ़ को तवाफ़े वदाअ् और तवाफ़े सद्र भी कहते हैं इसको रमल व इज़तेबाअ् और सई के बेग़ैर अदा करें। यह बाहर वालों पर ज़रूरी है। इस अख़िरी तवाफ़ में आप जो कुछ चाहें दिल खोल कर मांगे। और तवाफ़े रुख़सत की दुआयें जो किताबों में लिखी हैं अगर हो सके तो तरजमा के साथ याद करके उसे भी पढ़ें। तवाफ़ के बाद पहले की तरह मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज़ पढ़ें। फिर ज़मज़म पर पहुँचें और ख़ूब पेट भर कर पियें और कुछ पानी सर, चेहरा और बदन पर डाल कर उससे मसह करें। फिर दरवाज़ए काबा के सामने खड़े होकर क़बूले हज और बार बार हाज़िरी की दुआ मांगें और यह दुआ पढ़ें।

दुआः– अस्साइलो बिबाबि-क यस्अलु-क मिन फ़ज़्लिक व मग़फिरति-क व यरजू रहमतिक।

اَلسَّائِلُ بِبَابِكَ يَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَ مَغْفِرَتِكَ وَ يَرْجُوْا رَحْمَتَكَ

अर्थः– तेरे दरवाज़े पर साइल (मंगता) तेरे फ़ज़्ल व मग़फ़िरत (बख़्शिश) का सवाल करता है और तेरी रहमत का उम्मीदवार है।

इसके बाद मुलतज़म के पास आकर उससे लिपट जायें। सीना, पेट और कभी दाहिना गाल कभी बायाँ दिवार पर रखें और ग़िलाफ़े काबा पकड़ कर दुआ, दुरूद शरीफ़ और ज़िक्र की कसरत करें और उस वक़्त अगर हो सके तो यह दुआ भी पढ़ें।

दुआः–अल्हमदु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ा व मा कुन्ना लि नहतदिय लौला अन हदानल्लाहु। अल्लाहुम्म फ़ कमा हदयतना लिहाज़ा फ़तक़ब्बलहु मिन्ना वला तजअ़ल हाज़ा आख़िरल अ़हदि मिन बैतिकल हरामि वरज़ुक़निलऔ द इलैहि हत्ता तरज़ा बिरहमति-क या अरहमर्राहिमीन। वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिलआ़लमीन। व सल्लल्लाहु तआ़ला अला सय्यदिना मुहम्मदिंव व आलिही व अस्हाबिही अजमअ़ीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدَانَا لِهٰذَا وَ مَا كُنَّا لِنَهْتَدِیَ لَوْلَا اَنْ هَدَانَا اللّٰهُ ۔ اَللّٰهُمَّ فَكَمَا هَدَیْتَنَا لِهٰذَا فَتَقَبَّلْهُ مِنَّا وَ لَا تَجْعَلْ هٰذَا اٰخِرَ الْعَهْدِ مِنْ بَیْتِكَ الْحَرَامِ وَ ارْزُقْنِی الْعَوْدَ اِلَیْهِ حَتّٰی تَرْضٰی بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ ۔ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۔ وَ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ اَجْمَعِیْنَ ۔

अर्थः– हम्द है अल्लाह के लिए जिसने हमें हिदायत की अल्लाह हमको हिदायत न करता तो हम हिदायत न पाते। या अल्लाह! जिस तरह तूने हमें इस की हिदायत की है तो क़बूल फ़रमा और बैतुल हराम में यह हमारी आख़िरी हाज़िरी न कर और इसकी तरफ़ लौटना फिर हमें नसीब कर ताकि तू अपनी

रहमत के सबब राज़ी हो जाये ऐ सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान! और हम्द है अल्लाह के लिए जो तमाम जहाँ का रब है। और अल्लाह दुरूद भेजे हमारे सरदार मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) पर और उनकी आल व अस्हाब सब पर।"

फिर हज्रे असवद को चूमें और खूब गिड़गिड़ा कर आ़जिज़ी के साथ यह दुआ पढ़ें।

दुआः- "या यमीनल्लाहि फीअरज़िही इन्नी उशहिदु-क व कफ़ाबिल्लाहि शहीदा अन्नी अशहदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मद र्रसूलुल्लाहि व अना उवद्दिउ-क हाज़िहीश्शहाद-त लितशह-द-ली बिहा इन्दल्लाहि तआ़ला फ़ी यौमिल क़ियामति यौमिल फ़ज़इल अकब-रू। अल्लाहुम्म इन्नी उशहिदु-क अला जा़लि-क व उशहिदु मलाइकतिकल किराम। व सल्लल्लाहु तआला अला सय्यिदिना मुहम्मदिंव व आलिही व अस्हाबिही अजमअ़ीन।"

يَا يَمِيْنَ اللّٰهِ فِى اَرْضِهٖ اِنِّى اُشْهِدُكَ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۰ اَنِّىْ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَ اَنَا اُوَدِّعُكَ هٰذِهِ الشَّهَادَةَ لِتَشْهَدَ لِىْ بِهَا عِنْدَ اللّٰهِ تَعَالٰى فِىْ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ يَوْمَ الْفَزَعِ الْاَكْبَرِ ۰ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اُشْهِدُكَ عَلٰى ذٰلِكَ وَ اَشْهَدُ مَلٰئِكَتِكَ الْكِرَامِ ۰ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ ۰

अर्थः- ऐ ज़मीन पर अल्लाह के यमीन!(दाहिना हाथ) मैं तुझे गवाह ठहराता हूँ और अल्लाह की गवाही काफ़ी है कि मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह के इलावा कोई मअ़बूद नहीं

और मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और मैं तेरे पास इस गवाही को अमानत रखता हूँ कि अल्लाह तआला के पास क़ियामत के दिन जिस दिन बड़ी घबराहट होगी तू मेरे लिए इसकी गवाही देगा। ऐ अल्लाह! मैं तुझको और तेरे मलाइका को इसपर गवाह करता हूँ और अल्लाह दूरूद भेजे हमारे सरदार मुहम्मद और उनकी आल व अस्हाब सब पर।"

इसके बाद काबा शरीफ़ की तरफ़ मुँह करके उलटे पाँव चलें या सीधे चलें और फिर फिर कर हसरत से काबा शरीफ़ की तरफ़ देखते हुए और उसकी जुदाई पर रोते हुए मस्जिदे हराम से पहले बायाँ पैर बाहर निकालें और ग़िलाफ़े काबा पकड़ कर पढ़ने के लिए जो दुआ ऊपर लिखी हुई हैं उसे पढ़ें या उस मौक़ा पर पढ़ने के लिए दूसरी दुआयें जो किताबों में छपी हैं उसे पढ़ें। बाहर निकलने के लिए "बाबुल हज़वरह" बेहतर है। जिसे आज कल "बाबुल वदाअ्" कहते हैं।

नोटः- कुछ लोग इस मौक़ा पर उल्टे पाँव चलने को मना करते हैं उनकी न सुनें इसलिए कि यह काबा शरीफ़ की एक तरह इज़्ज़त करना है। जो ज़मीन पर अल्लाह तआ़ला की निशानियों में से एक बहुत बड़ी निशानी है। और अल्लाह तआला की निशानियों की इज़्ज़त करना तक़वा वालों का तरीक़ा है। कुर्आन मजीद पारा 17 सत्तरह रूकूअ् 11 में है।

तरजमाः- जो शख़्स खुदाए तआला की निशानियों की ताज़ीम करे तो यह ताज़ीम दिलों की परहेज़गारी से है।

और दुर्रेमुख़्तार, शरह विक़ाया, और फ़तावा आलमगीरी में काफ़ी से है जिस का ख़ुलासा यह है कि तवाफ़े रूख़सत के बाद काबा शरीफ़ की तरफ़ मुंह करके उलटे पाँव चलें। यहाँ तक कि मस्जिद के बाहर निकल जायें।

रवानगी के वक़्त औरतें अगर हैज़ व नेफ़ास में मुब्तिला हों तो तवाफ़े रूख़सत न करें बल्कि मस्जिद के बाहर दरवाज़ा पर खड़ी हो कर दुआ करें और निहायत दर्द व ग़म के साथ काबा शरीफ़ को अलविदाअ् कहें।

हज की ग़लतियाँ और उनके कफ़्फ़ारे

हज की कुछ ग़लतियों के कफ़्फ़ारे अपने अपने मक़ाम पर बयान किए गए हैं और कुछ ग़लतियों के कफ़्फ़ारे यहाँ बयान किये जाते है। वाज़ेह हो कि अगर जान बूझ कर बिलाउज़्र ग़लती करे तो कफ़्फ़ारा भी वाजिब है और गुनहगार भी हुआ। इसीलिए इस सूरत में तौबा भी ज़रूरी है यानी कफ़्फ़ारा के साथ जब तक तौबा भी न करे पाक न होगा। और अगर भूल कर या किसी मजबूरी से है तो कफ़्फ़ारा काफ़ी है। यानी ग़लती का कफ़्फ़ारा हर हाल में है जान बूझ कर हो या भूल चूक से। उसका जुर्म होना जानता हो या न जानता हो। ख़ुशी से हो या मजबूरन। सोते में हो या जागते में। नशा और बेहोशी में हो या होश में उस ने ख़ुद किया हो या उसके हुक्म से दूसरे ने किया हो। (बहारे शरीअ़त)

1- ख़ुशबू अगर बहुत सी लगाई जिसे देख कर लोग बहुत बतायें चाहे अंग के थोड़े ही हिस्सा में हो या किसी बड़े अंग पर लगाई जैसे सर, मुंह पिन्डली वग़ैरा तो ख़ुशबू चाहे थोड़ी ही हो उन दोनों सूरतों में दम है और अगर थोड़ी सी ख़ुशबू अंग के थोड़े से हिस्सा में लगाई तो सद्क़ा है। एहराम से पहले बदन पर ख़ुशबू लगाई थी अब एहराम के बाद फैल कर जिस्म के दूसरे हिस्सों को लगी तो कफ़्फ़ारा नहीं। रोगन-चम्बेली वग़ैरा ख़ुशबूदार तेल लगाने का वही हुक्म है जो ख़ुशबू इस्तेमाल करने में है। तिल और ज़ैतून का तेल ख़ुशबू के हुक्म में है अगर्चे उनमें ख़ुशबू न हो अलबत्ता उनके खाने, नाक में चढ़ाने, जख़्म पर लगाने और कान में टपकाने से दम वग़ैरा ज़रूरी नहीं थोड़ी सी खुशबू बदन के कई हिस्सों में लगाई अगर इकठ्ठा करने से जिस्म के एक बड़े हिस्से के बराबर पहुंच जाये तो दम है वर्ना सद्क़ा। और ज़्यादा खुशबू कई जगह लगाई तो हर हाल में दम है। खुशबू सूंधी फल हो या फूल जैसे लेमुं, नारंगी, गुलाब, चंबेली, बेले और जूही वग़ैरा के फूल तो कुछ कफ़्फ़ारा नहीं लेकिन एहराम की हालत में ख़ुशबू सूंघना मकरूह है। तम्बाकू खाने वाले एहराम की हालत में खुशबूदार तम्बाकू न खायें और हालते एहराम में ख़मीरा तम्बाकू न पीना बेहतर है कि उसमें ख़ूशबू होती है मगर पिया तो कफ़्फ़ारा नहीं (बहारे शरीअ़त) 2. हालते एहराम में सिला हुआ कपड़ा चार-पहर यानी एक रात या एक

दिन या बारह घंटे पहना तो दम वजिब (ज़रूरी) है और उससे कम में सद्क़ा चाहे थोड़ी ही देर पहना हो। और अगर लगातार कई दिन तक पहने रहा जब भी एक ही दम वाजिब है जब कि यह लगातार पहनना एक ही तरह का हो यानी उज़्र से या बिला उज़्र और अगर एक दिन बिला उज़्र था और दूसरे दिन उज़्र से तो दो कफ़्फ़ारे वाजिब होंगे। अगर सिला हुआ कपड़ा पहना और उसका कफ़्फ़ारा अदा कर दिया मगर उतारा नहीं दूसरे दिन भी पहने रहा तो दूसरा कफ़्फ़ारा वाजिब है।

एहराम वाले ने दूसरे एहराम वाले को सिला हुआ कपड़ा पहनाया तो पहनने वाले पर कफ़्फ़ारा है और पहनाने वाले पर कुछ नहीं। मर्द या औरत ने चेहरा पूरा या चौथाई छुपाया या मर्द ने पूरा या चौथाई सर छुपाया तो बारह घंटा या ज़्यादा लगातार छुपाने में दम है और कम में सद्का सोते में हो या जागते में। जान बूझ कर या भूल कर हर सूरत में कफ़्फ़ारा वाजिब है। और अगर चौथाई से कम हो बारह घंटे तक छुपाया तो सद्क़ा है। और बारह घंटे से कम में कफ़्फ़ारा नहीं मगर गुनाह है। हालते एहराम में सर पर कपड़े की गठरी रखना भी सर छुपाने के हुक्म में है यानी दम या सदक़ा वाजिब होगा। और ग़ल्ला की गठरी या बर्तन वग़ैरा रख लिया तो कुछ नहीं। ऐसा जूता पहनना जो बीच क़दम की उभरी हुई हड्डी को छुपाता है तो बारह घंटा पहनने में दम है और उससे कम में सद्क़ा। एहराम की हालत में बनयान पहनना भी जाइज़ नहीं और औरतों को सिला हुआ कपड़ा

पहनना जाइज़ है।

3. सर या दाढ़ी के चौथाई बाल या ज़्यादा किसी तरह दूर किये तो दम है और कम में सद्क़ा पूरी गर्दन या पूरी एक बग़ल में दम है और कम में सद्क़ा चाहे आधी या ज़्यादा ही क्यों न हो। यही हुक्म ज़ेरे नाफ़ का भी है और दोनों बग़लें पूरी मुंडाए तब भी एक दम है। (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुहतार)

मोंछ अगर्चे पूरी मुंडाए या कतरवाए सद्क़ा है। रोटी पकाने में कुछ बाल जल गये तो सद्क़ा है। वुज़ू करने या खुजलाने या कंघा करने में बाल गिर गये तो उस पर भी सद्क़ा है और कुछ लोगों ने कहा कि दो तीन बाल तक हर बाल के लिए एक मुठ्ठी अनाज या एक टुकड़ा रोटी या एक छुहारा है। अपने आप या बे हाथ लगाये बाल गिर जाये या बीमारी से तमाम बाल गिर पड़ें तो कुछ नहीं औरत पूरे या चौथाई सर के बाल मुंडाए या उंगली के पोर बराबर काटे तो दम है और कम में सद्क़ा है। (अनवारूल बुशारा)

4. एक हाथ या एक पाँव के पाँचों नाख़ुन काटे या बीसों एक साथ तो दम है और अगर किसी हाथ पाँव के पूरे पांच न काटे तो हर नाख़ुन पर एक सद्क़ा यहां तक कि अगर चारों हाथ पांव के चार चार नाख़ुन काटे तो सोला सदक़े दे मगर जब कि सद्क़ों की क़ीमत एक दम के बराबर हो जाये तो कुछ कम करदे या दम दे।

अगर एक हाथ पाँव के पाँचों नाख़ुन एक बैठक में और

दूसरे के पांचों दूसरी बैठक में काटे तो दो दम हैं और चारों हाथ पाँव के चार बैठक में तो चार दम है। कोई नाख़ुन टूट गया कि बढ़ने के लाइक़ न रहा उसका बकिया काट लिया तो कुछ नहीं (आलमगीरी बहारे शरीअ़त)

5. शहवत के साथ बोसा लेने (चूमने) गले लगाने और बदन छूने में दम है अगर्चे इनज़ाल न हो। और यह बातें औरत के साथ हों या मर्द के साथ दोनों का एक हुक्म है और मर्द की उन बातों से अगर औरत को लज़्ज़त आये तो उस पर भी दम है।

एहतेलाम या ख़याल जमाने से इनज़ाल हो जाये तो कुछ नहीं। (हिन्दिया, बहारे शरीअ़त)

6. वुकूफ़े अरफ़ा से पहले हमबिस्तरी की तो हज फ़ासिद हो गया उसे हज की तरह पूरा करके दम दे और आने वाले साल उसकी क़ज़ा करे। औरत भी अगर हज के एहराम में थी तो उस के लिए भी यही हुक्म है। वुकूफ़े अरफ़ात के बाद हमबिस्तरी करने से हज तो न जाएगा मगर बाल बनवाने और तवाफ़े ज़ियारत से पहले किया तो बुदना है यानी ऊँट या गाय की कुर्बानी का कफ़्फ़ारा ज़रूरी होगा और बाल बनवाने के बाद किया तो दम ज़रूरी है और बाल बनवाने व तवाफ़े ज़ियारत के बाद हमबिस्तरी की तो कुछ नहीं।

उमरा में तवाफ़ से पहले हमबिस्तरी की तो उमरा जाता रहा दम दे और उमरा की क़ज़ा करे और तवाफ़ के बाद बाल बनवाने से पहले की चाहे सई से पहले हो या बाद तो दम दे

और उमरा सही है। (दुर्रे मुख़्तार, आलमगीरी)

7. तवाफ़े ज़ियारत के चार फेरे या उससे ज़्यादा नापाकी या हैज़ व नेफ़ास की हालत में किया तो बुदना ज़रूरी है। और पाकी के साथ दोबारा करना भी ज़रूरी है। फिर बारहवीं तक पूरे तरीक़े पर दोबारा कर लिया तो बुदना ख़त्म होगया और बारहवीं के बाद किया तो बुदना ख़त्म हो जाएगा मगर दम ज़रूरी रहेगा। अगर तवाफ़े ज़ियारत बेग़ैर वुज़ू किया था तो दम ज़रूरी है और दोबारा करना मुस्तहब और दोबारा कर लेने से दम ख़त्म हो जाता है चाहे बारहवीं के बाद किया हो। तीन फेरे या उससे कम बेग़ैर पाकी के किया तो हर फेरे के बदले में एक सद्क़ा है। तवाफ़े ज़ियारत बारहवीं की मग़रिब से पहले तक नहीं कर सका तो बाद में करे और दम दे। अगर तवाफ़े ज़ियारत कुल या अक्सर बिला उज़्र छपरी खटोले पर किया या बे-सतर किया जैसे औरत की चौथाई कलाई या चौथई सर के बाल खुले रहे तो उन सब सूरतों में भी दम दे और सहीह तरीक़ा पर दोबारा कर लिया तो दम ख़त्म। और अगर बेग़ैर दोबारा किये चला आया तो बकरा की क़ीमत भेज दे कि हरम की हदों में ज़बह कर दिया जाए कि कफ़्फ़ारा का जानवर हरम के बाहर ज़बह करने से कफ़्फ़ारा अदा नहीं होता। तवाफ़े ज़ियारत के इलावा कोई और तवाफ़ कुल या अक्सर नापाकी की हालत में किया तो दम देगा और बेग़ैर वुज़ू किया तो सद्क़ा और तीन फेरे या उससे कम नापाकी की हालत में किये तो हर फेरे के बदले में एक सद्क़ा

फिर अगर मक्का शरीफ़ में है तो इन सब सूरतों में दोबारा करले कफ़्फ़ारा ख़त्म हो जाएगा। तवाफ़े रूख़सत कुल या अक्सर छोड़ दिया तो दम ज़रूरी और चार फेरों से कम छोड़ा तो हर फेरे के बदले में एक सद्क़ा। तवाफ़े कुदूम छोड़ दिया तो कफ़्फ़ारा नहीं मगर बुरा है। उमरा के तवाफ़ का एक फेरा भी छोड़ देगा तो दम ज़रूरी होगा और बिल्कुल न किया या अक्सर छोड़ दिया तो कफ़्फ़ारा नहीं बल्कि उसका अदा करना ज़रूरी है। क़ारिन ने तवाफे कुदूम व तवाफ़े उमरा दोनों बेग़ैर वुज़ू किये तो दसवीं से पहले उमरा के तवाफ़ को दोबारा करे। और अगर दोबारा न किया यहाँ तक कि दसवीं तारीख़ की फ़ज्र ज़ाहिर हो गई तो दम ज़रूरी और तवाफ़े ज़ियारत में रमल व सई करें। नापाक कपड़ों में तवाफ़ मकरूह है कफ़्फ़ारा नहीं।

8. सई के चार फेरे या ज़्यादा बेग़ैर मजबूरी के कुर्सी गाड़ी पर किये या छोड़ दिए तो दम दे। हज हो गया और चार से कम में हर फेरे के बदले में सद्क़ा दे और अगर दोबारा कर लिया तो दम और सद्क़ा दोनों ख़त्म हो गया। और अगर मजबूरी की वजह से ऐसा हुआ तो मुआफ़ है। तवाफ़ से पहले सई की और दोबारा न किया तो दम दे। (दुर्रे मूख़्तार, बहारे शरीअ़त)

9. क़ारिन व मुतमत्तेअ् ने कंकरी मारने से पहले कुर्बानी की तो दम ज़रूरी है। बारहवीं के बाद सर मुंडाया या कंकरी मारने से पहले मुंडाया या क़ारिन व मुतमत्तेअ् ने कुर्बानी से पहले मुंडाया तो सब सूरतों में दम ज़रूरी है। (अनवारूल बुशारा)

10. खुशकी का जानवर शिकार करना या उसकी तरफ़ शिकार करने को इशारा करना या और किसी तरह बताना यह सब हराम हैं और सब में कफ़्फ़ारा ज़रूरी और कफ़्फ़ारा में उस जानवर की क़ीमत देनी होगी। (दुर्रे मुख़्तार, बहारे शरीअ़त)

11. हरम की जंगली खुद जमी हुई हरी जड़ी बूटी, घास, पेड़ या पौधे काटने या तोड़ने में जुर्माना देना पड़ेगा जब कि यह उस क़िस्म का पौधा हो कि न उसे किसी ने बोया हो न बोया जाता हो और गीला हो। टूटा या उखाड़ा हुआ न हो। और जुर्माना यह है कि उसकी क़ीमत का ग़ल्ला लेकर मिस्कीनों को दे। और वाज़ेह हो कि हरम के किसी पौधे की मिस्वाक बनाना भी जाइज़ नहीं (आलमगीरी)

12. अपनी जूँ अपने बदन या कपड़े में मारी या फेंक दी तो एक जूँ में रोटी का एक टुकड़ा कफ़्फ़ारा दे और दो या तीन जूँ हों तो एक मुठ्ठी अनाज दे और उससे ज़्यादा में सद्क़ा है। जूँ मारने को सर या कपड़ा धोया या धूप में डाला जब भी वही कफ्फ़ारे हैं जो मारने में थे। कपड़ा भीग गया या सुखाने के लिए धूप में रखा उससे जुयें मर गईं यह इरादा न था तो कुछ हर्ज नहीं (बहारे शरीअ़त)

13. मीक़ात के बाहर से जो शख़्स आया और बेग़ैर एहराम मक्का शरीफ़ गया तो चाहे न हज का इरादा हो न उमरा का मगर हज या उमरा ज़रूरी हो गया। अब चाहिए कि मीक़ात को जाये और एहराम बाँध कर आये। अगर मीक़ात को न गया और मक्का

शरीफ़ ही में एहराम बाँध लिया तो दम ज़रूरी हो गया। मीक़ात से बेग़ैर एहराम गुज़रा फिर उमरा का एहराम बाँधा उसके बाद हज का या क़िरान किया तो एक दम ज़रूरी है और पहले हज का बाँधा फिर हरम में उमरा का तो दो दम ज़रूरी होंगे।

14. उमरा के तमाम कामों को पूरा कर चुका या सिर मुंडाना बाक़ी था कि दूसरे उमरा का एहराम बाँध लिया तो दम ज़रूरी है और गुनहगार भी हुआ (दुर्रे मुख़्तार) दसवीं से तेरहवीं तक हज करने वाले को उमरा का एहराम बाँधना मना है अगर बाँधा तो तोड़ दे और उसकी क़ज़ा करे और दम दे और कर लिया तो हो गया मगर दम ज़रूरी है। (रद्दुल मुहत्तार, बहारे शरीअत)

नोटः- इस बयान में जहाँ दम कहा गया है उससे मुराद एक बकरा या भेड़ा की कुर्बानी है और बुदना से मुराद ऊँट या गाय की कुर्बानी है और सब जानवर उन्हीं शर्तों के साथ हों जो शर्तें कि बकरईद की कुर्बानी में हैं। सद्क़ा से मुराद अंग्रेज़ी रूपये से एक सौ पच्हत्तर रूपया आठ आना भर गेहूं कि दो किलो लगभग 46 ग्राम हुए और सौ रूपये के सेर से पौने दो सेर अठन्नी भर ऊपर हुए या उसके दूने खुजूर या उसकी क़ीमत। जहाँ दम का हुक्म है और वह मजबूरन करना पड़ा है जैसे बीमारी या सख़्त गर्मी वग़ैरा की वजह से तो उसमें यह भी हो सकता है कि दम के बदले छे मिस्कीनों को एक एक सद्क़ा दे। या छे मिस्कीनों को दोनों वक़्त पेट भर खिलाये या तीन रोज़े रखे। और जिस जुर्म में सद्क़ा का हुक्म है और मजबूरन करना पड़ा है तो उसमें

सद्क़ा के बदले एक रोज़ा रख ले। जहाँ एक दम या एक सद्क़ा है। क़ारिन पर दो हैं।

शुकराना की कुर्बानी से आप खाये मालदार को खिलाये फ़क़ीरों को दे और कफ़्फ़ारा की कुर्बानी के हक़दार सिर्फ़ मुहताज हैं अगर कफ़्फ़ारा की कुर्बानी में से खुद भी खा लिया तो उतने का तावान दे। (बहारे शरीअत)

हज्जे बदल का बयानः- हज्जे बदल के लिए चन्द शर्तें हैं (1) जो हज्जे बदल कराता हो उस पर हज फ़र्ज़ हो यानी अगर फ़र्ज़ न हो और हज्जे बदल कराये तो हजे फ़र्ज़ अदा न होगा इसलिए अगर बाद में उस पर हज्ज फ़र्ज़ हुआ तो यह हज उसके लिए क़ाफ़ी न होगा बल्कि अगर मजबूर है तो फिर हज कराये और ताक़त रखता हो तो ख़ुद करे (2) जिस की तरफ़ से हज किया जाये वह मजबूर हो यानी ख़ुद वह हज न कर सकता हो। अगर इस क़ाबिल हो कि ख़ुद हज कर सकता है तो उसकी तरफ़ से नहीं हो सकता अगरचे बाद में मजबूर हो गया इसलिए अगर उस वक़्त मजबूर न था फिर मजबूर हो गया तो दोबारा हज कराये (3) हज के वक़्त से मरने तक मजबूरी बाकी रहे। इस लिए अगर बीच में इस काबिल हो जाये कि ख़ुद हज कर सकता है तो पहले जो हज किया जा चुका है वह काफी नहीं। हाँ अगर वह मजबूरी ऐसी थी कि जिस के जाने की उम्मीद ही न थी और इत्तेफ़ाक़ से जाता रहा तो वह पहला हज जो उसकी तरफ़ से किया गया काफ़ी है जैसे वह अंधा था और हज कराने

के बाद अंखियारा हो गया तो अब दोबारा हज कराने की ज़ुरूरत नहीं रही। (4) जिस की तरफ़ से हज किया जाये उसने हुक्म दिया हो यानी बग़ैर उसके हुक्म के नहीं हो सकता। हाँ वारिस ने मूरिस की तरफ़ से किया तो उसमें हुक्म की ज़ुरूरत नहीं (5) ख़र्च उसके माल से हो जिसकी तरफ़ से हज किया जाये। (6) जिस को हुक्म दिया है वही हज करे। इसलिए दूसरे से उस ने हज कराया तो न हुआ। अल्बत्ता अगर मरने वाले ने वसीयत की थी कि मेरी तरफ़ से फ़लाँ आदमी हज करे और वह आदमी मर गया या इन्कार कर गया तो अब दूसरे से हज करा लिया गया तो जाइज़ है। (7) जो शख्स हज्जे बदल कराता हो उसके वतन से हज को जये। (8) मीक़ात से हज का एहराम बांधे अगर उस ने उसका हुक्म किया हो। (9) उसकी नीयत से हज करे और बेहतर यह है कि ज़बान से भी "लब्बइक अन फुलानिन" لَبَّيْكَ عَنْ فُلَانٍ कह ले।

यह सब शर्तें जो ऊपर लिखी गईं हज्जे फ़र्ज़ के बदल की हैं। हज्जे नफ़्ल हो तो उनमें से कोई शर्त नहीं। जिस पर हज फ़र्ज़ हो या क़ज़ा या मिन्नत का हज उसके ज़िम्मा हो और मौत का वक़्त आ गया तो ज़रूरी है कि वसीयत कर जाये। जिस पर हज फ़र्ज़ है और अदा न किया और न वसीयत की मर गया तो सब के नज़दीक गुनहगार है।

अगर वारिस उसकी तरफ़ से हज्जे बदल कराना चाहता है तो करा सकता है। इन्शा अल्लाहु तअ़ला उम्मीद है कि अदा

हो जायेगा। बेहतर है कि हज्जे बदल के लिए ऐसा शख़्स भेजा जाये जो ख़ुद हज्जे फ़र्ज़ अदा कर चुका है। और अगर ऐसे को भेजा कि जिस ने खुद नहीं किया है जब भी हज्जे बदल हो जएगा। और अगर ख़ुद उस पर फ़र्ज़ हो और अदा न किया हो तो ऐसे को भेजना जाइज़ नहीं। और ज़्यादा बेहतर यह है कि ऐसे शख़्स को भेजें जो हज के तरीक़ों और उस के कामों को ख़ूब जानता हो।

मक्का शरीफ़ की दूसरी ज़ियारतगाहें

मक्का शरीफ़ की सर ज़मीन का हर ज़र्रा पाक है कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्म और दूसरे अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम व बड़े-बड़े सहाबए किराम रिज़वानुल्लहि तआ़ला अलैहिम अजमईन के क़दमों से सर फ़राज़ हुआ। शायद ही कोई मकान ऐसा हो कि जिस में कोई सहाबी न पैदा हुए हों और शायद ही कोई गली ऐसी हो जिससे कोई तारीख़ी वाक़ेआ न तअ़ल्लुक़ रखता हो। अलबत्ता इतना लंबा ज़माना गुज़रने के बाद वह जगहें अपनी हालतपर बाक़ी नहीं रहीं लेकिन अस्ल जगहें तो कभी गाइब नहीं हो सकतीं हम उनमें से कुछ ऐसी जगहों का संक्षिप्त रूप में ज़िक्र करते हैं कि जिन से कोई ख़ास वाक़ेआ तअ़ल्लुक़ रखता है।

जबले अबू क़ुबैस:- यह पहाड़ सफ़ा के क़रीब काबा शरीफ़ के बिल्कुल सामने है। हुज़ूर सय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला

अलैहि वसल्लम ने इसी पहाड़ से चाँद को दो टुकड़े फ़रमया था और इसी पहाड़ पर एक छोटी सी मस्जिद है जो मस्जिदे बिलाल के नाम से मशहूर है।

जबले नूरः- यह पहाड़ मक्का शरीफ़ से मिना जाते हुए रास्ता में बाईं तरफ़ पड़ता है। यही वह मुबारक पहाड़ है जिसकी चोटी पर हज़रते जिबरील अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का सीनए मुबारक चाक फ़रमाया था। इसी मुक़द्दस पहाड़ पर "ग़ारे हिरा" है जिस में नुबूवत के ज़ाहिर होने से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला हलैहि वसल्लम बहुत दिनों तक इबादत फ़रमाते रहे जहाँ पर सब से पहले वही "इक़रअ् बिस्मि रब्बिक" नाज़िल हुई।

जबले सौरः- यह पहाड़ लगभग ढाई किलो मीटर ऊँचा है जो मक्का शरीफ़ से दक्षिण तरफ़ लगभग पाँच किलो मीटर की दूरी पर है। इसी पहाड़ की चोटी के क़रीब "ग़ारे सौर" है जिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हिजरत के मौक़ा पर तीन रात क़ियाम किया था जहाँ मक्का के कुफ़्फ़ार क़दमों के निशन देखते हुए गिरफ़्तार करने के लिए ग़ार के मुँह तक पहुँच गये थे लेकिन ग़ार (गुफा) के मुँह पर मकड़ी का जाला और कबूतरों का घोंसला देख कर वापस लौटे। उस मौक़ा पर ग़ार के अंदर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की परेशानी देख कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इन शब्दों में उनको इतमीनान दिलाया था। "ला तहज़न इन्नल्ला-ह म-अ़ना"

لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ग़मगीन मत हो अल्लाह हमारे साथ है।

कुछ लोग तरह तरह के बहाने बनाकर ग़ारे हिरा और ग़ारे सौर की ज़ियारत से रोकते हैं आप उनकी हरगिज़ न सुनें और उन पाक जगहों की ज़रूर ज़ियारत करें।

जन्नतुल मुअ़ल्ला:- यह मक्का शरीफ़ का तारीख़ी क़ब्रिस्तान है। इसकी ज़ियारत भी मुस्तहब है जिस में बहुत से सहाबा, सहाबियात रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन और बड़े बड़े उलमाए इस्लाम व औलियाए किराम अलैहि-मुर्रहमतु वर्रिज़वान आराम फ़रमा हैं। उत्तर तरफ़ एक छोटे से कम्पान्ड में हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की पहली बीवी उम्मुल मोमिनीन हज़रते ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा और हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के अजदाद (बाप, दादा वग़ैरा) की क़ब्रें हैं। उसी में हजरते अब्दुल मुत्तलिब औरअबू तालिब की भी क़ब्रें हैं। मगर हज़रते अब्दुल मुत्तलिब की ज़ियारत करें और अबू तालिब की क़ब्र पर न जायें। और उसी कम्पाउन्ड में हज़रते मुल्ला अली क़ारी के उस्ताद हज़रत मौलाना सिंधी और हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की भी दफ़न हैं। और दक्षिण की तरफ़ मशहूर सहाबए किराम ख़ास कर हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर हज़रते अब्दुर्रहमान इब्ने अबू बक्र और हज़रते अस्माअ् बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हुम आराम फ़रमा हैं।

क़ब्रों की ज़ियारत का तरीक़ा

क़ब्रों की ज़ियारत का मुस्तहब तरीक़ा यह है की पैरों की तरफ़ से जाकर। साहिबे क़ब्र के मुँह के सामने खड़ा हो और यह कहे। "अस्स्लामु अलैकुम अह ल दा र कौमिम्मूमिनीन। अनतुम लना सल फुन व इन्ना इन्शाअल्लाहु बिकुम लाहिकून। नरअलुल्ला ह लना व ल कुमुल अफ़ व वल्आफ़ीय त।"

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ دَارِ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ۔ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّاِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ ۔ نَسْأَلُ اللّٰهَ لَنَا وَ لَكُمُ الْعَفْوَ وَ الْعَافِيَةَ ۔

फिर अदब के साथ फ़ातिहा पढ़ कर उलटे क़दम वापस हो जाये।

फ़ातिहा का आसान तरीक़ा

कम से कम तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर जिस क़दर होसके कुरआन करीम की सूरतें और आयतें तिलावत करे। कम से कम चारों कुल, सूरए फ़ातिहा और अलिफ़ लाम मीम से मुफ़लिहून तक पढ़े उसके बाद आख़िर में कम से कम फिर तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़े और बारगाहे इलाही में हाथ उठा कर यूँ दुआ करे।

या अल्लाह! हम ने जो कुछ दुरूद शरीफ़ पढ़ा है और कुरआने मजीद की आयतें तिलावत की हैं उनका सवाब मेरी तरफ़ से हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को

नज़्र पहुँचा दे फिर उनके वसीले से सभी अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम सहाबा व सहाबियात और तमाम औलिया, उलमा, को अता फ़रमा। फिर अगर किसी ख़ास शख़्स को ईसाले सवाब(सवाब पहुँचाना) करना हो तो उनका नाम ख़ास तरीक़े से ले जैसे यूँ कहे ख़ास कर हज़रते मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि को नज़्र पहुँचा दे और फिर सभी मोमिनीन व मोमिनात की रूहों को सवाब अता फ़रमा। "आमीन या रब्बल आलमीन। बिरहमति-क या अरहमर्राहिमीन"

اٰمِيْنَ يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۰ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ۰

मौलिदुन्नबी:- यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पैदा होने की जगह। यह जगह सफ़ा के पूरब सड़क के किनारे पर है। जो पहले सऊदी दौर में तोड़ दिया गया था अब वहाँ एक मंज़िला इमारत बना दी गई है। जिस में कुतुब ख़ाना क़ाइम है।

JANNATI KAUN?

दारे अरक़म:- यह जगह सफ़ा के पास थी। यहाँ तुर्कों ने एक मस्जिद बना दी थी। सऊदी दौर में ढहा दी गई। यहीं पर हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम इस्लाम के इबतिदाई (शुरूआती) दौर में मुसलमानों को अल्लाह तआला के एक होने का सबक़ दिया करते थे। और हज़रते उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इसी जगह पर इस्लाम लाये थे।

दारे ख़दीजतुलकुबरा:- इसी जगह पर हज़रते फ़ातिमा ज़हरा, हज़रते ज़ैनब, हज़रते रूक़य्या, हज़रते उम्मे कुलसूम,

हज़रते क़ासिम और अब्दुल्लाह रिज़वानुल्लाहि तआ़ला अलैहिम अजमईन पैदा हुए। यह जगह फ़ैसल रोड पर एक गली में पाई जाती है यह भी सऊदी दौर में ढहा दिया गया था मगर अब वहाँ एक मदरसा दारूल हुफ़्फ़ाज़ क़ाइम कर दिया गया है।

दारे सय्यदना हमज़ा:- यहाँ पर हुज़ूर के चचा हज़रते हम्ज़ा रजियल्लाहु तआला अन्हु पैदा हुए। यंह जगह "मस्फ़ला" में पाई जाती है यहाँ पर एक मस्जिद है।

मस्जिदे तनईम:- इसे मस्जिदे आइशा और मस्जिदे उमरा भी कहते हैं। इसलिए कि हज़रते आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के हुक्म के मुताबिक़ इसी जगह से उमरा का एहराम बाँधा था और उसी तनईम की जगह पर हज़रते ख़ुबैब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को फाँसी दी गई थी।

मस्जिदे सरिफ़:- सरिफ़ एक जगह का नाम है जो तनईम से लगभग पाँच किलो मीटर के फासला पर है। यहाँ हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की बीवी मुहतरमा उम्मुल मोमिनीन हज़रते मैमूना रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा का मज़ारे मुबारक है।

मस्जिदे ज़ीतूवा:- यह मस्जिदे तनईम के रास्ता में है। रसूले करीम अलैहेस्सलातु वस्सलाम एहराम की हालत में इस जगह उतरे थे।

मस्जिदे जिन:- यह मस्जिद जन्नतुल मुअ़ल्ला के क़रीब है। इसी जगह जिन्नात ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से कुरआने पाक सुना था। इसी मस्जिद के क़रीब सुल्तानुल हिन्द हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के

पीर व मुर्शिद हज़रते ख़्वाजा उस्मान हारूनी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान का मज़ारे मुबारक भी कहीं है जो इस तरह तोड़ दिया गया है कि अब उसका कोई नाम व निशान नहीं।

मस्जिदे रायाः–यह मस्जिद जन्नतुल मुअ़ल्ला के रास्ता में मस्जिदे जिन के क़रीब है इस जगह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मक्का फ़तह होने के रोज़ अपना झंडा गाड़ा था।

मस्जिदे शजराः– वह मुबारक जगह है कि जहाँ हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हुक्म पर एक पेड़ ज़मीन को चीरता हुआ ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हुज़ूर के नबी होने की गवाही दी फिर हुज़ूर के हुक्म से अपनी जगह वापस चला गया। इसी पाक जगह पर मस्जिदे शजरा मस्जिदे जिन के सामने थी। जो सऊदी दौर में इस तरह तोड़ी गई कि अब उसका कोई निशान नहीं पाया जाता।

मस्जिदे खैफ़ः– यह मिना की सबसे बड़ी मस्जिद है जिस में बहुत से पैग़म्बरों ने नमाज़ अदा की है। और इस मस्जिद में जहाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ठहरे थे वह जगह एक कुब्बा की शक्ल में महफ़ूज़ कर दी गई है। उस जगह पर नमाज़ पढ़ कर दुआ़ करनी चाहिए।

मस्जिदे कबशः– यह मुबारक जगह मिना में है जहाँ हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने शहज़ादे हज़रते इस्माईल अलैहिस्सलाम को ज़बह करने के लिए ले गये थे।

ग़ारे मुरसलातः- यह तारीख़ी जगह भी मिना में है। इस जगह "सूरए मुरसलात" उतरी थी। इस जगह की भी बड़ी फ़ज़ीलत है।

हाज़िरी बारगाहे सरकारे आज़म

सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम

JANNATI KAUN?

मदीना मुनव्वरह्

हाजियो आओ शहेनशाह का रौज़ा देखो

अज़:- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू

हाजियो आओ शहेनशाह का रौज़ा देखो।
काबा तो देख चुके काबा का काबा देखो।
रूक्ने शामी से मिटी वहशते शामे गुरबत।
अब मदीना को चलो सुब्हे दिल आरा देखो।
आबे ज़मज़म तो पिया ख़ूब बूझाई प्यासें।
आओ जूदे शहे कौसर का भी दरया देखो।
ज़ेरे मीज़ाब मिले ख़ूब करम के छींटे।
अबरे रहमत का यहाँ ज़ोर बरसना देखो।
धूम देखी है दरे काबा पे बेताबों की।
उनके मुश्ताक़ों में हसरत का तड़पना देखो।
ख़ूब आँखों से लगाया है ग़िलाफ़े काबा।
कस्रे महबूब के पर्दे का भी जलवा देखो।
वाँ मुतीओं का जिगर ख़ौफ़ से पानी पानी।
याँ सियह कारों का दामन पे मचलना देखो।
ज़ीनते काबा में था लाख उरूसों का बनाव।
जलवा फ़रमा यहाँ कौनैन का दूल्हा देखो।
मेहरे मादर का मज़ा देती है आग़ोशे हतीम।
जिन पे माँ बाप फ़िदा याँ करम उनका देखो
धो चुका ज़ुल्मते दिल बोसए संगे अस्वद।
ख़ाक बोसीये मदीना का भी रूतबा देखो।

कर चुकी रिफ़अते काबा पे नज़र परवाज़ें।
टोपी अब थाम के ख़ाके दरे वाला देखो।
ग़ौर से सुन तू रज़ा काबा से आती है सदा।
मेरी आँखों से मेरे प्यारे का रौज़ा देखो।

☆☆☆

बारगाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम में हाज़िरी की अहमियत

हज के मुबारक फ़र्ज़ से फुर्सत पाने के बाद गुनाहों से पाक व साफ़ होकर अब आप को सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िरी के लिए मदीना तय्यबा की तरफ़ जाना है। हाँ उस मुबारक शहर की तरफ़ चलना है कि जहाँ मुसलमानों की आँखों के नूर और उनके दिल के सुरूर जनाबे अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आराम फ़रमा हैं।

हुज़ूर के जितने एहसानात इस उम्मत पर हैं और जो उम्मीदें क़ब्र व हश्र में आप से वाबस्ता हैं उनके लिहाज़ से कुशादगी के बावजूद मक्का शरीफ़ से वापस आ जाना और मदीना तय्यबा हाज़िरी न देना सख़्त बदनसीबी और बेहद महरूमी है। इस लिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। "मन ज़ा-र क़ब्री व-ज-ब-त लहु शफ़ाअ़ती"

مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ

यानी जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उसके लिए मेरी शफ़ाअत जरूरी होगई। (दार कुतनी, बैहक़ी)

इमाम इब्ने हुम्माम अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने तहरीर फ़रमाया है कि इस हदीस की बिना पर पहला सफ़र क़ब्रे अनवर ही की ज़ियारत की नीयत से होना चाहिए।

दूसरी हदीस में हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया "मन ज़ारनी बअ्द वफ़ाती फ़-कअन्नमा ज़ारनी फ़ी हयाती" مَنْ زَارَنِیْ بَعْدَ وَفَاتِیْ فَكَاَنَّمَا زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ जिसने मेरी वफ़ात के बाद मेरी ज़ियारत की तो ऐसा है गोया कि उसने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की। (बैहक़ी)

JANNATI KAUN?

इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपनी क़ब्रे मुबारक में ज़िन्दा हैं। जैसा कि मिश्कात सफ़ा 121 में हदीस है कि "अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं रोज़ी दिए जाते हैं।" इसलिए जो शख़्स क़ब्रे अनवर पर हाज़िर हुआ तो गोया यह ऐसा ही है जैसा कि ज़ाहिरी ज़िन्दगी में कोई शख़्स हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर हुआ।

और इब्ने अदी कामिल की हदीस है कि हुज़ूर ने फ़रमाया "मन हज्जल बय-त व लम यज़ुरनी फ़क़द जफ़ानी" مَنْ حَجَّ الْبَیْتَ وَلَمْ یَزُرْنِیْ فَقَدْ جَفَانِیْ जिस शख़्स ने हज किया और मेरी ज़ियारत न की तो उसने मुझ पर ज़ुल्म किया।

इसीलिए उलमाए किराम ने फ़रमाया कि ज़ियारते

अक़दस क़रीब वाजिब के है। इसलिए हज से फ़ुर्सत पाने के बाद अब आप मदीना शरीफ़ की हाज़िरी के लिए तैयार हो जाइए।

नोटः- हज अगर फ़र्ज़ है तो हज के बाद मदीना शरीफ़ हाज़िर होना बेहतर है। हाँ अगर मदीना तय्यबा रास्ता में हो तो हाज़िरी दिये बिग़ैर गुज़र जाना सख़्त महरूमी है और अगर हज्जे नफ़्ल हो तो इख़्तियार है कि पहले हज से पाक व साफ़ हो कर हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर हो या पहले हाज़िरी दे कर उसे हज की मक़बूलियत व नूरानियत का वसीला बनाये।

कुछ लोग तरह तरह के बहाने बना कर मदीना तय्यबा जाने से रोकते हैं आप उन बदबख़्तों के फ़रेब में हरगिज़ न आयें। और कुछ लोग कहते हैं कि मस्जिदे नबवी की नीयत से जाओ हुज़ूर की बारगाह में हाज़िरी की नीयत से न जाओ तो आप उनकी भी हरगिज़ न सुनें कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी क़ब्रे अनवर की ज़ियारत करने की ताकीद फ़रमाई है। जैसा कि ऊपर की हदीसों में गुज़रा।

मदीना तय्यबा की तरफ़ रवानगी

मदीना तय्यबा की तरफ़ रवानगी से पहले आप अपना वह सामान अलग करलें जिसकी वहाँ कुछ दिनों ठहरने में ज़रूरत पड़ेगी और बाकी सामान अपने मुअ़ल्लिम (गाइड) के हवाले में देकर उसकी रसीद हासिल कर लें जिसे वह लोग जहाज़ की रवानगी से एक दो दिन पहले थोड़ी सी मज़दूरी पर

हिफ़ाज़त के साथ जद्दा पहुँचा देते हैं।

मदीना तय्यबा जाने के लिए बस का इन्तेज़ाम मुअल्लिम ही के ज़रिया किया जाता है अगर आप का क़ाफ़िला पाँच छे आदमियों का हो तो बस के बजाय टैक्सी वगैरा छोटी गाड़ियों से सफ़र करना बेहतर है। अगर्चे इस सूरत में कुछ पैसे ज़्यादा ख़र्च होंगे लेकिन रास्ता में बदर वग़ैरा की ज़ियारत के लिए आसानी होगी बस के ड्राइवर आम तौर पर हाजियों की कुछ नहीं सुनते।

बस में अपनी जगह महफ़ूज़ (रिज़र्व) कर लेने के बाद बड़े सामान को ऊपर चढ़ा दें कि अक्सर सामान बस पर चढ़ाने से रह जाते हैं। जिस से बड़ी परेशानी होती है अब आप इतमीनान से बस पर बैठकर ज़िक्र व दुरूद शरीफ़ में डूब जायें।

मक्का शरीफ़ से मदीना तय्यबा 198 मील यानी लगभग 320 किलो मीटर उत्तर है मगर मोटर के नये रोड से 444 किलो मीटर है। जो सात आठ घंटे में आसानी के साथ तय हो जाता है पहले मक्का शरीफ़ से जद्दा हो कर मदीना तय्यबा जाना पड़ता था लेकिन अब मक्का शरीफ़ से सीधा रास्ता मदीना मुनव्वरह के लिए बेहतरीन रोड बन गया है जिस से बड़ी आसानी हो गई है।

बदर शरीफ़:- मक्का शरीफ़ से मदीना तय्यबा तक बहुत सी मंज़िले आती हैं जिनमें बदर शरीफ़ ख़ास तरीक़े पर बयान के लाइक़ है। जो मदीना से लगभग 80 मील के पहले है। यह वही मुबारक जगह है कि जहाँ 17 रमज़ान सन् 2 हिजरी को इस्लाम

की सबसे पहली जंग लड़ी गई जिसमें मुसलमानों को शानदार कामयाबी हासिल हुई "अबू जेहल" वग़ैरा सत्तर काफ़िर मारे गये और सत्तर गिरिफ़्तार हुए और मुसलमान सिर्फ़ बारह शहीद हुए जो उसी जगह दफ़्न हैं। इस मुबारम जगह की जरूर ज़ियारत करें।

बदर शरीफ़ से बाहर निकल कर थोड़ी दूर पर रास्ता ही में हज़रते अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का मज़ारे मुबारक भी एक पहाड़ के दामन में है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की पेशीन गोई के मुताबिक़ तनहाई के हाल में है अगर मुमकिन हो तो उस जगह पर भी जरूर हाज़िरी दें।

मदीना मुनव्वरह में दाख़िला:- जब मदीना मुनव्वरह पर नज़र पड़े तो बेहतर यह है कि सवारी से उतर जायें। नंगे पैर सर झुका कर रोते हुए चलें और जितना भी ताज़ीम व अदब मुमकिन हो करें बल्कि हक़ तो यह है कि अगर वहाँ सर के बल चलें तो भी हक़ अदा नहीं हो सकता इसलिए जितना हो सके उसमें कोताही हरगिज़ न करें।

जब गुंबदे ख़ज़रा पर निगाह पड़े तो दुरूद व सलाम की ख़ूब ज़्यादती करें और जब शहरे मुक़द्दस तक पहुँच जायें तो महबूबे किबरिया ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के जलाल व जमाल के ख़्याल में डूब जायें और शहर के दरवाज़ा बाबे अंबरिया में दाख़िल होते वक़्त यह दुआ पढ़े।

दुआ:- बिस्मिल्लाहि। माशाअल्लाहु लाकूव-त इल्ला बिल्लाहि। रब्बे

अदख़िलनी मुदख़-ल सिद्क़िंव व अख़रिजनी मुख़-र-ज सिद्क़िन। अल्लाहुम्मफ़तहली अबवा-ब रहमतिक वर जुक़नी मिन ज़ियारति रसूलि-क सललल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम मा रज़क़-त औलियाअ-क व अह-ल ताअतिक। व अन क़िज़नी मिनन्नारी। वग़्फ़िरली वरहमनी या ख़ै-र मस्ऊल।

بِسْمِ اللّٰهِ ۰ مَا شَاءَ اللّٰهُ ۰ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۰ رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَارْزُقْنِیْ مِنْ زِیَارَةِ رَسُوْلِكَ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ سَلَّمَ مَارَزَقْتَ اَوْلِیَائَكَ وَ اَهْلَ طَاعَتِكَ ۰ وَ اَنْقِذْنِیْ مِنَ النَّارِ ۰ وَ اغْفِرْلِیْ وَ ارْحَمْنِیْ یَا خَیْرَ مَسْئُوْلٍ ۰

अर्थः- "अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो अल्लाह ने चाहा नेकी की ताक़त नहीं मगर अल्लाह की मदद से ऐ रब सच्चाई के साथ मुझको दाख़िल फ़रमा और सच्चाई के साथ बाहर निकाल। इलाही तू अपनी रहमत के दरवाज़े मेरे लिए खोल दे और अपने रसूल सललल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से मुझे वह नसीब फ़रमा जो अपने महबूब और फ़रमांबरदार बंदों के लिए तूने नसीब फ़रमया। और मुझे जहन्नम से नेजात (छुटकारा) दे। मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा ऐ बेहतर सवाल किये गये"

शहर में दाख़िल होने के बाद सबसे पहले मस्जिदे नबवी में दाख़िल होने की कोशिश करें लेकिन पहले उन तमाम ज़रूरियात से फ़ारिग़ हो जायें कि जिससे दिल बटने का ख़तरा

हो। फिर गुस्ल करें तो बेहतर है और यह न हो सके तो वज़ू और मिसवाक के बाद नए या पुराने पाकीज़ा कपड़े पहनें और ख़ुशबू लगा कर फ़ौरन आस्तानए अक़दस की तरफ़ निहायत गिड़गिड़ाते व रोते हुए चल पड़ें और जिस दरवाज़े से चाहें दाख़िल हों मगर बाबे जिबरील से दाख़िल होना ज़यादा बेहतर है। जब मस्जिद के दरवाज़ा पर पहुंचें तो अस्सलातु वस्स्लामु अलै-क या रसूलल्लाह। اَلصَّلَاةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ अर्ज़ करें। और थोड़ा ठहरें जैसे सरकारे दोआलम से हाज़िरी की इजाज़त माँगते हैं फिर "अल्लाहुम्मफ़तहली अबवा-ब रहमतिक" اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ पढ़ कर पहले दाहिना पाँव मस्जिद में रखकर दाख़िल हों। और वक़्ते मकरूह न हो तो जन्नत की क्यारी में दो रकअ्त नमाज़ तहयतुल मस्जिद अदा करें पहली रकअ्त में सूरयए फ़ातिहा के बाद "कुलया अय्युहल काफ़िरून" قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और दूसरी में "कुलहुवल्लाहु अहद" قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ें फिर सज्दए शुक्र अदा करें कि अल्लाह तआ़ला ने इतनी बड़ी नेमत अता फ़रमाई।

जन्नत की क्यारी:- मस्जिदे नबवी का वह हिस्सा जो मिम्बर शरीफ़ और क़ब्रे अनवर के बीच है उसे जन्नत कि क्यारी कहते हैं कि सरकरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "कि मेरी क़ब्र और मिम्बर के बीच जो जगह है वह जन्नत की क्यारीयों में से एक क्यारी है"।

इस तरफ़ रौज़े का नूर उस सम्त मिम्बर की बहार
बीच में जन्नत की प्यारी प्यारी क्यारी वाह वाह।

तहयतुल मस्जिद और सज्दए शुक्र से फ़ुर्सत पाकर मुकम्मल अदब में डूबे हूए गर्दन झुकाये लरज़ते काँपते हुए गुनाहों से शरमिंदा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के अफ़्व (मआफ़ी) व करम की उम्मीद रखते हुए पूरब कि तरफ़ से मवाजहा शरीफ़ (क़दमों) में हाज़िर हों।

मुबारक क़ब्रों की तरतीबः—वाज़ेह हो कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा की मुबारक क़ब्रों की तरतीब और सूरत में सात रिवायतें आई हैं जिनको अल्लामा सम्हूदी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने वफ़ाउलवफ़ा में तफ़सील के साथ बयान फ़रमाया है। उन में जो सूरत ज़्यादा मशहूर है वह यह है।

सम्त क़िब्ला दक्षिण

हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम

पूरब | हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु | पश्चिम

हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु

उत्तर

यह मुबराक मज़ारात हुजरए आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के अन्दर हैं फिर सुलतान क़ाइतबाई 813-902 हिजरी मुताबिक़ 1410-1496 ई. की बनाई हुई पंज गोशा दीवार है।

उसके बाद सुलतान नूररूद्दीन ज़ंगी (512-580 हिजरी मुताबिक़ 1118-1184 ई.) की बनाई हुई सीसे की दीवार है जो ज़मीन के नीचे है नज़र नहीं आती उसके बाद जाली मुबारक है जिसमें तीनों मज़ारों में आराम फ़रमाने वालों के चेहरए अनवर के सामने निशान के तरीक़े पर तीन गोले बनाये गये हैं। जो गोला हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के चेहरए अनवर के सामने बनाया गया है उसे "मुवाजिहा शरीफ़" कहा जाता है।

आप मुवाजिहा शरीफ़ से कम से कम चार हाथ की दूरी पर खड़े हों और यक़ीन जानें की हुज़ूर सलाम व कलाम को सूनते हैं बल्कि दिलों के ख़तरों से वाक़िफ़ हैं और वैसे ही ज़िन्दा हैं जैसे वफ़ात शरीफ़ से पहले थे।

JANNATI KAUN?

हज़रते शैख़ अब्दूल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने अपने मकतूब सुलूको अक़रबुस्सुबुल बित्तवज्जुहे इला सय्यदि र्रुसुल मअ अख़्बारुल अखियार प्रकाशक रहीमिया देवबंद पेज 161 में फ़रमाया "उलमाए उम्मत में इतने इख़्तिलाफ़ात व कसरते मज़ाहिब के बावजूद किसी शख़्स को इस मसअला में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हयात (दुनियवी) की हक़ीक़त के साथ क़ाइम व बाक़ी हैं। इस हयाते नबवी में मजाज़ की आमेज़िश मिलावट और तावील का गुमान नहीं है। और उम्मत के आमाल पर हाज़िर व नाज़िर हैं और हक़ीक़त के तलबगारों के लिए और उन लोगों के लिए जो आँ

हज़रत की जानिब मुतवज्जेह होते हैं हुज़ूर उनको फैज़ बख़्शने वाले और उनके मुरब्बी हैं।"

सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम चूंकि मज़ारे पुरअनवार में क़िब्ला रूख़ जल्वा फ़रमा हैं। इस लिए रूये अनवर के सामने क़िब्ला की तरफ़ पीठ करके खड़े हों और नमाज़ की तरह हाथ बांध कर खड़े हों। "फ़तावा आलमगीरी जिल्द 1 प्रकाशक मिस्र पृष्ठ 248 में है जिसका अर्थ यह है" हुज़ूर के सामने ऐसा खड़ा हो जैसे नमाज़ में खड़ा होता है।

मगर ख़बरदार! जाली शरीफ़ को चूमने या हाथ लगाने से बचें कि अदब के ख़िलाफ़ है। (अनवारूल बुशारह, बहारे शरीअत)

सलाम पढ़ने का तरीक़ा:- अब अल्हमदु लिल्लाह दिल की तरह आप का मुंह भी उस पाक जाली की तरफ़ हो गया जो महबूबे किबरिया सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की आरामगाह है तो निहायत अदब व एहतिराम के साथ अज़मत व जलाल का लिहाज़ करते हुए धीमी आवाज़ से सलाम पढ़ें बिल्कुल आहिस्ता न पढ़ें और न ज़ोर से चीखे कि उनकी बारगाह में आवाज़ ऊँची करने से आमाल अकारत हो जाते हैं सलात व सलाम के अल्फ़ाज़ यह हैं "अस्सलामु अलै-क अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। अस्सलातु वस्सलामु अलै-क गा रसूलल्लाह। अस्सलातु वस्सलामु अलै-क या नबीयल्लाह। अस्सलातु वस्सलामु अलै-क या हबीबल्लाह। अस्सलातु वस्सलामु

अलै-क या ख़ै-र ख़लक़िल्लाह। अस्सलातु वस्सलामु अलै-क या नूरिम्मिन्नूरिल्लाह" अस्सलातु वस्सलामु अलै-क या अरू-स ममलिकतिल्लाह व अला अली-क व अस्हाबि-क व उम्मति-क अजमईन।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُه اَلصَّلَاةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ اَلصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ وَ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللّٰهِ اَلصَّلَاةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللّٰهِ اَلصَّلَاةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نُورًا مِنْ نُورِ اللّٰهِ۔ اَلصَّلَاةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَرُوسَ مَمْلَكَةِ اللّٰهِ۔ وَ عَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ وَ اُمَّتِكَ اَجْمَعِيْنَ۔

तरजमा:- ऐ नबी आप पर सलाम हो। और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें ऐ अल्लाह के रसूल! आप पर दुरूद व सलाम हो। ऐ अल्लाह के नबी आप पर दुरूद व सलाम हो। ऐ अल्लाह के महबूब! आप पर दुरूद व सलाम हो। ऐ अल्लाह की मख़्लूक़ में सब से बेहतर! आप पर दुरूद व सलाम हो। ऐ अल्लाह के नूर में से एक नूर! आप पर दुरूद व सलाम हो। ऐ अल्लाह की सलतनत के दूल्हा! आप पर दुरूद व सलाम हो। और आप की आल व अस्हाब और उम्मत पर सब पर।

सलात व सलाम के लिए यह अल्फ़ाज़ मुक़र्रर नहीं हैं आप दुसरे लफ़्ज़ों के साथ भी सलाम पेश कर सकते हैं अगर इस क़िस्म के लफज़ याद न हो सकें या उनके माना ज़ेहन में न रहें तो जितना हो सके अस्सलातु वस्सलामु अलै-क या रसूलल्लाह

पढ़ें और बेहतर है कि सत्तर बार से कम न पढ़ें और बार बार यह भी अर्ज़ करें अस्अलुकश्शफ़ाअ-त या रसूलल्लाह। أَسْــئَــلُــكَ الشَّفَــاعَةَ يَــا رَسُــوْلَ اللّٰهِ ऐ अल्लाह के रसूल मैं आपकी शफ़ाअत माँगता हूँ।

फिर अगर किसी ने हुज़ूर की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ करने के लिए कहा है तो उसकी तरफ से इस तरह से सलाम पेश करें। "अस्सलामु अलै-क या रसूलल्लाहि मिन फुलाँनिइब्ने फुलानिन यशतशफ़िओ बि-क इला रब्बि-क फशफ़अ्लहू व लि जमीइलमुस्लिमीन।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مِنْ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ يَسْتَشْفِعُ بِكَ اِلٰى رَبِّكَ فَاشْفَعْ لَهٗ وَلِجَمِيْعِ الْمُسْلِمِيْنَ۔

JANNATI KAUN?

तरजमा:- ऐ अल्लाह के रसूल आप पर सलाम हो फ़लाँ इब्ने फ़लाँ की तरफ़ से जो आपके रब के पास आपकी शफ़ाअत चाहता है तो उसकी और तमाम मुसलमानों की शफ़ाअत फ़रमाइए।

फ़लाँ इब्ने फ़लाँ की जगह उस शख़्स का नाम वलदियत के साथ लें जिसने सलाम अर्ज़ करने को कहा है।

अगर अरबी में सलाम न पेश कर सकें तो अपनी ज़बान में पेश करें

इस रिसाला के पढ़ने वालों से पुरख़ुलूस गुज़ारिश है कि जब हुज़ूर की बारगाह में हाज़िरी नसीब हो तो इस गुनहगार की

ज़िन्दगी में या मौत के बाद कम से कम तीन बार मुवाजहए अक़दस में यह अल्फ़ाज़ ज़ुरूर अर्ज़ करें "अस्सलामु अलै-क या रसूलल्लाह मिन जलालिद्दीन अहमदबाने जान मुहम्मद यस्तशफ़िओ बि-क इला रब्बि-क फ़शफ़अ् लहु वलिजमीइल मुस्लिमीन।"

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ مِنَ جَلَالِ الدِّيْنِ اَحْمَدَ بْنِ جَانْ مُحَمَّد يَسْتَشْفِعُ بِكَ اِلٰى رَبِّكَ فَاشْفَعْ لَهٗ وَ لِجَمِيْعِ الْمُسْلِمِيْنَ ۔

तरजमाः- ऐ अल्लाह के रसूल! आप पर सलाम हो जलाजुद्दीन अहमद इब्ने जान मुहम्मद की तरफ़ से जो आप के रब के पास आप की शफ़ाअत चाहता है तो उसकी और तमाम मुसलमानों की शफ़ाअत फ़रमाइए! याद आजाए तो नाचीज़ अलाउद्दीन वल्द मुहम्मद याकूब का भी सलाम अर्ज़ करदें जिसने इस कीताब की हिन्दी की है।

अगर बहुत से लोगों ने सलाम अर्ज़ करने को कहा है और उनके नाम याद नहीं रहे तो सब की तरफ़ से इस तरह सलाम अर्ज़ करें

"अस्सलामु अलै-क या रसूलल्लाहि मिन जमीए मन औसानी बिस्सलामि अलैक" اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مِنْ جَمِيْعِ مَنْ اَوْصَانِىْ بِالسَّلَامِ عَلَيْكَ **अर्थः-** ऐ अल्लाह के रसूल आप पर सलाम हो उस शख़्स की जानिब से कि जिसने मुझ को आप की बारगाह में सलाम अर्ज़ करने को कहा।

सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम पर

इस तरह सलाम पेश कर देने के बाद अपनी दाहिनी तरफ़ एक हाथ के बराबर हट कर दूसरे दायरा के सामने आ जायें और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के चेहरए नूरानी के सामने खड़े होकर इस तरह सलाम अर्ज़ करें।

"अस्सलामु अलै-क या ख़लीफ़-त रसूलिल्लाहि। अस्सलामु अलै-क या वज़ी-र रसूलिल्लाहि। अस्सलामु अलै-क या साहि-ब रसूलिल्लाहि फ़िल ग़ारि व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू"

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيفَةَ رَسُولِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَزِيرَ رَسُولِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ رَسُولِ اللّٰهِ فِى الْغَارِ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُه

तरजमा:- ऐ रसूलुल्लाह के ख़लीफ़ा आप पर सलाम हो। ऐ रसूलुल्लाह के वज़ीर आप पर सलाम हो। ऐ ग़ारे सौर में रसूलुल्लाह के साथी आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें।

फिर दाहिनी तरफ़ एक हाथ के बराबर हट कर तीसरे दायरा के सामने आ जायें और हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के सामने इस तरह सलाम अर्ज़ करें "अस्सलामु कलै-क या अमीरल मोमिनीन। अस्सलामु अलै-क या मुतम्मिमल अरबईन। अस्सलामु अलै-क या इज़्ज़ल इस्लामि वल मुस्लिमीन व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू"

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُتَمِّمَ الْاَرْبَعِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ

يَا عِزَّ الْإِسْلَامِ وَ الْمُسْلِمِيْنَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ ۔

तरजमा:- ऐ अमीरूल मोमिनीन! आप पर सलाम हो। ऐ चालीस की गिनती पूरी करने वाले आप पर सलाम हो। ऐ इस्लाम और मुसलमानों की इज़्ज़त! आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें।

फिर एक बीता बाईं तरफ़ पलटें और हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ व हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हुमा के बीच खड़े होकर इस तरह सलाम अर्ज़ करें। "अस्सलामु अलैकुमा या ख़लीफ़तय रसूलिल्लाहि अस्सलामु अलैकुमा या वज़ीरय रसूलिल्लाहि अस्सलामु अलैकुमा या ज़जीअय रसूलिल्लाहि व रहमतुल्लहि व बरकातुहू। अस्अलुकुम श्शफ़ाअ-त इन्-द रसूलिल्लाहि सलल्लाहु तआ़ला अलैहि व अ़लैकुमा व बारि-क व सल्लम।"

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا خَلِيْفَتَيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا وَزِيْرَيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا ضَجِيْعَيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ ۔ اَسْئَلُكُمَا الشَّفَاعَةَ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ عَلَيْكُمَا وَ بَارِكْ وَ سَلَّمْ ۔

अर्थ:- ऐ रसूलुल्लाह के ख़लीफ़ा! आप दोनों पर सलाम। ऐ रसूलुल्लाह के वज़ीर! आप दोनों पर सलाम। ऐ रसूलुल्लाह के पहलू में आराम करने वाले आप दोनों पर सलाम और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें आप दोनों हज़रात से मैं सवाल करता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि

वसल्लम के हुज़ूर हमारी सिफ़ारिश कीजिए। अल्लाह तआ़ला उनपर और आप दोनों पर दुरूद व बरकत व सलाम नाज़िल फ़रमाये।

फिर इसके बाद दोबारा हुज़ुर के सामने हाज़िर होकर हक़ तआला की हम्द व सना बयान करें। दुरूद शरीफ़ पढ़ें। फिर हुज़ूर के वसीला से अपने लिए और अपने वालिदैन। असातज़ा, मशाइख़, अहबाब, व रिश्तेदारों और सब मोमिनीन के लिए दुआ़ करें और सब के लिए शफ़ाअ़त की दरख्वास्त करें और बेहतर यह है कि सलाम के बाद यह कहें।

"या रसूलल्लाहि क़द क़ालल्लाहु तआ़ला व लौ अननहुम इज़्ज़लमू अनफुसहुम जाउक फ़स्तग़फ़रूल्लाह व स्तग़-फ़-र-लहुमुर्रसुलु ल-व-ज-दुल्ला-ह तव्वाबर्रहीमा फ़जेअ्ना-क ज़ालिमी-न लिअनफुसिना मुस्तग़फ़िरी-न लिज़ुनूबिना फ़शफ़अ् लना इला रब्बिना वस्अलहु अय्युमीतना अला सुन्नति-क व अैंय्यहशुरना फ़ी ज़ुमरतिक।"

يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَدْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَلَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا فَجِئْنَاكَ ظَالِمِيْنَ لِاَنْفُسِنَا مُسْتَغْفِرِيْنَ لِذُنُوْبِنَا فَاشْفَعْ لَنَا اِلٰى رَبِّنَا وَ اَسْئَلْهُ اَنْ يُّمِيْتَنَا عَلٰى سُنَّتِكَ وَ اَنْ يَّحْشُرَنَا فِىْ زُمْرَتِكَ ٥

तरजमा:– या रसूलल्लाह! बेशक अल्लाह तआला ने फ़रमाया

है कि अगर वह लोग कि जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है आपके पास आकर अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़फ़ार करें और रसूलुल्लाह भी उन के लिए बख़्शिश की दुआ करें। तो ज़रूर अल्लाह को बहुत ज़्यादा तौबा क़बूल करने वाला और मेहरबान पायेंगे। तो हम आप की ख़िदमत में अपनी जानों पर ज़ुल्म करके हाज़िर हुए हैं इस हाल में कि हम अपने गुनाहों से इस्तिग़फ़ार करने वाले हैं। तो हमारे रब से हमारी सिफ़ारिश फ़रमाइए और अल्लाह तआ़ला से दुआ फ़रमाइए कि हम को हुज़ूर के तरीक़े पर मौत दे और क़ियामत के दिन हमको आप के गिरोह में उठाए।

फिर मिम्बर शरीफ़ के पास दुआ करें फ़िर अगर वक़्ते मकरूह न हो तो जन्नत की क्यारी में दो रकअ्त नमाज़ पढ़ कर दुआ करें इसके बाद इस्तवानए हन्नाना, इस्तवानए हज़रते आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा, इस्तवानए अबू लुबाबा, इसतवानए अली, इस्तवानए वफ़ूद, इस्तवानए तहज्जुद और इसतवानए जिबरील के पास नमाज़ पढ़ कर दुआ करें कि यह सब बरकतों की जगहें हैं।

फिर अपने रूकने की जगह पर आ जायें और जब तक मदीना-शरीफ़ में हाज़िरी नसीब रहे एक सांस बेकार न जाने दें अपनी ज़रूरियात से फ़ारिग़ होकर अक्सर मस्जिद शरीफ़ में एतिकाफ़ की नीयत से वज़ू के साथ हाज़िर रहें। नमाज़, तिलावते कुर्आने पाक और दुरूद शरीफ़ पढ़ने में सारा वक़्त

गुज़ारें कि यहाँ की एक नेकी पचास हज़ार के बराबर लिखी जाती है। जहाँ तक हो सके यहाँ के रहने वालों की ख़ास कर उन लोगों की जो ज़ुरूरतमंद हैं रूपये पैसे और कपड़े वग़ैरा से मदद करें हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद या कम से कम सुबह व शाम मुवाजिहा शरीफ़ में सलाम अर्ज़ करने के लिए हाज़िरी देते रहें मगर औरतें भीड़ में न घुसें उनको रात के वक़्त सलाम के लिए हाज़िर होना बेहतर है। शहर में या शहर से बाहर जहाँ कहीं हुज़ूर के गुंबद पर निगाह पड़े फ़ौरन दस्त बस्ता (हाथ बांध कर) उधर चेहरा करके सलात व सलाम अर्ज़ करें बेग़ैर इसके हरगिज़ न गुज़रें कि ख़िलाफ़े अदब है।

मस्जिदे नबवी के फ़ज़ाइल

हज़रते अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे अक़दस सललल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ना इलावा मस्जिदे हराम के दूसरी मस्जिदों की हज़ार नमाज़ों से बेहतर है। (बुख़ारी, मुस्लिम) और इब्ने माजा की एक रिवायत में पचास हज़ार नमाज़ों का सवाब ज़िक्र किया गया है।

हज़रते अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तसलीम ने फ़रमया कि जो शख़्स मेरी मस्जिद में चालीस नमाज़ें अदा करे और कोई नमाज़ उसकी छूटी न हो तो उसके लिए दोज़ख़ और निफ़ाक़ से आज़ादी

लिखी जाती है।(अहमद, तबरानी)

हज़रते अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स मेरी इस मस्जिद में इस गरज़ से आए कि नेकी करेगा नेकी सीखेगा या सिखाएगा तो उसका मरतबा इतना होगा जितना कि खुदा की राह में जिहाद करने वाले का मरतबा होता है। (इब्ने माजा, बैहक़ी)

हज़रते अबू उमामा और सहल इब्ने हनीफ़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रिवायत है कि नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फ़रमाया कि जो शख़्स वुज़ू करके मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के इरादा से निकला और उस में नमाज़ पढ़ी तो उसकी नमाज़ एक हज के बराबर है।

JANNATI KAUN?

मस्जिदे नबवी की तौसीअ् (विस्तार) की तारीख़

सन् 1 हिजरी मुताबिक़ सन् 623 ई. में मस्जिदे नबवी की बुनियाद रखी गई जिसके विस्तार का संक्षिप्त इतिहास निम्न लिखित है।

☆☆☆

☆ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के ज़माने में 2475 वर्ग. मी.

☆ हज़रते उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का इज़ाफ़ा 1100 वर्ग. मी.

JANNATI KAUN?

☆ हज़रते उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का इज़ाफ़ा 496 वर्ग. मी.

☆ ख़लीफ़ा वलीद बिन अब्दुल मलिक का इज़ाफ़ा 3369 वर्ग. मी.

☆ ख़लीफ़ा मेहंदी का इज़ाफ़ा..... 2450 // //

☆ मलिक अशरफ़ क़ाइतबाई का इज़ाफ़ा .... 120 // //

☆ सुल्तान अब्दुल मजीद ख़ाँ का इज़ाफ़ा..... 1293 // //

☆ मौजूदा हुकूमत का इज़ाफ़ा..... 5024 // //

☆☆☆

कुल रक़बा क्षेत्र 16327 वर्ग मीटर

मदीना मुनव्वरह की दूसरी ज़ियारत की जगहें

जन्नतुल बक़ीअ़:- जन्नतुल बक़ीअ़ जो मदीना शरीफ़ का क़ब्रिस्तान है उसकी ज़ियारत सुन्नत है इस क़ब्रिस्तान में दस हज़ार सहाबए किराम और बहुत ज़्यादा बड़े बड़े औलियाए किराम और उलामाए इस्लाम दफ़्न हैं। रौज़ए अक़दस की ज़ियारत के बाद सबसे पहले जन्नतुल बक़ीअ में हाज़िर हों। जन्नतुल बक़ीअ़ में जो लोग आराम फ़रमा हैं उनकी ज़ियारत की नीयत से जायें और यह पढ़ें "अस्सलामु अलैकुम अह-ल दारे क़ौमिम्मोमिनीन अनतुमलना सलफ़ुन व इन्ना इनशाअल्लाहु बिकुम लाहिकून। अल्लाहुम्मग़फ़िर लिअहलिलबक़ीये बक़ीइलगरक़दि। अल्लाहुम्मग़फ़िर लना व लहुम।"

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ دَارِ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ. اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّ اِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ ط اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَهْلِ الْبَقِيْعِ بَقِيْعِ الْغَرْقَدِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَ لَهُمْ.

तरजमा:- ऐ क़ौमे मोमिनीन के घर वालो तुम पर सलाम हो तुम हमसे पहले जाने वाले हो। और हम इन्शाअल्लाह तुम से मिलने वाले हैं। ऐ अल्लाह! बक़ीअ् वालों की बख़्शिश फ़रमा ऐ अल्लाह! हमें और इन्हें बख़्श दे।

फिर जो कुछ हो सके पढ़ कर ईसाले सवाब करें उसके बाद बक़ीअ् शरीफ़ में जो मशहूर मज़ारात हैं। उनकी ज़ियारत करें। अहले बक़ीअ् में सबसे बेहतर हज़रते उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उनके मज़ार पर हाज़िर हो कर इस तरह सलाम अर्ज़ करें। "अस्सलामु अलै-क या अमीरल मोमिनीन।

अस्सलामु अलै-क या साहिबल हिजरतैन। अस्सलामु अलै-क या मुजहहि-ज़ा जैशिल उसरति बिन्नक़दि वल ऐन जज़ाकल्लाहु अन रसूलिही व अन साएरिल मुस्लिमीन व रज़ियल्लाहु अन-क व अनिस्सहाबति अजमईन।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۔ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الْهِجْرَتَيْنِ ۔ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُجَهِّزَ جَيْشِ الْعُسْرَةِ بِالنَّقْدِ وَ الْعَيْنِ جَزَاكَ اللّٰهُ عَنْ رَسُوْلِهٖ وَ عَنْ سَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ وَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْكَ وَ عَنِ الصَّحَابَةِ اَجْمَعِيْنَ ۔

तरजमाः- ऐ अमीरूलमोमिनीन! आप पर सलाम ऐ दो हिजरत करने वाले आप पर सलाम। ऐ ग़ज़वए तबूक की नक़्द व जिन्स से तैयारी करने वाले आप पर सलाम। ख़ुदाए तआ़ला आपको अपने रसूल और तमाम मुसलमानों की तरफ़ से बदला दे और आप से और तमाम सहाबा से अल्लाह राज़ी हो।

उम्मुल मोमिनीन हज़रते ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा का मज़ारे मुबारक मक्का शरीफ़ में है और उम्मुलमोमिनीन हज़रते मैमूना रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा का मज़ारे पाक मक़ामे सरिफ़ में है बाक़ी तमाम पाक बीवियाँ इसी जन्नतुल बक़ीअ् में दफ़्न हैं। और हुज़ूर की दाई हलीमा और हुज़ूर के साहेबज़ादे हज़रते सय्यिदिना इब्राहीम, हज़रते फ़ातिमा ज़हरा और हुज़ूर की दूसरी साहेबज़ादियाँ, हज़रते सय्यिदिना अब्बास, हज़रते सय्यिदिना इमामे हसन, सरे मुबारक सय्यिदिना इमाम हुसैन इमाम ज़ैनुलआबिदीन, इमाम मुहम्मद बाक़र, इमामे जाफ़र सादिक़, हुज़ूर के रज़ाई भाई हज़रते उस्मान इब्ने मज़ऊन, हुजूर की फूफी हज़रते सफ़ीयह, हज़रते अली की वाल्दा फ़ातिमा बिन्ते

असद,, अब्दुर्रहमान इब्ने औफ़, सअद बिन वक़ास, अक़ील बिन अबू तालिब, अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद और साहिबे मज़हब इमाम मालिक वग़ैरा इसी क़बरिस्तान में आराम फ़रमा हैं सब की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ करें और जन्नतुल बक़ीअ् के कम्पाउन्ड के बाहर उत्तर कि तरफ़ हज़रते अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु दफ़्न हैं वहाँ भी हाज़िर होकर सलाम अर्ज़ करें।

शुहदाये उहदः- 17 शव्वाल सन् 3 हिजरी मुताबिक़ सन् 625 ई. में उहद पहाड़ जो मदीना शरीफ़ से उत्तर कि तरफ़ तीन मील की दूरी पर है। उसके दामन में हक़ व बातिल की ज़बरदस्त जंग हुई जिसमें 33 काफ़िर मारे गये और 70 मुसलमान शहीद हुए। इसी जगह सय्यदुश्शुहदा हज़रते अमीर हम्ज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का मज़ारे मुबारक है। उनके क़रीब में हज़रते अब्दुल्लाह बिन ज़ुहश और हज़रते मुसअ़ब बिन उमैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा भी आराम फ़रमा हैं और लगभग दो सौ हाथ की दूरी पर पश्चिमद कि तरफ़ बाक़ी शुहदाए किराम दफ़्न हैं यहाँ भी हाज़िर होकर सब पर सलाम अर्ज़ करें।

दारे सय्यिदिना अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुः- यह वह जगह है जहाँ हुज़ूर की ऊँटनी बैठी थी और इसी जगह हुज़ूर ने मदीना मुनव्वरह में सबसे पहले क़ियाम फ़रमाया था। यह जगह मस्जिदे नबवी से बिल्कुल क़रीब है।

मशहदे सय्यिदिना उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अनहुः- यह वह जगह है जहाँ बाग़ियों ने हज़रते उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को शहीद किया था। यह जगह भी हरमे नबवी से मिली हुई है।

मदीना मुनव्वरह की मस्जिदें

मस्जिदे क़ुबा:- यह मस्जिद मदीना शरीफ़ के दक्षिण कि तरफ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की मस्जिद से लगभग 4 किलो मीटर की दूरी पर है यह मुसलमानों की सब से पहली मस्जिद है जिसको हुज़ूर और सहाबए किराम ने अपने मुबारक हाथों से तामीर फ़रमाया है। मस्जिदे हराम, मस्जिदे नबवी और मस्जिदे अक्सा के बाद यह मस्जिद सब से अफ़ज़ल है। हदीस शरीफ़ में है कि इसमें दो रक़अ़त का सवाब उमरा की तरह है।

मस्जिद जुमा:- यह मस्जिद क़ुबा के नये रास्ते से पूरब कि तरफ़ है। पहला जुमा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इसी जगह अदा फ़रमाया था।

मस्जिदे ग़मामा:- इस जगह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ईदैन की नमाज़ पढ़ते थे इसी लिए इसको "मस्जिदे मुसल्ला" भी कहते हैं।

मस्जिदे अबू बक्र (रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु):- यह मस्जिद मस्जिदे ग़मामा के क़रीब उत्तर कि तरफ़ है।

मस्जिदे अ़ली(रजियल्लाहु तआ़ला अन्हु):- यह मस्जिद भी मस्जिदे ग़मामा के क़रीब है।

मस्जिदे बग़ला:- यह मस्जिद जन्नतुल बक़ीअ़ के पूरब कि तरफ़ है। मस्जिद के क़रीब एक पत्थर में सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वस्ल्लम के ख़च्चर की खुर का निशान

है इसी वजह से उसको "मस्जिदे बग़ला" कहते हैं।

मस्जिदे इजाबाः- यह मस्जिद जन्नतुल बक़ीअ् से उत्तर कि तरफ़ है। इस जगह बनू मुआ़विया बिन मालिक बिन औफ़ रहते थे। एक दिन हुज़ूर यहाँ तशरीफ़ लाये और नमाज़ पढ़ कर देर तक दुआयें कीं जो मक़बूल हुईं।

मस्जिदे उबईः-(रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु) यह मस्जिद जन्नतुल बक़ीअ् के नज़दीक है इस जगह हज़रते उबई इब्ने क-अ्ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का मकान था। रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम अक्सर यहाँ तशरीफ़ लाते थे और नमाज़ पढ़ते थे।

मस्जिदे सुक़्याः- बाबे अंबरिया के क़रीब रेल्वे स्टेशन के अन्दर एक कुब्बा है जिसको कुब्बतुर्रऊस कहते हैं। उसमें एक कुआँ है जिसको बीरूस्सुक़या कहते हैं। सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वए बद्र को तशरीफ़ ले जाते हुए इस जगह नमाज़ अदा फ़रमाई थी।

मस्जिदे अह्ज़ाबः- यह मस्जिद सिलअ् पहाड़ी के पश्चिमी किनारे पर है । जंगे ख़नदक़ के मौक़ा पर इसी जगह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की दुआ क़बूल हुई और मुसलमानों को कामयाबी हासिल हुई इसलिए इसको मस्जिदे फ़तह भी कहते हैं। इसी के क़रीब चार मस्जिदें और हैं। एक का नाम मस्जिदे अबू बक्र, दूसरी का नाम मस्जिदे उमर, तीसरी का नाम मस्जिदे उस्मान और चौथी का नाम मस्जिदें सलमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अनहुम, इनसब को मसाजिदे ख़मसा कहते

हैं। यह जगहें अस्ल में जंग के मोर्चे थे। चारों सहाबए किराम एक एक मोर्चा पर मुक़र्रर थे। उन हज़रात ने यहाँ नमाज़ें भी पढ़ीं जिसके सबब यह मोर्चे मस्जिद बन गये।

मस्जिदे बनी हरामः- यह मस्जिद सिलअ् पहाड़ की धाटी में मस्जिदे अहज़ाब को जाते हुए दाहिनी तरफ़ है। रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने इस जगह भी नमाज़ पढ़ी है। इसके क़रीब एक ग़ार है जिस में हुज़ूर पर वही नाज़िल हुई थी और जंगे ख़नदक़ के मौक़ा पर इस ग़ार में रात को हुज़ूर आराम फ़रमाते थे। इसकी भी ज़ियारत करनी चाहिए।

मस्जिदे जुबाबः- यह मसिजद जबले जुबाब पर है जो उहद के रास्ता में सनीयतुलविदाअ् से उतर कर उहद के रास्ता के बाईं तरफ़ है। जंगे खनदक़ के मौक़ा पर इस जगह हुज़ूर का ख़ेमा लगाया गया था।

मस्जिदे क़िबलतैनः- वादिये अक़ीक़ के क़रीब एक टीला पर है। इसी जगह बैतुल मुक़द्दस की जगह बैतल्लाह शरीफ़ किब्ला मुक़र्रर हुआ इसी लिए इसको मस्जिदे क़िबलतैन कहते हैं।

मस्जिदे फ़ज़ीहः- अवाली के पूरबी हिस्सा में है। इस जगह "यहूद बनी नुज़ैर" के मुहासिरह के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ी थी इसका नाम "मस्जिदे शम्स" भी है जिसको मौजूदा हुकूमत ने ढा दिया है।

मस्जिदे बनी कुरैज़ाः- मस्जिदे फ़ज़ीह से पूरब थोड़ी सी दूरी पर है। "यहूद वनी कुरैज़ा" के घेराव के वक़्त हुज़ूर ने इसी जगह ठहराव किया था और यहूद के बनाये हूए ह-कम हज़रते

सअ्द बिन मआज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने इसी जगह फ़ैसला सुनाया था कि मर्दों को क़त्ल कर दिया जाये औरतों और बच्चों को क़ैद किया जाये।

मस्जिदे इब्राहीमः-(रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु) यह मस्जिद "बनी क़ुरैज़ा" से उत्तर कि तरफ़ है। इस जगह हुज़ूर के साहेबज़ादे हज़रते सय्यिदिना इब्राहीम रज़ियल्लाहु तआ़ला अनहु पैदा हुये थे। और इस जगह हुज़ूर ने नमाज़ भी अदा फ़रमाई थी।

मदीना शरीफ़ के इतिहासिक कुयें

बीरे हज़रते उस्मान (रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु):- यह कुआं वादिये अक़ीक़ के किनारे एक पुरफ़ज़ा बाग़ में मदीना शरीफ़ से लगभग तीन मील की दूरी पर है इस कुऐं का मालिक यहूदी था जो उसका पानी बेचा करता था और मुसलमानों को पानी की तकलीफ़ थी तो हज़रते उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने आधा कुआँ बारह हज़ार दिरहम में ख़रीद कर मुसलमानों पर वक़्फ़ कर दिया और यहूदी से फ़रमाया कि कहो तो मैं अपने आधे पर घेरी लगा लुँ और कहो तो बारी मुक़र्रर कर लूँ यहूदी ने इसी को मंजूर किया कि एक रोज़ तूम्हारे लिए दूसरा मेरे लिए लेकिन जब यहूदी ने देखा कि मुसलमान एक रोज़ में दो रोज़ का पानी भर लेते हैं। और मेरा पानी नहीं बिकता तो परेशान हो कर बक़िया आधा भी हज़रते उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के हाथ आठ हज़ार दिरहम में बेच दिया। इस कुऐं

को "बीरे रूमा" भी कहते हैं।

बीरे अरीसः- यह कुआँ मस्जिदे कुबा से मिला हुआ पश्चिम कि तरफ़ है। एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाये और उसमें पाँव लटका कर बैठ गये उसके बाद हज़रते अबू बक्र, हज़रते उमर, और हज़रते उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अनहुम तशरीफ़ लाये और सब हुज़ूर की पैरवी में उसी तरह बैठ गये। हुज़ूर ने उसका पानी पिया और उसी से वुज़ू फ़रमाया और लुआबेदहन (यानी थूक मुबारक) भी उस कुऐं में डाला। इस को "बीरे ख़ातिम" भी कहते हैं इस लिए कि इस में हज़रते उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ से "ख़ातमे नुबूवत" गिर गई जो बड़ी तलाश के बाद भी नहीं मिली।

बीरे ग़रसः- यह कुआँ मस्जिदे कुबा से लगभग चार फरलांग पूरब उत्तर कोने पर हैं इसके पानी से हुज़ूर ने वुज़ू फ़रमाया है और पिया भी है। और लूआबे मुबारक और शहद भी इसमें डाला है।

बीरे बुस्साः- यह कुआँ कुबा के रास्ता में जन्नतुल बक़ीअ् से मिला हुआ है। एक बार हुज़ूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम हज़रते अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अनहु के यहाँ तशरीफ़ लाये तो इस कुऐं पर सरे मुबारक धोया और गुस्ल किया इस जगह दो कुऐं हैं सहीह यह है कि बड़ा कुआँ बीरे बुस्सा है और बेहतर यह है कि दोनों से बरकत हासिल करे।

बीरे बुज़ाआः- यह कुआँ श.मी दरवाज़ा से बाहर निकल कर जम्लुल्लैल बाग़ के मुत्तसिल (लगाहुआ) है इसमें भी हुज़ूर ने

अपना लुआबे दहन डाला है और बरकत के लिए दुआ फ़रमाई है।

बीरे हाअ:- यह कुआँ बाबे मजीदी के सामने उत्तरी दीवार से बाहर है जो अबू तलहा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के बाग़ में था। रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम अक्सर इस जगह जलवा अफ़रोज़ होते थे और इसका पानी पीते थे जब आयते करीमा "लन तनालुल्बिर्रा हत्तातुन फ़िकू मिम्मा तुहिब्बून।" لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ नाज़िल हुई तो चूँकि यह कुआँ हज़रते अबू तलहा रज़ियल्लाहु तआ़ला अनहु को बहुत ज़्यादा महबूब था इसलिए उन्होंने उसको खुदा की राह में सद्क़ा कर दिया।

बीरे अहन:- यह कुआँ मस्जिदे श्म्स के क़रीब है। इससे भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने वुज़ू फ़रमाया है। अब इसका पानी खारा है। इसको "बीरुल यसीरा" भी कहते हैं।

JANNATI KAUN?

वापसी के आदाब

जब मदीना मुनव्वरह से वापसी का इरादा हो तो मेहराबे नबवी में या उसके क़रीब मस्जिद शरीफ़ में जहाँ जगह मिले दो रकअ्त नफ़्ल पढ़ें उसके बाद मुवाजिहए अक़्दस में हाज़िर हो कर ग़म में डूब कर रोते बिलक्ते हुए सलातु सलाम अर्ज़ करें फिर दीन व दुनिया की भलाई हज व ज़ियारत के क़बूल होने और ख़ैर व आफ़ियत के साथ घर पहुँचने की दुआ मांगें और ख़ास कर यह भी दुआ करें कि हाज़िरी का यह आख़िरी मौक़ा न हो बल्कि ख़ुदाए तआ़ला इस नूरानी जगह की बार बार ज़ियारत कराये।

इसके बाद रौज़ए अक़दस की तरफ़ मुंह करके उलटे पाँव चलें या सीधे चलें और फिर फिर कर हसरत से रौज़ए अनवर की तरफ़ देखते हुए और उसकी जुदाई पर रोते हुए मस्जिदे नबवी से पहले बायाँ पैर निकालें और जहाँ तक गुंबदे ख़ज़रा नज़र आये बार बार हस्रत भरी निगाह से उको देखते रहें।

मदीना शरीफ़ से रवानगी:- मदीना शरीफ़ से जद्दा लगभग चार सौ चालीस किलोमीटर है। जहाज़ की रवानगी की तारीख़ से दो दिन पहले जद्दा पहुँच जायें और मक्का शरीफ़ से अपने आये हुए सामान को मोअ़ल्लिम (गाइड) की दी हुई रसीद से मिला लें और हज कमीटी के अधिकारी पासपोर्ट वग़ैरा के बारे में जो हिदायतें दें उनके मुताबिक़ अमल करें। फिर जब बंदरगाह की तरफ़ रवानगी का हुक्म हो तो पासपोर्ट और हैन्ड बैग वग़ैरा छोटे सामान को साथ लेकर अव्वल वक़्त जहाज़ पर पहुँचने की कोशिश करें अगर कुछ आदमी साथ हों तो बेहतर यह है कि कुछ लोग पहले जहाज़ की तरफ़ रवाना हो जायें और बाक़ी लोग लारी पर सामान चढ़ने के बाद रवाना हों। जब सामान जहाज़ पर चढ़ा दिया जाये तो अपना सामान अलग करके किनारे लगा दें रास्ता में हरगिज़ न रखें। जहाज़ में सारा वक़्त तिलावते कुरआने पाक और दुरूद शरीफ़ वग़ैरा पढ़ने में ख़र्च करें और किसी से झगड़ा न करें। और वापसी में भी नमाज़ का पूरा ख्याल रखें।

वतन के क़रीब पहुंचना:- जब वतन के क़रीब पहुँचे तो पहले किसी आदमी को भेज कर अपने आने की ख़बर कर दें और अपनी आबादी में सुबह या शाम के वक़्त दाख़िल हों रात के वक़्त न दाख़िल हों। आबादी में दाख़िल होने के बाद अगर वक़्ते मकरूह न हो तो पहले अपने मुहल्ला की मस्जिद में दो रकअ्त नफ़्ल पढ़ें फिर अपने घर में भी दो रकअ्त नफ़्ल पढ़ें और खुदाए तआ़ला का शुक्र अदा करें कि उसने ख़ैर व आफ़ियत के साथ सफर पूरा किया और हज व ज़ियारत की सआदत व बड़ी नेमत से सरफ़राज़ किया।

हाजियों का इस्तिक़बाल (स्वागत):- जब हाजी लोग हज से वापस आयें तो उनसे मुलाक़ात करे और सलाम व मुसाफ़हा के बाद उनके घर पहुँचने से पहले अपने लिए दुआ करायें कि हाजी की दुआ क़बूल होती हैं। हदीस शरीफ़ में है। (अर्थ) जब हाजी से मुलाक़ात करो तो सलाम व मुसाफ़हा करो और उसके घर में दाख़िल होने से पहले अपने लिए दुआ की दरख़्वास्त करो इसलिए कि उस के गुनाह बख़्श दिये गये हैं। (अहमद, मिशक़ात)

हज्जे मक़बूल और हज्जे मरदूद की निशानियाँ

हज्जे मक़बूल की निशानियाँ तीन हैं (1) हज के बाद हमेशा के लिए नरम दिल हो जाना। (2) गुनाहों से नफ़रत हो जाना। (3) अच्छे कामों की तरफ़ रग़बत (रूचि) हो जाना और

हज्जे मरदूद की निशानियाँ भी तीन हैं जो इन के उलट हैं। (1) सख़्त दिल हो जाना। (2) गुनाहों की तरफ़ झुकाव होना (3)नेकियों से नफ़रत हो जाना। (तफ़ीसरे नईमी पारा 2, पृष्ठ 287)

और हज़रते शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने लिखा है। (तरर्जमा) बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि हज्जे मक़बूल की पहचान यह है कि हाजी पहले से अच्छा हो कर वापस हो और आख़िरत की रग़बत (रूचि) रखे और दुनिया वालों से बचे और गुनाहों में दोबारा मुलव्विस (लिप्त) न हो। (अशिअ़तुल्लम्आ़त भाग 2, पृष्ठ 302)

लिहाज़ा हर हाजी को चाहिए कि वह अपने हालात का जाइज़ा ले। अगर वह पहले से अच्छा न हुआ। नमाज़ पढ़ने, ज़कात देने, और दूसरे फ़र्ज़ों और अच्छे कार्यों की तरफ़ राग़िब (झुकने वाला) न हुआ बल्कि नेकियों से विमुख़ हुआ और गुनाहों में दोबारा लिप्त हुआ तो उसे समझना चाहिए कि मेरा हज क़बूल न हुआ।

हज से गुनाहों की मआफ़ी

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ बरैलवी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान ने अपने रिसाला "अ़जबुलइमदाद" में इस मस्अला की बेहतरीन तहक़ीक़ फ़रमाई है जिस का ख़ुलासा (निचोड़) हम नीचे दर्ज करते हैं ताकि हज से गुनाहों की मआफ़ी का मस्अला अच्छी तरह ज़ाहिर हो जाये।

जिसने पाक माल, पाक कमाई, पाक नीयत से हज किया और उस में लड़ाई झगड़ा और हर किस्म के गुनाह और नाफ़रमानी से बचा फिर हज के बाद फ़ौरन मर गया इतनी मुहलत न मिली कि जो हुकूकुल्लाह या हुकूकुलइबाद उसके ज़िम्मा थे उन्हें अदा करता या अदा करने की फ़िक्र करता तो हज क़बूल होने की सूरत में उम्मीद क़वी (पूर्ण आशा) है कि अल्लाह तआ़ला अपने तमाम हुकूक़ को मआ़फ़ फ़रमा दे और हुकूकुलइबाद (बंदों का हक़) को अपने ज़िम्मए करम पर ले कर हक़ वालों को कियामत के दिन राज़ी करे और ख़ुसूमत से नजात बख़्शे।

और अगर हज के बाद जिन्दा रहा और हत्तल इमकान हुकूक़ का तदारूक कर लिया यानी गुज़रे हुए सालों की मा-बक़िया ज़कात (जो ज़कात बाकी थी) अदा कर दी, छूटी हुई नमाज़ और रोज़ा की क़ज़ा की जिसका हक़ मार लिया था उसको या मरने के बाद उसके वारिसीन को दे दिया जिसे तकलीफ़ पहुँचाई थी मआफ़ कर दिया। जो साहिबे हक़ न रहा उसकी तरफ़ से सद्क़ा कर.दिया। अगर हुकूकुल्लाह और हुकूकुल्इबाद में से अदा करते करते कुछ रह गया तो मौत के वक़्त अपने माल में से उनकी अदाएगी की वसीयत कर गया खुलासा यह कि हुकूकुल्लाह, और हुकूकुलइबाद से छुटकारे की हर मुमकिन कोशिश की तो उसके लिए बख़्शिश की और ज़्यादा उम्मीद है। हाँ अगर हज के बाद कुदरत होने के बावजूद इन

उमूर (हुक्मों) से ग़फ़लत (लापरवाही) बरती उन्हें अदा न किया तो यह सब गुनाह अज़ सरे नौ (शुरू से) उसके ज़िम्मा होंगे इस लिए हुकूकुल्लाह और हुकूकुलइबाद तो बाक़ी ही थे उन की अदाएगी में देरी करना फिर ताज़ा गुनाह हुआ जिसके इज़ाला (दूर करने) के लिए वह हज काफ़ी न होगा। इसलिए कि हज गुज़रे हुए गुनाहों यानी वक़्त पर नमाज़ व रोज़ा वग़ैरा अदा न करने की तक़सीर (ग़लती) को धोता है। हज से क़ज़ा हुई नमाज़ और रोज़ा हरगिज़ नहीं मआफ़ होते और न आइन्दा के लिए परवानए आज़ादी मिलती है।

और हज़रते अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने रद्दुलमुहतार भाग 2 पृष्ठ 255 में इस मस्अ़ला पर बहस करने के बाद लिखा है जिसका तरजमा है। "खुलासए कलाम यह है कि फ़र्ज़ की अदाएगी में देर लगाना और नमाज़ व ज़कात वग़ैरा को अदा करने में ताख़ीर (देरी) करना चूंकि यह हुकूकुल्लाह में से हैं इसलिए फ़क़त (सिर्फ) ताख़ीर का गुनाह जो माज़ी (पहले) में हो चुका है वह मआफ़ हो जायेगा। लेकिन अस्ल फ़र्ज़ और नमाज़ व ज़कात वग़ैरा फ़राइज़ की अदाएगी में जो आइन्दा ताख़ीर होगी वह मआफ़ नहीं होगी। बहरूर्राइक़ में है हज जो गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है उसका मतलब यह नहीं है कि क़र्ज़ की आदएगी और सौम व सलात (रोज़ा व नमाज़) की क़ज़ा उसके ज़िम्मा से साक़ित (ख़त्म) हो जाती है जैसा कि बहुत से लोगों का वह्म है इसलिए कि उम्मत में से कोई भी इस का क़ाइल नहीं।"

फिर उसी पृष्ठ पर चंद लाइन के बाद लिखा। "तो यक़ीन के साथ नहीं कहा जा सकता कि हज उन कबीरा (बड़े) गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है। जो हुक़ूक़ुल्लाह हैं तो फिर भला हज हुक़ूक़ुलइबाद का कफ़्फ़ारा क्यों कर हो सकता है।

खुदाए तआ़ला सब मुसलमानों के हज व ज़ियारत को क़बूल फ़रमाये और क़अ्बए मुअज़्ज़मा व रौज़ए सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के दीदार से बार बार मुशर्रफ़ फ़रमाए और जुमला हुक़ूक़ के अदा करने की तौफ़ीक़ रफ़ीक़ बख़्शे। आमीन बिजाहि हबीबिहि सैयदिल मुरसलीन सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि व अलैहिम अजमईन।

☆☆☆☆

JANNATI KAUN?

लाखों सलाम

इस सलाम के पहले दो शेर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू के हैं। बाकी अश्आर हज़रते शैख़ुलउलमा अल्लामा उवैस हसन उर्फ़ गुलाम जीलानी कुद्दिसा सिर्रुहू शैखुल हदीस दारूल ऊलूम फैज़ुर्रसूल ने नाचीज़ की हज व ज़ियारत से वापसी पर इस्तिक़बालिया इजलास में पढ़े जाने के लिए कहे थे जो अदना तग़य्युर (कुछ बदलाव) के साथ दूसरे हाजियों की आमद पर भी पढ़े जा सकते हैं। (अमजदी)

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम।
शम–ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम।
मेहरे चरख़े नबूवत पे रौशन दुरूद।
गुले बाग़े रिसालत पे लाखों सलाम।

मरहबा! मरहबा! हाजिए अमजदी।
आमदे बा करामत पे लाखों सलाम।
तेरे एहराम की दिल रूबा कैफ़ियत।
उस अदाए महब्बत पे लाखों सलाम।
मिस्ले परवाना के गिर्दे काबा फिरे।
उस तवाफ़े ज़ियारत पे लाखों सलाम।
आबे ज़मज़म भी सैराब होकर पिया।
उसकी पाकीज़ा लज़्ज़त पे लाखों सलाम।

जब हतीमे मुक़द्दस में दाखिल हुए।
उस ख़ुशा बख़्त साअ़त पे लाखों सलाम।
फिर मिना और अरफ़ात की हाज़िरी।
उस मुबारक इक़ामत पे लाखों सलाम।
रौज़ए प़ाक की जालियों के क़रीब।
उस दुआ की इजाबत पे लाखों सलाम।
दरहक़ीक़त यह है फ़ैज़े अमजद अली।
उन की पाकीज़ा तुरबत पे लाखों सलाम।
हम सभों के लिए भी दुआ कीजिए।
उस दुआ की महब्बत पे लाखों सलाम।
बस उवैसे हज़ीं पर निगाहे करम।
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम।

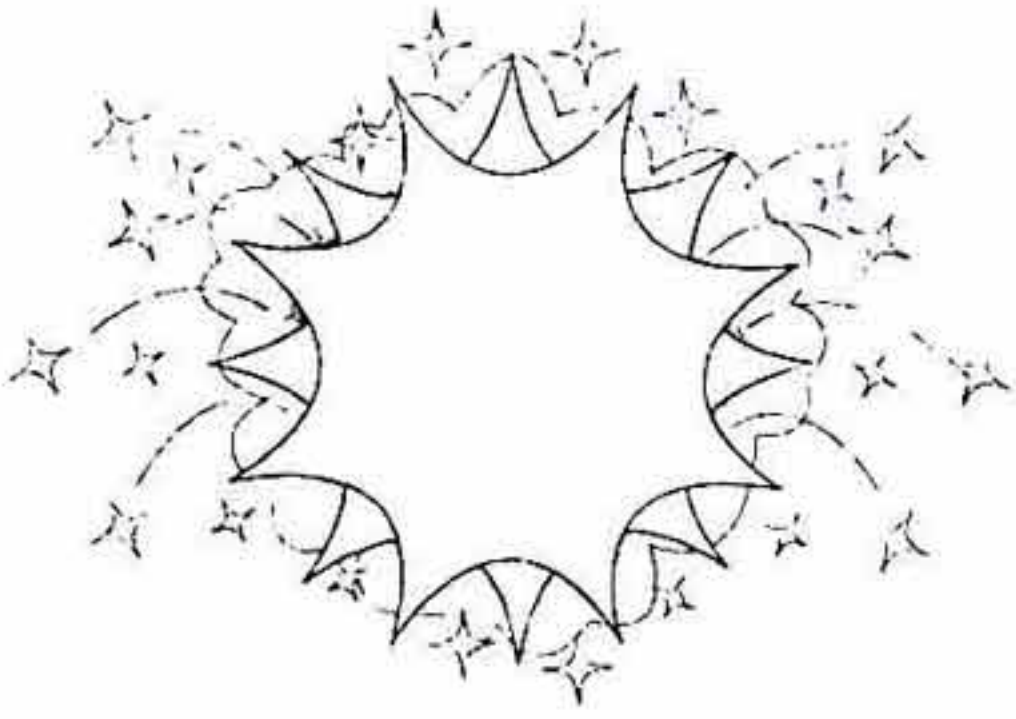

सल्लल्लाहु अलैइ-क वसल्लम

अज़ः- हज़रत अल्लामा अब्दुल मजीद कुद्दिसा सिर्रुहू

साबिक़ शैख़ुल हदीस मन्ज़रे हक़, टांडा

अन-त ज़हीरी अनतल मलजअ् सल्लल्लाहु अलै-क व सल्लम।
अन-त करीमी अनतल मावा सल्लललाहु अलै-क व सल्लम।
अन-त मुईनी अन-त अ़यानी अन-त औनी अनत ऐनी।
अनतद्दाफ़िओ़ कुल ल बलाया सल्लल्लाहु अलै-क व सल्लम।
अन-त हबीबी अन-त तबीबी अन-त दाई अन-त शिफ़ाई।
अन-त वजई अन-त मदावा सल्लल्लाहु अलै-क व सल्लम।
बहरु समाइन यम्मु वफ़ाइन बद्रु समाइन शम्सु ज़ियाइन।
यूजदु फी़-क कुल्लुल हुस्ना सल्लल्लाहु अलै-क व सल्लम।
मिस्लु-क लैस बिरब्बिल कअबा लाफ़िद्दुनिया व लाफ़िलउक़बा।
हुस्नु-क जुज़उन-ला यतजज़्ज़ा सल्लल्लाहु अलै-क व सल्लम।
अन-त मुग़ीसी अन-त ग़यासी अन-त ग़ौसी अन-त ग़ैसी।
अन-त नसीरी अनतल मौला सल्लल्लाहु अलै-क व सल्लम।

☆☆☆☆

जाँ फ़िदाए तो या रसूलल्लाह

अज़:- बुलबुले शीराज़ हज़रते शैख़ सअ्दी

रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि

☆☆☆

जाँ फ़िदाए तो या रसूलल्लाह।
दिल गदाये तो या रसूलल्लाह।
अरहमुर्राहिमीं न बख़्शायद।
बे रज़ाए तो या रसूलल्लाह।
काश हरमूए मन ज़बाँ बूदे।
दर सनाए तो या रसूलल्लाह।
गरबयाबम बजाए सूर्मा कशम।
ख़ाक पाए तो या रसूलल्लाह।
सर निहा दस्त बर-दरत सअ्दी।
बे नवाए तो या रसूलल्लाह।

☆☆☆☆☆

झिड़कियाँ खायें कहाँ छोड़ के सद् का तेरा

अज़:- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी

कुद्दिस़ा सिर्रुहु

☆☆☆

वाह क्या जूदो करम है शहे बतहा तेरा।
नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा।
धारे चलते हैं अता के वह है क़तरा तेरा।
तारे खिलते हैं सख़ा के वह है ज़र्रा तेरा।
अग़नियाँ पलते हैं दर से वह है बाड़ा तेरा।
असफ़िया चलते हैं सर से वह है रस्ता तेरा
फ़र्श वाले तेरी शौकत का ऊलू क्या जानें।
ख़ुसरवा अर्श पे उड़ता है फरेरा तेरा।
मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूबो मुहिब में नहीं मेरा तेरा।
तेरे क़दमों में जो हैं ग़ैर का मुंह क्या देखें।
कौन नज़रों में जचे देख के तलवा तेरा।
एक मैं क्या मेरे इस्याँ की हक़ीकत कितनी।
मुझ से सौ लाख को काफ़ी है इशारा तेरा।
तेरे टुकड़ों से पले ग़ैर की ठोकर पे न डाल।
झिड़कियाँ खायें कहाँ छोड़ के सद्का़ तेरा।

ख़्वार व बीमार ख़ातावार गुनहगार हूँ मैं।
राफ़े वो नाफ़ो शाफ़े लक़ब आक़ा तेरा।

तू जो चाहे तो अभी मैल मेरे दिल के धुलें।
कि खुदा दिल नहीं करता कभी मैला तेरा।

तेरे सद्क़े मुझे एक बूंद बहुत है तेरी।
जिस दिन अच्छों को मिले जाम छलकता तेरा।

हरमो तैबा वो बग़दाद जिधर कीजे निगाह।
जोत पड़ती है तेरी नूर है छन्ता तेरा।

तेरी सरकार में लाता है रज़ा उसको शफ़ीअ्।
जो मेरा ग़ौस है और लाडला बेटा तेरा।

☆☆☆

JANNATI KAUN?

उनके दर की भीक अच्छी सर-वरी अच्छी नहीं

अज़ः- उस्ताज़े ज़मन हज़रत **मौलाना हसन** खां साहब

कुद्दिसा सिर्रुहू

कौन कहता है कि जी़नत खुल्द की अच्छी नहीं।
लेकिन ऐ दिल फ़ुरक़ते कूये नबी अच्छी नहीं
रह्म की सरकार में पुरसिश है ऐसों की बहुत।
ऐ दिल अच्छा है अगर हालत मेरी अच्छी नहीं।
उस जगह से दूर रह कर क्या मरें हम क्या जियें।
आह ऐसी मौत ऐसी ज़िन्दगी अच्छी नहीं।
उनके दर की भीक छोड़ें सरवरी के वास्ते।
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं।
सायए दीवारे आक़ा में हो बिस्तर ख़ाक पर।
आरज़ूए ताजो तख़्तो ख़ुसरवी अच्छी नहीं।
ज़र्रए तैबा की तलअ़त के मुक़ाबिल ऐ क़मर।
घटती बढ़ती चार दिन की चाँदनी अच्छी नहीं
बेकसों पर मेहरबाँ है रहमते बेकस नवाज़।
कौन कहता है हमारी बे कसी अच्छी नहीं।
बंदए सरकार हो फिर कर खुदा की बंदगी ।
वर्ना ऐ बंदे ख़ुदा की बंदगी अच्छी नहीं।
उनके दरपे मौत आजाए तो जी जाऊँ हसन।
उनके दर से दूर रह कर ज़िन्दगी अच्छी नहीं

रहम के क़ाबिल है मेरी दिल फ़िगारी या रसूल

अज़:-हज़रत मुहद्दिसे आज़म हिन्द सैय्यद मुहम्मद कछौछवी कुद्दिसा सिर्रुहु

दो जहाँ में धूम है हर जा तुम्हारी या रसूल।
आपकी है मुनतज़िर क़िस्मत हमारी या रसूल।
फ़र्श किसका आपका है अर्श किसका आपका।
आप ही के दम से यह रौनक़ है सारी या रसूल।
अल्लाह अल्लाह आपका दीदार है दीदारे हक़।
आपका दरबार है दरबारे बारी या रसूल।
आप ही के हाथ में है आप हीं अब कीजिए।
अपने हाजतमंद की हाजत बरआरी या रसूल।
ख़्वाब में ही कीजिए बेदार क़िस्मत को मेरी।
रह्म के क़ाबिल है मेरी दिल फ़िगारी या रसूल।
या रसूलल्लाह दूहाई है दुहाई आप की।
देख लूँ अब शक्ले नूरी प्यारी प्यारी या रसूल।
दूर है मंज़िल मुसाफ़िर है थका मांदा हुआ।
पश्त पर है मअ्सियत का बोझ भारी या रसूल।
मेरे सर पर पंजए दस्ते करम रख दीजिए।
नहरें रह्मत की हुई थीं जिन से जारी या रसूल।
आप के दर पर हैं हाज़िर मिस्ले सैय्यद बेशुमार।
तुर्की वो रूमी व हिन्दी व बुख़ारी या रसूल।

अल्लाह भी तालिब है तेरा जिन्नो बशर भी

ज़:- शेर बेशए अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा **हशमत अ़ली खा** कुद्दिसा सिर्रुहू

अल्लाह भी तालिब है तेरा जिन्नो बशर भी।
है अर्श तेरा खुल्द भी अल्लाह का घर भी।
जिस वक़्त गवाही की हुई उन को जरूरत।
बुत बोल उठे पढ़ने लगे कलमा शाजर भी।
जिस वक़्त हुई बज़्मे जहाँ में तेरी आमद।
सज्दे को तेरे झुक गया अल्लाह का घर भी।
चेहरा है तेरा आइनए हुस्ने इलाही।
देखे तेरा जलवा तो तड़प जाये नजर भी।
हो वस्फ़ तेरे चेहरए अनवर का अदा कब।
तलवे हैं तेरे ग़ैरते खुर रश्के क़मर भी
हक़ ने तुम्हें क़ादिर किया और ग़ैब का आलिम।
बंदों की मदद करते हो रखते हो ख़बर भी।
सरदारों के सर ख़म हैं दरे पाक पे तेरे।
साजिद तेरी सरकार में हैं दिल भी जिगर भी।
झोली को मेरी भर दे नवासों का तसद्दुक़।
सग हूँ तेरा मुहताज तेरा दस्तनिगर भी
सग हूँ मैं **उबैदे रज़वी** ग़ौसो रज़ा का।
आगे से मेरे भागते हैं शेरे बबर भी।

☆☆☆

अल्लाह का दीदार है दीदार तुम्हारा

अज़:- हज़रत **मौलाना जमीलुर्रहमान** साहब बरैलवी कुद्दिसा सिरूहु

वह हुस्न है ऐ सय्यदे अबरार तुम्हारा।
अल्लाह भी है तालिबे दीदार तुम्हारा।
महबूब हो तुम ख़ालिक़े कुल मालिके कुल के।
क्यों ख़ल्क़ पे क़ब्ज़ा न हो सरकार तुम्हारा।

क्यों दीद के मुश्ताक़ न हों हज़रते यूसुफ़।
अल्लाह का दीदार है दीदार तुम्हारा।
अल्लाह ने बनाया तुम्हें कौनैन का हाकिम।
और रखा लक़ब अहमदे मुख़्तार तुम्हारा।

बिगड़े हुए सब काम संभल जायें उसी दम।
दिल से जो कोई नाम ले इक बार तुम्हारा।
दुनिया में क़ियामत में सरे पुल पे लहद में।
दामन न छुटे हाथ से सरकार तुम्हारा।

आअ़दा को जलाने के लिए नारे हसद में।
हम ज़िक्र किये जायेंगे सरकार तुम्हारा।
बुलबुल है **जमीले रज़वी** ऐ गुले वहदत।
मिल जाये इसे रहने को गुलज़ार तुम्हारा।

☆☆☆

मदीना छोड़ कर अब उन का दीवाना न जाएगा

अज़:- हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादिरी साहब कुद्दिसा सिरूहू

जमाले नूर की महफ़िल से परवाना न जाएगा।
मदीना छोड़ कर अब उन का दीवाना न जाएगा।

बड़ी मुश्किल से आया है पलट कर अपने मरकज़ पर।
मदीना छोड़ कर अब उन का दीवाना न जाएगा।

यह माना खुल्द भी है दिल बहलने की जगह लेकिन।
मदीना छोड़ कर अब उन का दीवाना न जाएगा।

नशीमन बांधना है शाखे तूबा पर मुक़द्दर का।
मदीना छोड़ कर अब उन का दीवाना न जाएगा।

जो आना है तो आये खुद अजल उम्रे अबद लेकर।
मदीना छोड़ कर अब उन का दीवाना न जाएगा।

ठिकाना मिल गया है फ़ातेहे महशर के दामन में।
मदीना छोड़ कर अब उन का दीवाना न जाएगा।

फ़राशे अर्श से अब कौन उतरे फ़र्श गीती पर।
मदीना छोड़ कर अब उनका दीवाना न जाएगा।

दो आलम की उम्मीदों से कहो मायूस हो जायें।
मदीना छोड़ कर अब उनका दीवाना न जएगा।

ना हो गर दाग़े इश्क़े मुस्तफ़ा की चाँदनी दिल में।
गुलामे बावफ़ा महशर में पहचाना न जाएगा।

पहुँच जाएगा उनका नाम ले कर खुल्द में अरशद।
तही दामन सही नाज़े गुलामाना न जाएगा।

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

अज़:- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी कुद्दिसा सिर्रहू

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम।
शम्ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम।

मेहरे चर्ख़े नबूवत पे रौशन दुरूद।
गुले बाग़े रिसालत पे लाखों सलाम।

शबे असरा के दूल्हा पे दायम दुरूद।
नौ शए बज़्मे जन्नत पे लाखों सलाम।

अर्श ता फ़र्श है जिस के ज़ेरे नगीं।
उसकी क़ाहिर रियासत पे लाखों सलाम।

दूरो नज़दीक के सुनने वाले वह कान।
कान लअ्ले करामत पे लाखों सलाम।

जिसके सज्दे को मेहराबे काबा झुकी।
उन भवों की लताफ़त पे लाख़ों सलाम।

जिसके माथे शफ़ाअत का सेहरा रहा।
उस जबीने सआदत पे लाखों सलाम।

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया।
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम।

जिससे तारीक दिल जगमगाने लगे।
उस चमक वाली रंगत पे लाखों सलाम

वह ज़बाँ जिसको सब कुन की कुंजी कहें।
उसकी नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम।

हाथ जिस सम्त उठा ग़नी कर दिया।
मौजे बह्रे समाहत पे लाखों सलाम।

जिसको बारे दो आलम की परवा नहीं
ऐसे बाज़ू की क़ूव्वत पे लाखों सलाम

नूर के चश्मे लहरायें दरिया बहें।
उँगलियों की करामत पे लाखों सलाम।

कुल जहाँ मिल्क और जौ की रोटी ग़ेज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम

उस बतूले जिगर पारए मुस्तफ़ा।
हुज्ला आराए इफ्फ़त पे लाखों सलाम।

सय्यदा ज़ाहिरा तय्यबा ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

वह हसन मुजतबा सय्यदुल अस्खिया।
राकिबे दोशे इज़्ज़त पे लाखों सलाम।

उस शहीदे बला शाह गुलगूँ क़बा।
बेकसे दश्तेगुरबत पे लाखों सलाम।

अहले इस्लाम की मादराने शफ़ीक़।
बानु आने तहारत पे लाखों सलाम।

जाँ निसारांने बदर उहद पर दुरूद।
हक़ गुज़ाराने बैअत पे लाखों सलाम

वह दसों जिनको जन्नत का मुज़दा मिला।
उस मुबारक जमाअ़त पे लाखों सलाम।

सायए मुस्तफ़ा, मायए इस्तफ़ा।
इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम।

यानी उस अफ़्ज़लुल ख़ल्क़ बअ्दर्रूसुल।
सानी इन्सैने हिजरत पे लाखों सलाम।

वह उमर जिस के अअदा् पे शैदा सक़र।
उस खुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम।

तरजुमाने नबी, हम ज़बाने नबी।
जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम।

ज़ाहिदे मस्जिदे अहमदी पर दुरूद।
दौलते जैशे उसरत पे लाखों सलाम।

यानी उस्मान साहिबे क़मीसे हुदा।
हुल्ला पोशे शहादत पे लाखों सलाम।

मुर्तज़ा शेरे हक़ अशजउल अशजई।
साक़िए शीरो शर्बत पे लाखों सलाम।

शेरे शम्शीर ज़न शाहे खैबर शिकन।
परतवे दस्ते कुदरत पे लाखों सलाम।

मेरे उस्ताद माँ बाप भाई बहन।
अहलो उलदो अशीरत पे लाखों सलाम।

एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं।
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम।

काश महशर में जब उनकी आमद हो और।
भेजें सब उनकी शौकत पे लाखों सलाम।

मुझ से ख़िदमत के कुद्सी कहें हाँ रज़ा।
मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम।

☆☆☆

सलाम

या नबी सलामु अलै-क या रसूल सलामु अलै-क
या हबीब सलामु अलै-क सलवातुल्लाहि अलै-क
तलअ़ल बदरु अलै-न मिन सनी यातिल वदाई
व-जबश्शुकरु अलै-न मा दआ लिल्लाहि दाई
या नबी सलामु अलैक .....
अश-र-क़ल बदरु अलै-न वख्तफ़त मिन्हुल बुदूरू
मिस-ल हुस्नि-क मा रऐना कत्तु या वजहस्सुरूरी
या नबी सलामु अलै-क ....
अन-त शम्सुन अन-त बदुरुन अन-त नूरुन फ़ा-क़ नूरी
अन्त इक सीरुन व ग़ाली अन-त मिस्बाहुस्सदूरी
या नबी सलामु अलै-क .....
अस्सलाम ऐ जाने आलम अस्सलाम ऐ शाने आलम
शाहे दीं सुलताने आलम तुमसे है सामाने आलम
या नबी सलामु अलै-क .....
आप सुलताने मदीना महबत वहयु सकीना
नूर से मामूर सीन मुश्क से बेहतर पसीना
या नबी सलाम अलै-क ....
रहमतों के ताज वाले अर्श की मेराज वाले
दो जहाँ के राज वाले आसियों की लाज वाले
या नबी सलाम अलै-क .....
दुख भरे नोलों का सद्क़ नाज़ क पालों का सद्क़ा
करबला वालों का सद्क़ भीक दो लालों का सदक़ा
या नबी सलामु अलै-क ....
दूर से आये हुए हैं रन्जो ग़म खाये हुए हैं
तुम पे इतराये हुए हैं हाथ फ़ैलाये हुए हैं
या नबी सलामु अलै-क .....